E-mail:-adhuniksamachar2014@gmail.com

website:www.adhuniksamachar.com

आधुनिक समाचार

आधुनिक भारत का आधुनिक नजरिया

प्रयागराज से प्रकाशित हिन्दी दैनिक

वर्ष -12 अंक - 160 | प्रयागराज, शुक्रवार 09 अक्टूबर, 2026 | पृष्ठ- 8 | मूल्य : 3.00 रूपये

इटली में चुनाव जीतने पर एक्स्ट्रा सीटें मिलने पर विवाद,मेलोनी बोलीं- कानून पास नहीं हुआ तो इस्तीफा दे दूंगी

रोम। इटली में चुनाव जीतने वाली पार्टी या गठबंधन को संसद में एक्स्ट्रा सीटें देने के प्रस्ताव पर विवाद छिड़ गया है। प्रधानमंत्री जॉर्जिया मेलोनी की सरकार यह कानून लाना चाहती है। इसके तहत चुनाव में जीतने वाली पार्टी या गठबंधन को संसद में 105 अतिरिक्त सीटें मिल सकती हैं। हालांकि, इसके लिए उसे दोनों सदनों में कम से कम 42फीसदी वोट हासिल करने होंगे। सरकार का कहना है कि इससे देश में राजनीतिक स्थिरता आएगी और सरकारें बार-बार नहीं गिरेंगी। वहीं, विरोधियों का आरोप है कि इस कानून से चुनाव जीतने वाले गठबंधन को जरूरत से ज्यादा ताकत मिल जाएगी। इस कानून पर आज संसद में वोटिंग होनी है। मेलोनी ने साफ कहा है कि अगर कानून पास नहीं हुआ तो वह इस्तीफा दे देंगी। ऐसे में इस वोटिंग को उनकी सरकार के लिए अहम माना जा रहा है। कानून लागू हुआ तो किस तरह बटेंगी

सीटें? इटली की संसद में कुल 600 सीटें हैं, जिनमें निचले सदन की 400 और सीनेट की 200 सीटें हैं। प्रस्ताव के मुताबिक, अगर कोई पार्टी या गठबंधन कम से कम 42फीसदी वोट हासिल करके सबसे आगे रहता है तो उसे निचले सदन में 70 और सीनेट में 35 बोनस सीटें दी जाएंगी। ये सीटें कुल संख्या के अंदर ही बांटी जाएंगी। इसका मतलब यह नहीं है कि निचले सदन में 400 के ऊपर 70 सीटें जोड़ दी जाएंगी। कुल सीटें 400 ही रहेंगी। इसे उदाहरण से समझें:-मान लीजिए चुनाव में पार्टी 'ए' के गठबंधन को 43फीसदी वोट मिले, पार्टी 'बी' को 35फीसदी वोट मिले बाकी पार्टियों को 22फीसदी वोट मिले अब नए नियम के तहत विजेता पार्टी ए के गठबंधन को 70 सीटों का बोनस मिलेगा। अगर सिर्फ आसान गणित लगाएं, तो 330 का 43फीसदी ़ 141.9 यानी करीब 142 सीटें। फिर बोनस: 70 सीटें-कुल: लगभग 212 सीटें पार्टी ए को करीब 212 सीटें मिलेंगी। बाकी सीटें दूसरी पार्टियों के बीच बांटी जाएंगी। लेकिन वास्तविक चुनावी गणना इतनी सीधी नहीं है, क्योंकि सीटें अलग-अलग क्षेत्रों और पार्टियों की पात्रता के हिसाब से बांटी जाती हैं। साथ ही कानून में विजेता के लिए अधिकतम 220 सीटों की सीमा है। इटली में 80 साल में 68 सरकारें बनीं:-इटली में सरकारों के अस्थिर रहने का लंबा इतिहास है। आगे की खबर पेज संख्या 07 पर..

ईरान ने अमेरिका को पीछे हटने पर मजबूर किया,अमेरिकी सैनिक होटलों में रहने को मजबूर,हमलों के डर से ब्रिटेन से 12 बमवर्षक हटे

न्यूयॉर्क। ईरान पर हमला करके अमेरिका अपनी सैन्य ताकत दिखाना चाहता था, लेकिन अब यही युद्ध उसके लिए नई मुश्किलें खड़ी कर रहा है। ईरानी हमलों के बाद अमेरिका को मिडिल ईस्ट में अपनी सैन्य तैनाती बदलनी पड़ी है। अब ब्रिटेन के एक एयरबेस से ँ-1 बमवर्षक विमान भी अचानक अमेरिका वापस बुला लिए गए। अमेरिका ने इसे सुरक्षा के लिहाज से उठाया गया सामान्य कदम बताया है। राष्ट्रपति ट्रम्प और विदेश मंत्री मार्को रुबियो ने भी इसे ज्यादा तवज्जो नहीं दी। लेकिन पिछले कुछ महीनों की घटनाएं बताती हैं कि ईरानी हमलों ने अमेरिकी सैन्य रणनीति को बदलने पर मजबूर किया है।बहरीन, कुवैत, कतर और यूएई में तैनात अमेरिकी सैनिकों को हटाना पड़ा है। कुछ ठिकानों को हुए नुकसान के बाद अमेरिका उन्हें दोबारा बनाने के बजाय ईरान से और दूर ले जाने पर विचार कर रहा है। ब्रिटेन से 12 बमवर्षक अचानक क्यों हटाए गए? ब्रिटेन के आरएएफ

फेयरफोर्ड एयरबेस पर अमेरिका के 12 बी-1 बमवर्षक विमान तैनात थे। ये विमान लंबी दूरी तक उड़कर हमला करने में सक्षम हैं। लेकिन अमेरिकी कमांडरों को ऐसी जानकारी मिली कि ईरान समर्थित लोग एयरबेस की बाड़ के ठीक बाहर से ड्रोन हमला करने की तैयारी कर रहे हैं। यह फैसला इसलिए भी अहम है क्योंकि फेयरफोर्ड एयरबेस अमेरिका और ब्रिटेन के सैन्य सहयोग का पुराना केंद्र है। इसे द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान 1944 में बनाया गया था। ब्रिटेन का एयरबेस अकेला मामला नहीं है। ईरान ने मिडिल ईस्ट में अमेरिकी सैन्य ठिकानों पर लगातार ड्रोन और मिसाइल हमले किए। इन हमलों के बाद अमेरिका ने बहरीन, कुवैत, संयुक्त अरब अमीरात और कतर जैसे देशों से अपने कई सैनिकों को हटाया। ये सभी ठिकाने ईरान की मिसाइल और ड्रोन की पहुंच में थे। कुवैत में अमेरिकी ठिकानों को काफी नुकसान हुआ। पोर्ट शुएबा पर हुए हमले में छह अमेरिकी सैनिक मारे गए। ईरानी हमले में अमेरिकी सेना का एक ऑपरेशन सेंटर भी नष्ट हो गया। अमेरिकी सैनिकों को होटल-दफ्तरों में रहना पड़ा:-ईरानी हमलों का असर इतना ज्यादा हुआ कि कई अमेरिकी सैनिकों को अपने सैन्य ठिकाने छोड़कर होटल और दफ्तरों में जाना पड़ा। यहीं से अमेरिका के सामने नई समस्या खड़ी हुई। ईरान ने यह पता लगाना शुरू कर दिया कि अमेरिकी सैनिक कहां रह रहे हैं। आगे की खबर पेज संख्या 07 पर..

सऊदी एयरपोर्ट पर हूतियों का हमला, 3 की मौत,ड्रोन-मिसाइल हमले में 36 घायल, जवाब में यमन के 80 ठिकानों पर पलटवार

रियाद। सऊदी अरब के दो एयरपोर्ट्स पर हूती विद्रोहियों ने ड्रोन और मिसाइल से हमले

किए। इसमें 3 लोगों की मौत हो गई है। साथ ही 36 लोग घायल हुए हैं। सऊदी अरब की जनरल अथॉरिटी ऑफ सिविल एविएशन (जीएसीए) ने बुधवार को यह जानकारी दी। आभा इंटरनेशनल एयरपोर्ट और रियाद के किंग खालिद इंटरनेशनल एयरपोर्ट को 6 और 7 अक्टूबर को निशाना बनाया गया। हूती विद्रोहियों ने दोनों हमलों की जिम्मेदारी ली है। वहीं, यमन में सऊदी के नेतृत्व वाले गठबंधन ने कहा कि उसने हूतियों के 80 से ज्यादा सैन्य ठिकानों पर जवाबी कार्रवाई की है। विदेशी नागरिकों ने हमले में जान गंवाई:-आभा एयरपोर्ट पर हमले में मोरक्को और अल्जीरिया की दो महिला नागरिकों की मौत हुई। साथ ही यहां 28 लोग घायल हुए। इनमें सऊदी, बांग्लादेशी और फिलीपींस के नागरिक शामिल हैं। वहीं, किंग खालिद इंटरनेशनल एयरपोर्ट पर एक सूडानी नागरिक की मौत हुई। यहां 8 लोग घायल हुए, जिनमें 5 सऊदी नागरिक, 2 मिस्र के निवासी और एक पाकिस्तानी निवासी शामिल हैं। जीएसीए ने बताया कि सभी घायलों को अस्पताल पहुंचाया गया है। साथ ही अधिकारी सुविधाओं की सुरक्षा की जांच कर रहे हैं और यात्रियों की सुरक्षा के लिए जरूरी कदम उठा रहे हैं। अरामको रिफाइनरी पर हमले का दावा:-इससे पहले हूती सैन्य प्रवक्ता याह्या सरी ने सऊदी अरब में कई जगहों पर मिसाइल और ड्रोन हमले करने की जिम्मेदारी ली थी। इसमें रबीघ में स्थित दुनिया की सबसे बड़ी तेल रिफाइनरी अरामको पर हमला भी शामिल है। याह्या सरी ने टेलीग्राम पर जारी बयान में कहा कि संगठन ने बड़ी संख्या में बैलिस्टिक और क्रूज मिसाइलों के साथ ड्रोन का इस्तेमाल करते हुए तीन बड़े सैन्य अभियान चलाए। पहले हमले में रियाद के किंग खालिद इंटरनेशनल एयरपोर्ट को निशाना बनाया गया। हमला सीधे लक्ष्य पर हुआ और इससे हवाई यातायात प्रभावित हुआ। दूसरे हमले में रबीघ स्थित अरामको की तेल रिफाइनरी को निशाना बनाया गया। हमले के बाद वहां आग लग गई। तीसरे हमले में हूतियों ने आभा एयरपोर्ट, खमिस मुशैत एयरबेस और असीर क्षेत्र के अकिफा कैंप को निशाना बनाने का दावा किया। आगे की खबर पेज संख्या 07 पर..

अमेरिका में विदेशी छात्रों के लिए नौकरी महंगी होगी, भारत-चीन के छात्रों पर सबसे ज्यादा असर

वॉशिंगटन डीसी। अमेरिका में पढ़ने वाले विदेशी छात्रों के लिए पढ़ाई के बाद नौकरी करना

महंगा हो सकता है। ट्रम्प सरकार ने हर नए छात्र के लिए 70 हजार डॉलर यानी करीब रु68 लाख फीस लगाने का प्रस्ताव रखा है। यह फीस ऑप्शनल प्रैक्टिकल ट्रेनिंग (ओपीटी) के लिए रखी गई है। इसके तहत विदेशी छात्रों को पढ़ाई पूरी करने के बाद अमेरिका में नौकरी करने की अनुमति मिलती है। फीस छात्र को नहीं, बल्कि उसके कॉलेज या यूनिवर्सिटी को देनी होगी। इस फैसले का सबसे ज्यादा असर भारत और चीन के छात्रों पर पड़ेगा। 2024-25 के आंकड़ों के मुताबिक, अमेरिका में भारत के करीब 3.63 लाख और चीन के करीब 2.66 लाख छात्र पढ़ रहे थे। यानी दोनों देशों के करीब 6.3 लाख छात्र अमेरिका में हैं। इनमें से कई छात्र पढ़ाई पूरी करने के बाद ओपीटी के जरिए अमेरिका में नौकरी करते हैं। खासकर भारतीय छात्र बड़ी संख्या में इंजीनियरिंग, टेक्नोलॉजी और दूसरे STEM विषयों की पढ़ाई करते हैं। ओपीटी में एक साल तक नौकरी का मौका मिलता है:-ओपीटी यानी ऑप्शनल प्रैक्टिकल ट्रेनिंग के तहत विदेशी छात्र अपनी पढ़ाई से जुड़े काम का अनुभव ले सकते हैं। आमतौर पर पढ़ाई पूरी करने के बाद उन्हें एक साल तक नौकरी करने की अनुमति मिलती है। STEM यानी साइंस, टेक्नोलॉजी, इंजीनियरिंग और मैथ्स के छात्रों को दो साल और काम करने की अनुमति मिल सकती है। प्रस्ताव के मुताबिक, किसी छात्र के ओपीटी के लिए पहली बार आवेदन करने पर उसके कॉलेज या यूनिवर्सिटी को 70 हजार डॉलर यानी करीब रु68 लाख देने होंगे। अगर छात्र ओपीटी को आगे बढ़ाता है तो हर बार रिन्यू कराने पर 30 हजार डॉलर यानी करीब रु29 लाख फीस देनी होगी। यह पैसा सीधे छात्र से नहीं लिया जाएगा। लेकिन इतनी बड़ी फीस के कारण कॉलेजों और यूनिवर्सिटी पर विदेशी छात्रों को ओपीटी की सुविधा देने का खर्च काफी बढ़ जाएगा। आगे की खबर पेज संख्या 07 पर..

ट्रम्प बोले-मुझे नोबेल नहीं दिया तो कमेटी की बदनामी होगी, 6 साल से मांग रहे प्राइज, मैंने 8 युद्ध रुकवाए

वॉशिंगटन डीसी। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने बुधवार को एक बार फिर नोबेल शांति नोबेल के लिए नामित किया है, लेकिन मुझे नहीं लगता कि इसे कभी नहीं जीत पाऊंगा। 2019

पुरस्कार पर अपनी दावेदारी जताई। 2026 के नोबेल शांति पुरस्कार की घोषणा शुक्रवार, 9 अक्टूबर को होनी है। इससे एक दिन पहले ट्रम्प ने कहा कि उन्हें यह पुरस्कार मिलना चाहिए। अगर नोबेल समिति उन्हें यह पुरस्कार नहीं देती है, तो इससे नोबेल समिति की बहुत बदनामी होगी। ट्रम्प ने कहा, 'मैं अपनी तारीफ नहीं कर रहा हूं, सिर्फ तथ्य बता रहा हूं। मैंने 8 युद्ध रुकवाए और दुनिया को तबाह होने से रोका। शायद किसी भी राष्ट्रपति ने इतने युद्ध नहीं सुलझाए।' ओबामा को नोबेल मिलने पर भी सवाल उठाए:-ट्रम्प ने 2009 में पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा को मिले नोबेल शांति पुरस्कार का भी जिक्र किया। उन्होंने कहा कि ओबामा को यह पुरस्कार मिलने की वजह उन्हें खुद भी पता नहीं थी। ट्रम्प ने कहा, 'ओबामा को सिर्फ 8 महीने में यह मिल गया जबकि उन्होंने कुछ किया भी नहीं था। ओबामा को भी आज तक पता नहीं है कि उन्हें यह किसलिए मिला था।' नॉर्वे की नोबेल समिति ने ओबामा को दूसरे देशों से बातचीत बढ़ाने और दुनिया को परमाणु हथियारों से मुक्त करने की उनकी कोशिशों के लिए चुना था। हालांकि, ओबामा को इतने कम समय में पुरस्कार देने का फैसला उस समय भी चर्चा और विवाद का विषय बना था।2018 से नोबेल प्राइज मांग रहे ट्रम्प:-ट्रम्प के लिए नोबेल प्राइज मांगना कोई नई बात नहीं है। अक्टूबर 2018 में एक कार्यक्रम में ट्रम्प ने नोबेल शांति पुरस्कार का जिक्र करते हुए कहा था कि उन्हें शायद यह पुरस्कार कभी नहीं मिलेगा, भले ही ने कोरिया और सीरिया में शांति कायम करने की कोशिश कर रहे हों। इसके बाद फरवरी 2019 में उन्होंने खुलकर अपनी दावेदारी रखी। उन्होंने कहा कि जापान के प्रधानमंत्री शिंजो आबे ने उन्हें में एक पाकिस्तानी पत्रकार के सवाल के जवाब में ट्रम्प ने कहा कि उन्हें लगता है कि उन्हें कई चीजों के लिए नोबेल मिलेगा, अगर पुरस्कार निष्पक्ष तरीके से दिया जाए। 2020 के राष्ट्रपति चुनाव के दौरान भी ट्रम्प ने नोबेल का मुद्दा उठाया। उन्होंने पूर्व राष्ट्रपति बराक ओबामा से अपनी तुलना करते हुए कहा था कि अगर ओबामा को यह पुरस्कार मिल सकता है तो उन्हें भी मिलना चाहिए। मारिया मचाडो ने ट्रम्प को गिफ्ट कर दिया था अपना नोबेल:-ट्रम्प की नोबेल दावेदारी का एक मामला वेनेजुएला की विपक्षी नेता मारिया कोरीना मचाडो से भी जुड़ा है। मचाडो को 2025 का यह पुरस्कार लोकतांत्रिक अधिकारों के लिए उनके काम के लिए दिया गया था। बाद में उन्होंने व्हाइट हाउस में ट्रम्प से मुलाकात की और उन्हें अपना नोबेल मेडल दिया। हालांकि, इससे नोबेल पुरस्कार ट्रम्प को नहीं मिला। पुरस्कार मचाडो के पास ही रहा। नोबेल समिति के मुताबिक, पुरस्कार किसी दूसरे व्यक्ति को ट्रांसफर, साझा या वापस नहीं किया जा सकता। इस बार पोप लियो नोबेल प्राइज के दावेदार:-ट्रम्प के अलावा पोप लियो, इंटरनेशनल क्रिमिनल कोर्ट (आईसीसी), इंटरनेशनल कोर्ट ऑफ जस्टिस (आईसीजे) और फिलिस्तीनी क्षेत्रों के लिए संयुक्त राष्ट्र की विशेष रैपोर्टियर फ्रांसेस्का अल्बानीज के नाम भी चर्चा में हैं। पोप लियो युद्ध और हिंसा के खिलाफ आवाज उठाते रहे हैं। आईसीसी और आईसीजे अंतरराष्ट्रीय कानून के जरिए युद्ध और देशों के विवादों से जुड़े मामलों पर काम करते हैं। अल्बानीज गाजा और फिलिस्तीनी इलाकों में मानवाधिकारों के मुद्दे उठाती रही हैं। हालांकि, ये आधिकारिक फाइनलिस्ट नहीं हैं। नोबेल समिति नामांकन की पूरी सूची 50 साल तक सार्वजनिक नहीं करती।

पाक में आटे के संकट से जूझ रहे लोग, रोटी 20 से बढ़कर 30 रुपए हुई, 20 किलो आटे का बैग 3300 रुपए पहुंचा

इस्लामाबाद। पाकिस्तान के पेशावर में आटे की कीमत तेजी से बढ़ने से लोग परेशान हैं। 20 किलो मोटे आटे का बैग 3,300 पाकिस्तानी रुपए तक पहुंच गया है। आटे की कीमत बढ़ने का असर तंदूरों पर भी पड़ा है। एएनआई के मुताबिक, 20 रुपए में मिलने वाली 50 ग्राम की रोटी अब 30 रुपए में बिक रही है। कई इलाकों में एक रोटी की बिक्री भी बंद कर दी गई है और 40 रुपए में दो रोटियां दी जा रही हैं। सरकारी सब्सिडी वाला आटा बाजार से लगभग गायब हो

गया है। इसके चलते दुकानों पर व्यावसायिक आटे की कीमत बढ़ गई है। 20 किलो महीन आटे का बैग 3,120 रुपए में बिक रहा है, जबकि 80 किलो मोटे आटे की कीमत 13,200 रुपए पहुंच गई है। 20 किलो चोकर का बैग भी 1,480 रुपए में मिल रहा है। कारोबारियों पर आटे की जमाखोरी का आरोप:-आटे की कीमत बढ़ने के पीछे कुछ कारोबारियों पर जमाखोरी करने के आरोप लग रहे हैं। आरोप है कि कारोबारियों ने आटे का स्टॉक गोदामों में रोक लिया, जिससे बाजार में इसकी उपलब्धता कम हो गई और कीमतें तेजी से बढ़ीं। आटे की अचानक बढ़ी कीमतों के बाद कानून-व्यवस्था से जुड़ी एजेंसियां बड़े कारोबारियों और आटा गोदामों पर नजर रख रही हैं। इस संकट के बीच आटा कारोबारियों के कुछ ही दिनों में करोड़ों रुपए का मुनाफा कमाने की बात भी सामने आई है। कई इलाकों में दुकानदारों ने एक अकेली रोटी देना बंद किया:-पेशावर के खैबर बाजार, अशरफ रोड, कराची मार्केट, नमक मंडी और गवर्नमेंट कॉलेज चौक जैसे इलाकों में कई दुकानदार अब एक अकेली रोटी नहीं दे रहे हैं। ग्राहकों को 40 रुपए में दो रोटियां खरीदनी पड़ रही हैं। लोगों का कहना है कि आटे की कीमत बढ़ने के साथ रोटी का वजन भी कम किया जा रहा है। आटे और रोटी की बढ़ती कीमतों से लोगों में नाराजगी है। उन्होंने प्रशासन से तय कीमत पर आटा और रोटी उपलब्ध कराने के साथ रोटी का वजन भी तय मानक के मुताबिक रखने की मांग की है। सरकार का दावा- सब्सिडी वाला आटा अब भी बांटा जा रहा:-खाद्य विभाग का कहना है कि सब्सिडी वाला आटा अब भी पूरे प्रांत में बांटा जा रहा है। विभाग के मुताबिक, पिछले हफ्ते 1,611 सक्रिय डीलरों के जरिए सरकारी दरों पर 4,17,168 बैग आटा सप्लाई किया गया। पेशावर डिवीजन को 1,01,955, मलाकंड को 1,20,737 और मरदान को 59,389 बैग मिले। हजारा को 38,129, बन्नू को 12,588, डेरा इस्माइल खान को 41,688 और कोहाट को 42,682 बैग की सप्लाई की गई। पाकिस्तान में पहले भी कई बार आटे का संकट आया:-पाकिस्तान में आटे की कमी कोई नई समस्या नहीं है। देश में पिछले कुछ वर्षों में कई बार गेहूं और आटे की सप्लाई प्रभावित हुई है। 2019-20 में आटे की कीमतों में तेज बढ़ोतरी के साथ आटे की कमी का संकट सामने आया था। इसके बाद 2023 में भी गेहूं और आटे की भारी किल्लत हुई, जब सब्सिडी वाले आटे के लिए लोगों की लंबी कतारें लग गई थीं। 2023 के संकट में सरकार की ओर से कम कीमत पर दिए जाने वाले आटे की मांग तेजी से बढ़ गई थी। कई जगह लोग घंटों कतार में खड़े रहे। कुछ स्थानों पर आटा लेने के दौरान भगदड़ जैसी स्थिति भी बनी थी। इससे साफ हुआ कि आटे की सप्लाई में रुकावट का सबसे ज्यादा असर सीधे आम लोगों पर पड़ता है।

इजराइल में 20 दिन बाद वोटिंग, नेतन्याहू हार सकते हैं,हमास हमले ने बदली देश की पॉलिटिक्स वामपंथ कमजोर, अरब पार्टियां अछूत बनीं

तेल अवीव। 7 अक्टूबर 2023 को हमास के करीब 6 हजार लड़ाकों ने इजराइल पर हमला किया। लोगों को घरों और बंकरों में मारा गया, कई लोगों जैसे मुद्दे चुनावी बहस में प्रमुख थे। अब सुरक्षा, हमास, सेना और फिलिस्तीन का सवाल सबसे ऊपर है। इसका फायदा पहले से मजबूत दक्षिणपंथी

डेमोक्रेट्स पार्टी के अध्यक्ष याइर गोलान (दाएं) और पार्टी सांसद नामा लाजिमी एक चुनावी अभियान के दौरान बातचीत करते हुए। फोटो– 28 सितंबर 2026

को जिंदा जला दिया गया और 250 से ज्यादा लोगों को बंधक बनाकर गाजा ले जाया गया। करीब 1,200 लोग मारे गए। इसके जवाब में इजराइल ने गाजा पर हमला शुरू कर दिया। तीन साल बाद भी 7 अक्टूबर का असर सिर्फ युद्ध तक सीमित नहीं है। इस हमले ने इजराइल की राजनीति का एजेंडा भी बदल दिया। इजराइल में 27 अक्टूबर को आम चुनाव होने हैं। पहले महंगाई, घरों की कीमत और नेतन्याहू के खिलाफ मुकदमे राजनीति को मिला है। हालांकि पीएम नेतन्याहू के हारनेका खतरा मंडरा रहा है। वहीं लेफ्ट कमजोर हुआ है और अरब पार्टियों के लिए सरकार बनाने में पहले जैसी किंगमेकर भूमिका निभाना मुश्किल हो गया है। गाजा जंग के बाद देश में पहला चुनाव:-हमास हमले के बाद यह देश का पहला राष्ट्रीय चुनाव है। इस चुनाव में सवाल सिर्फ यह नहीं है कि नेतन्याहू फिर प्रधानमंत्री बनेंगे या नहीं। तीन साल पहले जिस हमले ने इजराइल की राजनीति बदल दी थी, अब उसी हमले के लिए नेतन्याहू की सरकार से जवाब भी मांगा जा रहा है। हमले के समय नेतन्याहू ही प्रधानमंत्री थे और उन पर सुरक्षा चूक की जिम्मेदारी लेने का दबाव है। उनकी मुश्किल यह है कि इस बार उन्हें पूर्व सेना प्रमुख गादी आइजेनकोट से सीधी चुनौती मिल रही है। आइजेनकोट की पार्टी कई हालिया सर्वे में नेतन्याहू की लिकुड के बराबर या उससे आगे दिखाई दे रही है। एक ताजा सर्वे में लिकुड को करीब 22-23 और आइजेनकोट की पार्टी को करीब 22 सीटें मिल रही हैं। दूसरी तरफ नेतन्याहू के साथ मौजूद दक्षिणपंथी दलों का पूरा गठबंधन भी बहुमत से पीछे है। हालिया सर्वे के औसत में उनके गठबंधन को करीब 52-55 सीटें मिल रही हैं, जबकि सरकार बनाने के लिए 61 सीटें चाहिए। दक्षिणपंथ पहले से मजबूत था, 7 अक्टूबर के बाद और मजबूत हुआ:-इजराइल में दक्षिणपंथ 7 अक्टूबर से पहले ही मजबूत था। नेतन्याहू की लिकुड पार्टी और धार्मिक-राष्ट्रवादी दल पहले से सरकार में थे। लेकिन हमास के हमले के बाद सुरक्षा का मुद्दा सबसे बड़ा हो गया। आगे की खबर पेज संख्या 07 पर..

प्रयागराज के गायक-आकाशप्रयागराज का नया गाना जिसका टाईटल है- 'प्रयागराज का राज'

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) प्रयागराज। ये गीत स्पेशल लिखा और कंपोज किया है. इस गाने में आकाश जी के साथ उनके

प्रयागराज से संबंधित है इस गाने में आप सभी को प्रयागराज की झलक देखने को मिलेगा।आकाशप्रयागराज जी ने बताया कि उनके सभी दोस्त और जानने वाले लोग बोले कि आप प्रयागराज पर अपनी जन्मभूमि पर गाना लाये तो 'आकाश प्रयागराज' ने ये जबरदस्त गाना जो आप सभी के बीच बहुत जल्दी आने वाला है आकाशप्रयागराज जी ने स्वयं मित्र 'निखिलस्टार' और आकाशप्रयागराज जी की भाभी 'सविता जी' ने मुख्य भूमिका निभाया है। आप सभी को बहुत जल्दी ये गाना - Akashprayagrajofficial यूट्यूब चैनल पर देखने को मिलेगा। 'आकाशप्रयागराज जी'ने अपना ये गाना जो बहुत जल्दी आप सभी के बीच आने वाला है।'प्रयागराज का राज' को अपने सभी प्रयागराज के वाशियो को समर्पित किया है।

स्वच्छता पखवाड़ा अभियान में ट्रैक से स्टेशन तक चला सफाई अभियान

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) लखनऊ। बुधवार को स्वच्छता

पखवाड़ा -2026 के तहत पूर्वोत्तर रेलवे के लखनऊ मंडल में ट्रैक साइड क्लीनिंग ड्राइव के माध्यम से रेलवे परिसरों को स्वच्छ और पर्यावरण अनुकूल बनाने का अभियान तेज कर दिया गया है। मंडल रेल प्रबंधक गौरव अग्रवाल के मार्गदर्शन एवं वरिष्ठ मंडल यांत्रिक इंजीनियर/ईएनएचएम महेंद्र सिंह के निर्देशन में छह से आठ अक्टूबर तक चल रहे विशेष अभियान के तहत बुधवार को मंडल के कोचिंग डिपो, रेलवे कालोनियों, विभिन्न रेलवे इकाइयों तथा छोटे-बड़े स्टेशनों पर सर्कुलेटिंग एरिया और ट्रैक किनारे सघन सफाई कराई गई। स्टेशनों पर वाटर बूथ, कैंटीन, पैनल रूम, प्लेटफार्म और ट्रैक की गहन सफाई के साथ यात्री सुविधाओं को भी व्यवस्थित किया गया। रनिंग लाइनों के किनारे लंबे समय से जमा कूड़े-कचरे को हटाकर कूड़ेदानों में एकत्र किया गया और कचरे का पृथक्करण कर निर्धारित तरीके से निस्तारण कराया गया। अभियान के दौरान रेल कर्मचारियों ने स्वच्छता को महज सफाई तक सीमित न रखते हुए इसे जनभागीदारी, पर्यावरण संरक्षण, बेहतर कचरा प्रबंधन और जिम्मेदार नागरिक व्यवहार से जोड़ने का संदेश दिया। रेलवे प्रशासन का उद्देश्य यात्रियों और आमजन की भागीदारी से स्वच्छ, स्वस्थ एवं पर्यावरण अनुकूल रेलवे परिसर तैयार करना है। लखनऊ मंडल की ओर से स्वच्छता पखवाड़े के तहत जागरूकता और स्वच्छता संबंधी गतिविधियां लगातार जारी हैं। यह जानकारी जनसंपर्क अधिकारी हिमांशु राव ने दी।

डंपर की चपेट में आए दो बच्चे गंभीर घायल, परिजन डंपर मालिक के आने पर अड़े

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) प्रयागराज। करछना थाना क्षेत्र

के खजुरी ग्राम सभा में डंपर की चपेट में आने से गंभीर रूप से घायल हुए शनि कुशवाहा और पिंटू कुशवाहा के परिजनों ने डंपर को मौके पर रोक रखा है। परिजनों की मांग है कि वाहन मालिक मौके पर आए और घायल बच्चों के इलाज व दवा का खर्च उठाने की जिम्मेदारी ले। परिजनों का कहना है कि वहां बच्चों की ज्यादा भीड़ होने के बावजूद चालक ने डंपर नहीं रोका। हादसे में बच्चों को गंभीर चोटें आई हैं और उनके इलाज में काफी खर्च आएगा। इसी वजह से वे डंपर मालिक के आने का इंतजार कर रहे हैं। परिजनों का यह भी कहना है कि उन्होंने न तो डंपर को कोई नुकसान पहुंचाया है और न ही चालक के साथ मारपीट की है। परिजनों के मुताबिक चालक ने भी उनसे कहा है कि डंपर का मालिक आएगा और इलाज की व्यवस्था करेगा। इसी भरोसे पर परिवार वाहन को मौके पर रोके हुए है। परिजनों का आरोप है कि बीती रात पुलिस मौके पर पहुंची थी और डंपर को वहां से ले जाने का प्रयास कर रही थी। परिवार का कहना है कि वे चाहते हैं कि पहले वाहन मालिक आए और बच्चों के इलाज की जिम्मेदारी स्पष्ट करे, उसके बाद ही आगे की कार्रवाई हो। परिजनों ने यह भी बताया कि पुलिस की ओर से आयुष्मान कार्ड बनवाकर इलाज कराने की बात कही गई है।

परिवार के अनुसार पुलिस ने यह भी कहा है कि बच्चों को करीब सात दिन तक अस्पताल में भर्ती रखकर इलाज कराया जा सकता है, लेकिन इसके बाद दवा और इलाज की व्यवस्था को लेकर परिजनों में चिंता बनी हुई है। फिलहाल घायल बच्चों के परिजन इलाज की व्यवस्था और वाहन मालिक के मौके पर आने की मांग पर डंपर को रोके हुए हैं।

डाक विभाग, प्रयागराज मंडल द्वारा 'प्रयागफिलेक्स-2026' जिला स्तरीय डाक टिकट प्रदर्शनी का आयोजन

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) प्रयागराज, डाक विभाग,

प्रयागराज मंडल , डाक टिकट संग्राहक एसोसिएशनों और उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र, प्रयागराज के सहयोग से प्रयागफिलेक्स-2026 (जिला स्तरीय फिलैटेलिक/डाक टिकट प्रदर्शनी) का आयोजन कर रहा है। यह तीन दिवसीय प्रदर्शनी 9 अक्टूबर से 11 अक्टूबर 2026 तक उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र, प्रयागराज में आयोजित की जाएगी। प्रेसवार्ता के दौरान सीनियर पोस्टमास्टर राजीव उमराव ने बताया कि प्रयागफिलेक्स-2026 का विषय 'इंडिया थ्रू स्टैम्प्स हेरिटेज, कल्चर एंड प्रोग्रेस' (डाक टिकटों के माध्यम से भारत विरासत, संस्कृति और प्रगति) है। डाक टिकट केवल डाक भेजने के लिए उपयोग किए जाने वाले कामत्र के टुकड़े नहीं है, बल्कि वे किसी देश के इतिहास, विरासत, संस्कृति, महान व्यक्तित्वों, उपलब्धियों और महत्वपूर्ण घटनाओं के लघु प्रतिबिंब हैं। इस प्रदर्शनी के माध्यम से प्रयागराज के लोगों, विशेषकर युवा छात्रों और युवा पीढ़ी को डाक टिकट संग्रह की इस रोमांचक दुनिया के करीब लाना है। दुर्लभ और रोचक संग्रहः यह तीन दिवसीय प्रदर्शनी आगंतुकों को दुर्लभ और रोचक डाक टिकटों तथा अन्य फिलैटेलिक सामग्रियों के व्यापक संग्रह को देखने का अवसर प्रदान करेगी। स्कूली छात्रों के लिए 10 अक्टूबर 2026 को एक फिलैटेलिक क्विज़ (डाक टिकट प्रश्नोत्तरी) और फिलैटेलिक कार्यशाला का आयोजन किया जाएगा। इसके लिए प्रयागराज के स्कूलों को आमंत्रित किया जा रहा है ताकि उनके छात्र भाग ले सकें और इस कला को सीख सकें. उन्होंने कहा कि हमारा उद्देश्य केवल डाक टिकटों को प्रदर्शित करना नहीं है, बल्कि यह दिखाना है कि कैसे डाक टिकट संग्रह एक प्रभावी शैक्षिक उपकरण बन सकता है। एक छोटा सा डाक टिकट किसी बच्चे को इतिहास, भूगोल, कला, संस्कृति, विज्ञान, व्यक्तित्व और राष्ट्रीय घटनाओं से परिचित करा सकता है। डाक विभान प्रयागराज के सभी स्कूलों, छात्रों, अभिभावकों और आम जनता से आग्रह करता है कि वे इस प्रदर्शनी में अवश्य पधारें और इस अवसर का लाभ उठाएं।

डीआरएम ने कर्मचारी हितों से जुड़े मुद्दों दिया समाधान का भरोसा! पदोन्नति से आवास तक रेल कर्मियों की समस्याओं पर मंथन

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) लखनऊ। बुधवार को पूर्वोत्तर रेलवे के लखनऊ मंडल में रेल कर्मचारियों की समस्याओं और कल्याणकारी सुविधाओं को लेकर बुधवार को मंडल कार्यालय स्थित गंगोत्री सभागार में ऑल इंडिया एससी एवं एसटी रेलवे इम्प्लॉईज एसोसिएशन की अनौपचारिक बैठक हुई। मंडल रेल प्रबंधक गौरव अग्रवाल की अध्यक्षता में हुई बैठक में कर्मचारियों की पदोन्नति, एमएसीपी, आवास, स्थानांतरण, चिकित्सा सुविधा सहित कई महत्वपूर्ण मुद्दों पर विस्तार से चर्चा हुई। बैठक की शुरुआत वरिष्ठ मंडल कार्मिक अधिकारी राजेश कुमार गुप्ता ने एसोसिएशन के पदाधिकारियों का स्वागत कर की। उन्होंने कहा कि रेलवे बोर्ड के निर्देशों के अनुरूप अनुसूचित जाति एवं जनजाति वर्ग के कर्मचारियों को हरसंभव सहयोग दिया जा रहा है तथा उनके हितों और कल्याण से जुड़े विषयों पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। डीआरएम गौरव अग्रवाल ने कहा कि लखनऊ मंडल प्रशासन रेलकर्मियों के कल्याण के लिए लगातार प्रयास

कर रहा है। मनोरंजन संस्थानों के कायाकल्प के साथ रेलकर्मियों के बच्चों और परिजनों के सर्वांगीण विकास के लिए आधुनिक सुविधाएं उपलब्ध कराई जा रही हैं। पात्र कर्मचारियों को स्कूटी वितरण और कर्मचारियों के लिए भ्रमण शिविर का आयोजन भी किया जा रहा है। बैठक में एसोसिएशन के मंडल मंत्री नवनीत कुमार वर्मा, मंडल अध्यक्ष सुमित अंबेडकर समेत अन्य पदाधिकारियों ने कर्मचारियों की पदोन्नति, एमएसीपी, आवासों में बेहतर सुविधाएं, वरीयता निर्धारण, स्थानांतरण और चिकित्सा सुविधा से जुड़ी समस्याएं उठाईं। इसके अलावा वर्दी भत्ता, कार्यस्थल पर महिला कर्मचारियों की सुविधाएं, कैंटीन व्यवस्था, लाइन कर्मचारियों को सुरक्षा उपकरण उपलब्ध कराने तथा रोस्टर के अनुरूप ड्यूटी लगाने जैसे मुद्दों पर भी सार्थक चर्चा हुई। एसोसिएशन के पदाधिकारियों ने कर्मचारियों की व्यक्तिगत और नीतिगत समस्याओं के समाधान के लिए संबंधित विभागों के अधिकारियों को सुझाव भी दिए। बैठक का संचालन वरिष्ठ मंडल कार्मिक अधिकारी राजेश कुमार गुप्ता ने किया। इस दौरान मुख्य चिकित्सा अधीक्षक बादशाहनगर, वरिष्ठ मंडल सुरक्षा आयुक्त, वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक, वरिष्ठ मंडल विद्युत इंजीनियर, वरिष्ठ मंडल सिगनल एवं दूरसंचार इंजीनियर, वरिष्ठ मंडल इंजीनियर, वरिष्ठ मंडल यांत्रिक इंजीनियर, वरिष्ठ मंडल परिचालन प्रबंधक, मंडल कार्मिक अधिकारी, जनसंपर्क अधिकारी समेत विभिन्न विभागों के अधिकारी तथा एसोसिएशन के पदाधिकारी और सदस्य मौजूद रहे। जनसंपर्क अधिकारी हिमांशु राव ने बताया कि बैठक का उद्देश्य कर्मचारी हितों से जुड़े विषयों पर संवाद स्थापित कर समस्याओं के समाधान की दिशा में प्रभावी पहल करना था।

पुलिस परिवारों के बच्चों के सपनों को मिली उड़ान, 42वीं वाहिनी पीएसी में कैरियर काउंसलिंग

आकाश इंस्टीट्यूट के विशेषज्ञों ने विद्यार्थियों को दिए उज्ज्वल भविष्य के टिप्स, शिक्षा और करियर विकल्पों की दी विस्तृत जानकारी

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) प्रयागराज। पुलिस परिवारों के बच्चों के उज्ज्वल भविष्य को

संवारने और उनकी प्रतिभा को सही दिशा देने की पहल के तहत 42वीं वाहिनी पीएसी नैनी में 'वामा सारथी, पुलिस फैमिली वेलफेयर एसोसिएशन' के तत्वावधान में विशेष कैरियर काउंसलिंग कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में बच्चों को शिक्षा, प्रतियोगी परीक्षाओं और बेहतर करियर विकल्पों को लेकर महत्वपूर्ण मार्गदर्शन दिया गया। सेनानायक श्री राजेश कुमार श्रीवास्तव (आईपीएस) के कुशल निर्देशन में आयोजित कार्यक्रम में सहायक सेनानायक श्री देव नारायण यादव की उपस्थिति रही। वाहिनी सभागार में आयोजित इस कार्यक्रम में आकाश इंस्टीट्यूट के विशेषज्ञों ने विद्यार्थियों से संवाद करते हुए उनकी रुचि, क्षमता और लक्ष्य के अनुरूप करियर चुनने के महत्वपूर्ण पहलुओं पर प्रकाश डाला। विशेषज्ञों ने बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के साथ प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी, विभिन्न शैक्षिक क्षेत्रों में उपलब्ध अवसरों तथा भविष्य की योजनाओं को लेकर उपयोगी जानकारी दी। कार्यक्रम का उद्देश्य पुलिस परिवारीजनों के बच्चों में आत्मविश्वास बढ़ाना और उन्हें अपने सपनों को साकार करने के लिए सही दिशा एवं मार्गदर्शन उपलब्ध कराना रहा।वामा सारथी की इस पहल को पुलिस परिवारों के बच्चों के शैक्षिक विकास की दिशा में महत्वपूर्ण कदम माना जा रहा है। कार्यक्रम में शिविरपाल अरविंद कुमार सिंह, सहायक शिविरपाल हरदास, सूबेदार मेजर सुधांशु कुमार सहित अन्य अधिकारी एवं कर्मचारीगण उपस्थित रहे।

बाटा पंडित की रहस्यमयी मौत! 36 घंटे बाद भी खुलासा नहीं, पुलिस की कार्यशैली पर उठे गंभीर सवाल

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। सोनभद्र के कोन थाना क्षेत्र में नितेश तिवारी उर्फ बाटा पंडित की संदिग्ध परिस्थितियों में हुई मौत का मामला अब तूल पकड़ता जा रहा है। घटना के लगभग 36 घंटे बीत जाने के बाद भी, परिजनों के अनुसार, न तो मामले में ठोस कार्रवाई की जानकारी सामने आई है और न ही घटना की गुत्थी सुलझ सकी है। आखिर बाटा पंडित की मौत के पीछे की सच्चाई क्या है? पुलिस अब तक किसी निष्कर्ष पर क्यों नहीं पहुंच सकी? ये सवाल क्षेत्र में चर्चा का विषय बने हुए हैं। धारदार हथियार से हमले का आरोप, सिर पर तीन वार की बातः-परिजनों के अनुसार, नितेश तिवारी उर्फ बाटा पंडित पर परसों शाम करीब 6 से 7 बजे के बीच धारदार हथियार से हमला किया गया, जिसमें उनकी मौत हो गई। परिवार का दावा है कि मृतक के सिर पर तीन वार के निशान थे। परिजनों का कहना है कि घटना को दुर्घटना मानने के बजाय चोटों की प्रकृति, पोस्टमार्टम रिपोर्ट और अन्य साक्ष्यों के आधार पर निष्पक्ष जांच होनी चाहिए। पिता ने दो आरोपियों के नाम दिए, फिर भी कार्रवाई पर सवालः-मृतक के पिता ललित तिवारी का कहना है कि उन्होंने लिखित शिकायत में दो लोगों के नाम दिए हैं और अपना बयान भी दर्ज कराया है। इसके बावजूद, उनके अनुसार, अब तक अपेक्षित कार्रवाई नहीं हुई है। परिवार का आरोप है कि पुलिस द्वारा पहले पोस्टमार्टम कराने और उसके बाद मुकदमा दर्ज करने का आश्वासन दिया गया था, लेकिन इसके बाद भी उन्हें न्याय की दिशा में ठोस प्रगति दिखाई नहीं दे रही है। क्या दुर्घटना की तहरीर देने का बनाया गया दबाव? पीड़ित पक्ष ने आरोप लगाया है कि क्षेत्राधिकारी (सीओ) की ओर से दुर्घटना का मामला लिखवाने के लिए बार-बार दबाव बनाया जा रहा है। हालांकि, इस आरोप की स्वतंत्र पुष्टि होना बाकी है। यदि ऐसा हुआ है, तो यह गंभीर विषय है, जिसकी निष्पक्ष जांच होनी चाहिए। पीड़ित परिवार की शिकायत को नियमानुसार दर्ज

मृतक नितेश तिवारी उर्फ बाटा पंडित

करना और उपलब्ध साक्ष्यों के आधार पर कार्रवाई करना पुलिस की जिम्मेदारी है। पुरानी रंजिश और धमकियों की शिकायत, पुलिस की भूमिका पर सवालः-परिजनों का आरोप है कि नितेश तिवारी और नामजद व्यक्तियों के बीच पहले भी विवाद होते रहे थे। उनका दावा है कि कई बार डायल 112 को सूचना दी गई थी और धमकियों की शिकायत भी की गई थी। परिवार का सवाल है कि यदि पहले से विवाद की जानकारी थी, तो समय रहते उचित कार्रवाई क्यों नहीं हुई? इन सभी आरोपों की जांच कर यह स्पष्ट किया जाना जरूरी है कि घटना से पहले क्या परिस्थितियां थीं और किन लोगों की क्या भूमिका रही। राजनीतिक दबाव या प्रशासनिक लापरवाही? निष्पक्ष जांच की मांगः-मामले को लेकर क्षेत्र में तरह-तरह की चर्चाएं हैं। पीड़ित पक्ष को आशंका है कि कहीं बाहरी दबाव के कारण कार्रवाई प्रभावित तो नहीं हो रही। हालांकि, किसी राजनीतिक दबाव या आर्थिक लेन-देन के आरोप की पुष्टि अभी नहीं हुई है। ऐसे में जरूरी है कि पुलिस इन आशंकाओं को दूर करने के लिए पारदर्शी जांच करे और अपनी कार्रवाई की स्थिति सार्वजनिक करे। क्या न्याय मांगना भी अब संघर्ष बन गया है? नितेश तिवारी की मौत ने परिवार को गहरे सदमे में डाल दिया है। परिजनों और स्थानीय लोगों के मन में कई सवाल हैं। क्या एक आम नागरिक की जान की कीमत इतनी कम है कि परिवार को न्याय के लिए थाने के चक्कर लगाने पड़ें? क्या पहले की शिकायतों पर समय रहते कार्रवाई हुई थी? और सबसे बड़ा सवाल–मौत की असली वजह सामने कब आएगी? यह मामला किसी जाति या बिरादरी की राजनीति का नहीं, बल्कि एक नागरिक की मौत और उसके परिवार को न्याय दिलाने का है। कानून की नजर में हर व्यक्ति समान है। यदि मृतक के साथ अन्याय हुआ है, तो दोषियों को साक्ष्यों के आधार पर सजा मिलनी चाहिए; और यदि किसी निर्दोष पर आरोप लगाया गया है, तो निष्पक्ष जांच से सच्चाई सामने आनी चाहिए। प्रशासन से सीधे सवालः-- पीड़ित परिवार की लिखित शिकायत पर अब तक क्या कार्रवाई हुई? क्या नामजद व्यक्तियों से पूछताछ की गई है? पोस्टमार्टम रिपोर्ट में चोटों और मौत के कारण के संबंध में क्या निष्कर्ष सामने आए? घटना से पहले हुए विवादों और डायल 112 पर की गई कथित शिकायतों की जांच हुई या नहीं? परिवार को जांच की प्रगति की जानकारी कब दी जाएगी? अब निगाहें प्रशासन पर:-नितेश तिवारी उर्फ बाटा पंडित की मौत का मामला अब केवल एक परिवार की पीड़ा नहीं, बल्कि कानून-व्यवस्था और पुलिस की जवाबदेही से जुड़ा गंभीर सवाल बन गया है। पीड़ित परिवार की मांग है कि मामले में नियमानुसार मुकदमा दर्ज कर निष्पक्ष एवं पारदर्शी जांच की जाए, साक्ष्यों को सुरक्षित रखा जाए और दोषियों के विरुद्ध कानून के अनुसार कार्रवाई हो। सोनभद्र प्रशासन से सवाल है–आखिर बाटा पंडित की मौत का सच कब सामने आएगा और पीड़ित परिवार को न्याय कब मिलेगा?

सज रही किताबों की साहित्यिक दुनिया,9 अक्टूबर से लगेगा पुस्तकों का महाकुंभ, बुकवाला बुक कार्निवाल का भव्य आयोजन

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) प्रयागराज। दुर्गा पूजा के अवसर पर प्रयागराज में ज्ञान, साहित्य और संस्कृति का भव्य उत्सव बुकवाला बुक कार्निवाल 2026 आयोजित किया जा रहा है। पुस्तक मेले का भव्य उद्घाटन 9 अक्टूबर को शाम 5:30 बजे लक्ष्मी नारायण वाटिका, लाऊदर रोड, सरस्वती नेत्रालय के सामने, प्रयागराज में होगा। उद्घाटन समारोह में सीए विनय गोयल, जयंती संयोजक, श्री अग्रसेन अग्रवाल समाज; सीए आर.के. अग्रवाल, वरिष्ठ सदस्य, श्री अग्रसेन अग्रवाल समाज; श्री मनोज अग्रवाल, वरिष्ठ उपाध्यक्ष, श्री अग्रसेन अग्रवाल समाज; श्री रविन्द्र कुमार गुप्ता, डायरेक्टर, पतंजलि ग्रुप ऑफ स्कूल तथा रोटेरियन अजय शर्मा, अध्यक्ष रोटरी प्लैटिनम एवं डिस्ट्रिक्ट सेक्रेटरी मुख्य एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहेंगे। 9 से 18 अक्टूबर 2026 तक आयोजित होने वाला यह पुस्तक मेला प्रतिदिन सुबह 11 बजे से रात 9 बजे तक चलेगा। मेले में प्रवेश निःशुल्क रहेगा तथा आगंतुकों के लिए गेट नंबर 2 पर पार्किंग की सुविधा उपलब्ध होगी। इस वर्ष पुस्तक मेले की थीम 'किताबों का उत्सव, ज्ञान, साहित्य और संस्कृति का संगम' रखी गई है। बुकवाला बुक कार्निवाल में देश के विभिन्न शहरों से प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता अपनी पुस्तकें लेकर पहुंच रहे हैं। मेले में निखिल पब्लिशर्स, आगरा; दिनकर

पुस्तकालय, भागलपुर; रोहित बुक कंपनी, गाजियाबाद; उपकार प्रकाशन, आगरा; दीक्षा बुक्स एंड स्टेशनरी; क्रिएटिव कार्ट; द गिडियन्स इंटरनेशनल इन इंडिया; फ्लाई ड्रीम्स, दिल्ली, रेकता उर्दू, प्रज्ञान बोध बुक स्टॉल; राजपाल एंड संस, दिल्ली; रूपा पब्लिकेशंस, दिल्ली; मंजुल पब्लिशिंग हाउस, नोएडा; गीता प्रेस, गोरखपुर; साहित्य सरोवर, आगरा; बैरिंगटन स्टोक एवं हार्पर कॉलिन्स; प्रतियोगिता पुस्तकें; पेंगुइन रैंडम हाउस हिंदी; वाणी प्रकाशन; गांधी डायरी एवं सस्ता साहित्य मंडल; ब्रिजवासी आर्ट प्रेस, दिल्ली; चिल्ड्रन्स बुक्स; बोधि प्रकाशन; अर्ज है प्रकाशन, प्रयागराज; ऑथर्स कॉर्नर; हिंद युग्म; द ब्राउजर; नवनीत, मुंबई; वंडर हाउस; फिंगरप्रिंट; साधना प्रकाशन; सेतु प्रकाशन तथा वेस्टलैंड बुक्स सहित अनेक प्रकाशकों की पुस्तकें उपलब्ध होंगी। पुस्तक प्रेमियों के लिए यह मेला एक ही स्थान पर विभिन्न विषयों और रुचियों की पुस्तकों को देखने और खरीदने का अवसर प्रदान करेगा। बच्चों के लिए मनोरंजक एवं ज्ञानवर्धक पुस्तकें, विद्यार्थियों के लिए शैक्षणिक एवं प्रतियोगी परीक्षाओं की पुस्तकें, साहित्य प्रेमियों के लिए हिंदी एवं अंग्रेजी साहित्य तथा सामान्य ज्ञान, धर्म, अध्यात्म, कला और अन्य विषयों से संबंधित पुस्तकें उपलब्ध रहेंगी। मेले में विभिन्न शहरों एवं राज्यों से आने वाले प्रकाशकों के साथ-साथ लेखकों से मिलने और साहित्य से सीधे जुड़ने का अवसर भी पुस्तक प्रेमियों को मिलेगा। इससे पाठकों को नए लेखकों, नई पुस्तकों और विभिन्न प्रकाशनों से परिचित होने का अवसर मिलेगा। पुस्तक मेले के दौरान प्रतिदिन ओपन माइक और विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाएगा। प्रयागराज की संस्था अर्ज है 'लेखन समूह' द्वारा प्रतिदिन नए कार्यक्रम प्रस्तुत किए जाएंगे। वहीं रक्त संकल्प संस्था स्वैच्छिक रक्तदान के प्रति लोगों को जागरूक करेगी। आयोजन में बुकवाला नॉलेज पार्टनर तथा आजाद रीड्स रीडिंग पार्टनर हैं। यह पुस्तक मेला अग्रसेन जयंती समारोह पखवाड़े के अंतर्गत आयोजित किया जा रहा है तथा श्री अग्रसेन अग्रवाल समाज, अग्रवाल युवा मंडल, अग्रवाल महिला मंडल एवं अग्रवाल युवा महिला मंडल का सहयोग प्राप्त हो रहा है। आयोजकों के अनुसार पुस्तक मेले का उद्देश्य केवल पुस्तकों की बिक्री तक सीमित नहीं है, बल्कि बच्चों और युवाओं में पढ़ने की आदत विकसित करना, स्क्रीन टाइम को कम करना, परिवारों को पुस्तकों से जोड़ना, स्थानीय प्रतिभाओं को मंच देना तथा प्रयागराज में पढ़ने और साहित्य की संस्कृति को मजबूत करना भी है। पुस्तकें बच्चों की कल्पनाशक्ति, भाषा और रचनात्मकता को विकसित करने के साथ-साथ युवाओं और वयस्कों में ज्ञान एवं एकाग्रता बढ़ाने का प्रभावी माध्यम हैं। आयोजकों ने प्रयागराजवासियों से अपील की है कि वे परिवार सहित पुस्तक मेले में पहुंचें, अपनी पसंद की पुस्तकें खरीदें और ज्ञान, साहित्य, संस्कृति एवं रचनात्मकता के इस महाकुंभ का हिस्सा बनें।

सपा नेता चौधरी इंद्रसेन गुर्जर ने नोएडा विधानसभा- 61 में लगाई पीडीए चौपाल,कार्यकर्ताओं को दिया जीत का गुरु मंत्र

निठारी और सलारपुर गांव में पीडीए चौपाल लगाकर ग्रामीणों से किया संवाद,भाजपा सरकार और नोएडा प्राधिकरण पर साधा निशाना

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) नोएडा। बुधवार को समाजवादी पार्टी के कद्दावर नेता एवं वरिष्ठ समाजवादी नेता चौधरी इंद्रसेन

गुर्जर ने आज नोएडा विधानसभा-61 के विभिन्न क्षेत्रों का दौरा किया। इस दौरान उन्होंने निठारी गांव एवं सलारपुर गांव में पीडीए चौपाल आयोजित कर पार्टी कार्यकर्ताओं एवं स्थानीय लोगों से संवाद किया और आगामी राजनीतिक संघर्ष के लिए कार्यकर्ताओं को जीत का गुरु मंत्र दिया। चौधरी इंद्रसेन गुर्जर ने कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए कहा कि समाजवादी पार्टी की नीतियों, विचारधारा और राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव के नेतृत्व में प्रदेश में किए गए विकास कार्यों को जन-जन तक पहुंचाने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि पार्टी कार्यकर्ता गांव-गांव और घर-घर जाकर लोगों से संवाद करें तथा अधिक से अधिक युवाओं, महिलाओं, किसानों, मजदूरों और पिछड़े वर्ग के लोगों को समाजवादी पार्टी से जोड़ने का काम करें। उन्होंने कहा कि पीडीए की ताकत ही समाजवादी पार्टी की सबसे बड़ी ताकत है। उन्होंने कहा कि वर्तमान भाजपा सरकार में गांवों की स्थिति बेहद खराब हो गई है। सरकार लगातार

स्मार्ट गांव और विकास के बड़े-बड़े दावे करती है, लेकिन जमीनी हकीकत इसके बिल्कुल विपरीत है। गांवों में आज भी पीने के पानी की उचित व्यवस्था नहीं है, नालियां एवं सीवर व्यवस्था बदहाल है, कई स्थानों पर सड़कें टूटी पड़ी हैं और मूलभूत सुविधाओं का अभाव है। उन्होंने कहा कि सरकार प्रचार-प्रसार में करोड़ों रुपये खर्च कर रही है, लेकिन ग्रामीण क्षेत्रों की वास्तविक समस्याओं पर गंभीरता से ध्यान नहीं दिया जा रहा है। चौधरी इंद्रसेन गुर्जर ने नोएडा प्राधिकरण पर भी जमकर निशाना साधते हुए कहा कि नोएडा को देश के आधुनिक शहरों में शामिल किया जाता है, लेकिन नोएडा के गांव आज भी मूलभूत सुविधाओं के लिए संघर्ष कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि नोएडा प्राधिकरण को गांवों के विकास और ग्रामीणों की समस्याओं के समाधान के लिए गंभीरता से काम करना चाहिए। गांवों की अनदेखी किसी भी स्थिति में स्वीकार नहीं की जाएगी। डॉ. आश्रय गुप्ता ने कहा–पीडीए की एकजुटता से मजबूत होगी समाजवादी पार्टी- कार्यक्रम की अध्यक्षता समाजवादी पार्टी नोएडा महानगर अध्यक्ष डॉ. आश्रय गुप्ता ने की। उन्होंने कहा कि समाजवादी पार्टी नोएडा विधानसभा-61 में संगठन को बूथ स्तर तक मजबूत करने के लिए लगातार कार्य कर रही है। पीडीए चौपाल के माध्यम से पार्टी कार्यकर्ता सीधे जनता के बीच पहुंचकर उनकी समस्याओं को सुन रहे हैं और भाजपा सरकार की नीतियों की वास्तविकता जनता के सामने रख रहे हैं। डॉ. आश्रय गुप्ता ने कहा कि नोएडा विधानसभा-61 में पीडीए समाज के सभी वर्गों को एकजुट कर समाजवादी पार्टी को मजबूत करने का काम किया जाएगा। उन्होंने कार्यकर्ताओं से आह्वान किया कि वे पूरी मजबूती के साथ गांव-गांव जाकर जनता से संवाद करें और समाजवादी पार्टी की नीतियों एवं राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव के नेतृत्व में किए गए विकास कार्यों को जनता तक पहुंचाएं। उन्होंने कहा कि आने वाला समय समाजवादी पार्टी का है और कार्यकर्ताओं की मेहनत से पार्टी को और अधिक मजबूती मिलेगी। कार्यक्रम के दौरान ग्रामीणों ने स्थानीय समस्याओं से भी पार्टी नेताओं को अवगत कराया। समाजवादी पार्टी नेताओं ने ग्रामीणों को भरोसा दिलाया कि उनकी समस्याओं को संबंधित स्तर पर उठाकर उनके समाधान के लिए प्रभावी संघर्ष किया जाएगा। प्रदेश सचिव सुनील चौधरी ने कहा कि पीडीए चौपालों का यह अभियान आगे भी लगातार जारी रहेगा और नोएडा विधानसभा-61 के प्रत्येक गांव, सेक्टर एवं बूथ तक संगठन को मजबूत करने का काम किया जाएगा। इस अवसर पर निठारी एवं सलारपुर गांव के ग्रामीणों, समाजवादी पार्टी के पदाधिकारियों, जोन एवं सेक्टर प्रभारियों तथा पार्टी के वरिष्ठ नेताओं एवं कार्यकर्ताओं सहित बड़ी संख्या में लोग उपस्थित रहे। उपस्थित मुख्य लोगों में डॉ आश्रय गुप्ता अध्यक्ष महानगर, प्रभारी चों0इंद्रसेन जी ,साथी संतर पाल जी,महासचिव विकास यादव, ठा. बबलू चौहान, विधानसभा अध्यक्ष, चो जयकरण सिंह, फ़क़ीर चंद नगर, उपदेश नागर,गौरव यादव,बब्बू यादव, टीटू यादव ,देवपाल यादव,राघवेंद्र दूबे संजीव नगर, 1-गांव निठारी- पीडीए चोपाल, आयोजक रेसपाल अवना,सुनील चौदरी,राजेश अम्बावता, सुमित अम्बवता,मनोज प्रजापति,देवेंद्र अवना देवेंद्र गुज्जर, 2-हरोला पीडीए चोपाल- आशुतोष अवना,जगत चौधरी, नीरज शर्मा, 3-गांव सिलारपुर में पीडीए चोपाल के आयोजक- सुभाष भाटी, अमित भाटी, योगेश भाटी, कवित गुज्जर,सतपाल यादव राहुल अवना,गराज भाटी, अशोक भाटी नेहा पांडे ,लखन यादव, कालू यादव, मोनू खारी,मोहित गौतम, सुमित वर्मा,अमन नागर, आदि मौजूद रहे।

एटीडीसी नोएडा में ओडीओपी टूलकिट एवं वितरण योजना का औपचारिक शुभारंभ

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) नोएडा। वित्तीय वर्ष 2026-27 के

लिए एक जनपद एक उत्पाद टूलकिट एवं वितरण योजना का औपचारिक शुभारंभ बुधवार को अपैरल ट्रेनिंग एंड डिजाइन सेंटर (एटीडीसी), नोएडा में किया गया। कार्यक्रम में ललित ठुकराल, कार्यकारिणी सदस्य, एटीडीसी एवं संयोजक बीओजी एटीडीसी, सेवानिवृत्त आईएफएस राजीव कुमार भाटिया, पंकज निर्वाण, डीसीआई गौतम बुद्ध नगर, वत्स एसीआई गौतम बुद्ध नगर, डॉ. नीर चंद्रा निदेशक एटीडीसी एनएचओ तथा डॉ. नीर सिंह परिहार, निदेशक एटीडीसी एवं एनएचओ ने गरिमामयी उपस्थिति दर्ज कराई। कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्वलन के साथ हुआ। इस अवसर पर उपस्थित अतिथियों ने कौशल विकास, रोजगार सृजन, उद्यमिता तथा स्थानीय उत्पादों को बढ़ावा देने में ओडीओपी योजना की महत्वपूर्ण भूमिका पर अपने विचार साझा किए। कार्यक्रम के दौरान पंकज निर्वाण डीसीआई गौतम बुद्ध नगर ने लाभार्थियों को उत्तर प्रदेश सरकार एवं मुद्रा ऋण योजना के अंतर्गत उपलब्ध ऋण सुविधाओं के बारे में जानकारी दी। उन्होंने बताया कि प्रशिक्षण पूर्ण करने के बाद लाभार्थी अपना व्यवसाय शुरू करने अथवा उसे विस्तार देने के लिए रु5 लाख तक की ऋण

सहायता का लाभ उठा सकते हैं। ललित ठुकराल ने इस पहल की सराहना करते हुए कहा कि कौशल विकास को रोजगार एवं उद्यमिता के अवसरों से जोड़ना युवाओं को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है। अन्य अतिथियों ने भी लाभार्थियों को प्रशिक्षण एवं उपलब्ध सरकारी सहायता का अधिकतम लाभ उठाने के लिए प्रेरित किया। कार्यक्रम के सफल आयोजन एवं समुचित व्यवस्थाओं का समन्वय डॉ. मीनू डाबास, प्रिंसिपल, एटीडीसी नोएडा द्वारा एटीडीसी नोएडा की टीम के सहयोग से किया गया। डॉ. डाबास ने सभी विशिष्ट अतिथियों, सरकारी अधिकारियों, एटीडीसी प्रबंधन एवं अन्य हितधारकों का कार्यक्रम में उपस्थिति एवं सहयोग के लिए आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का समापन धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ। इस अवसर पर ओडीओपी के माध्यम से कौशल विकास, स्वरोजगार एवं आजीविका के अवसरों को मजबूत करने के लिए एटीडीसी नोएडा की प्रतिबद्धता को दोहराया गया।

जीएल बजाज में भारत-अफ्रीका खाद्य सुरक्षा, कृषि व्यापार एवं निवेश शिखर सम्मेलन 2026 का शुभारंभ

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) नोएडा। जीएल बजाज ग्रेटर नोएडा में भारत-अफ्रीका खाद्य सुरक्षा, कृषि व्यापार एवं निवेश शिखर सम्मेलन 2026 का शुभारंभ हुआ। सम्मेलन में 30

से अधिक अफ्रीकी देशों के प्रतिनिधियों के साथ राजनयिक, सरकारी अधिकारी, वैज्ञानिक, कृषि विशेषज्ञ, उद्योग जगत के प्रतिनिधि और शिक्षाविद शामिल हुए। अंतरराष्ट्रीय व्यापार एवं प्रतिनिधिमंडल महासंघ (आईटीडीएफसी) द्वारा 'समृद्धि

के लिए साझेदारी, आने वाली पीढ़ियों के पोषण के लिए सहयोग' विषय के तहत आयोजित इस सम्मेलन का उद्देश्य खाद्य सुरक्षा, कृषि, प्रौद्योगिकी, व्यापार और सतत विकास के क्षेत्रों में भारत-अफ्रीका सहयोग को मजबूत करना रहा। सम्मेलन में डॉ. अलका राव, निदेशक, सीएसआईआर-आईएमटेक, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय, भारत सरकार, महामहिम श्रीमती हरिसोआ ललातियाना अकोचे, उच्चायुक्त, सेशेल्स गणराज्य, महामहिम श्रीमती इल्दजिमा बद्दा मल्लोट, राजदूत, चाड गणराज्य; महामहिम श्री रेमंड सर्ज बाले, राजदूत, कांगो गणराज्य; तथा महामहिम डॉ. मालेम्दा कमेले, प्रभारी राजदूत, टोगो गणराज्य सहित कई गणमान्य प्रतिनिधियों ने भाग लिया। सम्मेलन में बीज एवं कृषि अनुसंधान, जैव प्रौद्योगिकी, चावल, अनाज एवं दलहन, मृदा स्वास्थ्य, सिंचाई, उर्वरक, एग्रीटेक, जलवायु-स्मार्ट कृषि, खाद्य प्रसंस्करण, मूल्य संवर्धन, व्यापार गलियारों, आपूर्ति श्रृंखला, ई-कॉमर्स और निवेश के अवसरों पर चर्चा की गई। पंकज अग्रवाल, उपाध्यक्ष, जीएल बजाज एजुकेशनल इंस्टीट्यूशंस, ग्रेटर नोएडा/मथुरा, ने विशिष्ट अतिथियों का स्वागत किया और अंतरराष्ट्रीय सहयोग के महत्व पर प्रकाश डाला। कार्तिकेय अग्रवाल, मुख्य कार्यकारी अधिकारी (सीईओ), जीएल बजाज एजुकेशनल इंस्टीट्यूशंस, ग्रेटर नोएडा/मथुरा, ने छात्रों और शिक्षा जगत के लिए वैश्विक अनुभव, ज्ञान के आदान-प्रदान और अंतरराष्ट्रीय साझेदारियों के महत्व को रेखांकित किया। जीएल बजाज इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी एंड मैनेजमेंट, ग्रेटर नोएडा, इस शिखर सम्मेलन का शैक्षणिक भागीदार रहा और अंतरराष्ट्रीय ज्ञान-विनिमय एवं सहयोग के लिए महत्वपूर्ण मंच प्रदान किया।आईटीडीएफसी के मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री सैयद अरीश हुसैन ने कहा कि यह शिखर सम्मेलन भारत और अफ्रीका के बीच संबंधों को और मजबूत करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। उन्होंने कहा, 'खाद्य सुरक्षा समृद्धि की नींव है और साझेदारी खाद्य सुरक्षा की आधारशिला है।' सम्मेलन के दौरान एशिया-अफ्रीका सीड ट्रेड एंड इनोवेशन समिट 2027 की भी घोषणा की गई। प्रस्तावित सम्मेलन में बीज व्यापार, कृषि नवाचार, प्रौद्योगिकी, अनुसंधान और निवेश के माध्यम से एशिया एवं अफ्रीका में मजबूत और टिकाऊ खाद्य प्रणालियों को बढ़ावा देने पर ध्यान दिया जाएगा। सम्मेलन ने भारत-अफ्रीका आर्थिक कूटनीति, बी2बी, बी2जी और संस्थागत साझेदारियों को मजबूत करने की आवश्यकता को भी रेखांकित किया। यह सहयोग विकसित भारत 2047 के व्यापक दृष्टिकोण के साथ वैश्विक खाद्य एवं पोषण सुरक्षा के लक्ष्यों में योगदान देने की क्षमता रखता है। जीएल बजाज के बारे में-जीएल बजाज इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी एंड मैनेजमेंट, ग्रेटर नोएडा, इंजीनियरिंग, मैनेजमेंट और कंप्यूटर एप्लीकेशन की शिक्षा के साथ अनुसंधान, नवाचार, उद्योग संपर्क और अंतरराष्ट्रीय सहयोग पर विशेष ध्यान देता है।

ग्रेटर नोएडा के प्रमुख इंजीनियरिंग और मैनेजमेंट संस्थानों में शामिल जीएल बजाज विद्यार्थियों को वैश्विक अनुभव, उद्योग विशेषज्ञों से संवाद, अनुसंधान, स्टार्टअप और करियर विकास से जुड़ने के अवसर प्रदान करता है। भारत के सर्वश्रेष्ठ इंजीनियरिंग और मैनेजमेंट कॉलेजों की तलाश करने वाले विद्यार्थियों के लिए शैक्षणिक गुणवत्ता, उद्योग से जुड़ाव, वैश्विक अवसर और समग्र छात्र विकास महत्वपूर्ण पहलू हैं, और संस्थान इन्हीं क्षेत्रों में निरंतर नए अवसर विकसित करने की दिशा में कार्य कर रहा है।

कृष्ण की बाल लीलाओं से भक्तिमय होगा नोएडा, आज हुआ अनिरुद्धाचार्य जी महाराज का आगमन

गोवर्धन पूजा और छप्पन भोग बनेगा मुख्य आकर्षण, कथा पंडाल में उमड़े श्रद्धालु

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) नोएडा। बुधवार को सेक्टर-33 स्थित शिल्प हाट के निकट

हेलीपैड ग्राउंड में भारत विकास परिषद, नोएडा की ओर से

आयोजित श्रीमद्भागवत कथा ज्ञान यज्ञ के पंचम दिवस बुधवार को भगवान श्रीकृष्ण की बाल लीलाओं और गोवर्धन पूजा का भावपूर्ण प्रसंग सुनाया गया । कार्यक्रम का विशेष आकर्षण विश्वविख्यात कथावाचक पूज्य श्री अनिरुद्धाचार्य जी महाराज का पावन आगमन हुआ । इस अवसर पर भव्य छप्पन भोग भी लगाया गया -कथा व्यास आचार्य श्री मृदुल कांत शास्त्री जी महाराज श्रीमद्भागवत के प्रसंगों के माध्यम से श्रद्धालुओं को भक्ति, संस्कार और सनातन जीवन मूल्यों का संदेश दिया। पंचम दिवस श्रीकृष्ण की बाल लीलाओं के साथ गोवर्धन पर्वत धारण करने और गोवर्धन पूजा के प्रसंग का वर्णन किया। कथा के पिछले दिवस श्रीकृष्ण जन्म और भव्य नंदोत्सव के प्रसंग ने श्रद्धालुओं को भावविभोर कर दिया। श्रीकृष्ण जन्म की घोषणा होते ही कथा पंडाल जयकारों से गूंज उठा। श्रद्धालुओं ने पुष्पवर्षा कर जन्मोत्सव मनाया। नंदोत्सव में भजन और मंगलगीतों पर श्रद्धालु झूमते नजर आए। आचार्य श्री मृदुल कांत शास्त्री जी महाराज ने पितृ पक्ष में श्रीमद्भागवत श्रवण के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि भागवत कथा मनुष्य को भक्ति के साथ संस्कार, सदाचार और सकारात्मक जीवन की प्रेरणा देती है। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि अपर जनपद न्यायाधीश, जिला गाजियाबाद, माननीय भारत सिंह यादव , श्री मनोज त्यागी, सीईओ संस्कार टीवी, रोहित रिछारिया महाराज जी, , आचार्य सतपाल जी, महाराज आचार्य सगम जी , विमला वाथम पूर्व विधायक नोएडा ने कथा व्यास का माल्यार्पण एवं शॉल ओढ़ाकर अभिनंदन किया। कथा के मुख्य यजमान डॉ. वी.के. गुप्ता एवं श्रीमती रीना गुप्ता रहे। भारत विकास परिषद, नोएडा के अध्यक्ष संजय कुमार गुप्ता ने बताया कि श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए पेयजल, पार्किंग, सुरक्षा एवं स्वच्छता की विशेष व्यवस्था की गई है। कथा के उपरांत प्रतिदिन भंडारा एवं प्रसाद वितरण किया जा रहा है। इस अवसर पर सचिव अखिलेश भदौरिया, कोषाध्यक्ष अक्षय पारीक, महिला सहभागिता संयोजिका सुनीता मित्तल, पूर्व अध्यक्ष एवं संरक्षक डॉ. टी.एन. गोविल, शाखा संरक्षक प्रताप मेहता, सीए महेश बाबू गुप्ता, विपिन मल्हन, केशव गंगल, एन.के. अग्रवाल, रामरतन शर्मा, राकेश कत्याल, वीके सेठ , विकास अग्रवाल डॉ. नरेश शर्मा, मुकुल वाजपेयी सहित परिषद के पदाधिकारी, कार्यकर्ता एवं बड़ी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित रहे।

वोट चोरी के खिलाफ नोएडा कांग्रेस का जोरदार पैदल मार्च,सेक्टर-19 में मनाया गया काला दिवस

दिल्ली में राहुल गांधी एवं प्रियंका गांधी सहित कांग्रेस नेताओं के साथ कथित पुलिस दुर्व्यवहार के विरोध में कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने जताया आक्रोश

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) नोएडा अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के नेतृत्व एवं नेता प्रतिपक्ष श्री राहुल गांधी जी के आह्वान पर देश में लोकतंत्र और संविधान की रक्षा तथा कथित 'वोट चोरी' के खिलाफ चलाए जा रहे आंदोलन के समर्थन में यूपी कॉंग्रेस अध्यक्ष आदरणीय श्रीमती अराधना मिश्रा मोना जी के निर्देशानुसार महानगर कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष श्री मुकेश यादव जी के नेतृत्व में सेक्टर-19 में कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने पैदल मार्च निकाला और दिल्ली में कांग्रेस नेताओं के साथ हुए

कथित पुलिस दुर्व्यवहार के विरोध में इसे काला दिवस के रूप में मनाया,पैदल मार्च में बड़ी संख्या में कांग्रेस नेता, पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता शामिल हुए, कार्यकर्ताओं ने लोकतंत्र बचाओ,संविधान बचाओ और वोट की रक्षा करो जैसे नारों के साथ केंद्र सरकार एवं दिल्ली पुलिस के खिलाफ अपना विरोध दर्ज कराया,महानगर अध्यक्ष मुकेश यादव ने कहा है कि अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के नेतृत्व में इंडिया गठबंधन के सांसद एवं विपक्षी दल लोकतांत्रिक तरीके से दिल्ली में प्रदर्शन कर रहे थे,कांग्रेस का आरोप है कि शांतिपूर्ण प्रदर्शन के दौरान नेता प्रतिपक्ष श्री राहुल गांधी जी,श्रीमती प्रियंका गांधी जी सहित कांग्रेस के वरिष्ठ नेताओं एवं कार्यकर्ताओं के साथ दिल्ली पुलिस द्वारा धक्कामुक्की और बल प्रयोग किया गया,कांग्रेस नेताओं ने इसे लोकतांत्रिक अधिकारों का दमन बताते हुए इसकी कड़ी निंदा की,उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी के कोऑर्डिनेटर सतेन्द्र शर्मा ने कहा कि लोकतंत्र में जनता की आवाज उठाना विपक्ष का संवैधानिक अधिकार है,यदि देश में मतदाता सूची और वोट की पारदर्शिता को लेकर सवाल उठ रहे हैं तो सरकार को विपक्ष की आवाज दबाने के बजाय उन सवालों का जवाब देना चाहिए।उन्होंने कहा कि दिल्ली में शांतिपूर्ण प्रदर्शन कर रहे नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी जी,प्रियंका गांधी जी और कांग्रेस के वरिष्ठ नेताओं के साथ जिस प्रकार का व्यवहार किया गया,वह बेहद दुर्भाग्यपूर्ण और निंदनीय है। कांग्रेस कार्यकर्ता डरने वाले नहीं हैं। लोकतंत्र,संविधान और मतदाता के अधिकारों की रक्षा के लिए कांग्रेस का संघर्ष लगातार जारी रहेगा,नोएडा में काला दिवस के रूप में निकाला गया यह पैदल मार्च केवल विरोध प्रदर्शन नहीं, बल्कि लोकतंत्र की रक्षा का संकल्प है,उन्होंने कहा कि कांग्रेस पार्टी जनता के वोट की ताकत और उसके अधिकारों के साथ किसी भी प्रकार का अन्याय स्वीकार नहीं करेगी,उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी के प्रदेश सचिव पुरुषोत्तम नागर ने कहा कि देश का लोकतंत्र मजबूत तभी रहेगा,जब प्रत्येक नागरिक के वोट का सम्मान और उसकी निष्पक्षता सुनिश्चित होगी। विपक्ष द्वारा उठाए जा रहे सवालों का जवाब लोकतांत्रिक तरीके से दिया जाना चाहिए,न कि पुलिस बल के माध्यम से,उन्होंने कहा कि दिल्ली में कांग्रेस नेताओं के साथ कथित दुर्व्यवहार और धक्कामुक्की ने देशभर के कांग्रेस कार्यकर्ताओं में आक्रोश पैदा किया है,नोएडा का आज का प्रदर्शन उसी आक्रोश की लोकतांत्रिक अभिव्यक्ति है।पुरुषोत्तम नागर ने कहा कि कांग्रेस का प्रत्येक कार्यकर्ता राहुल गांधी जी के नेतृत्व में लोकतंत्र और संविधान की रक्षा के लिए मजबूती से खड़ा है। वोट की चोरी के खिलाफ आवाज बुलंद होती रहेगी और जनता के अधिकारों की लड़ाई सड़क से लेकर सदन तक जारी रहेगी,वरिष्ठ नेता फिरे सिंह नागर ने कमेटी कहा कि उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी की अध्यक्ष आदरणीय अराधना मिश्रा मोना जी के निर्देश पर आज सेक्टर-19 में कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने पैदल मार्च निकालकर दिल्ली में हुए घटनाक्रम के खिलाफ अपना विरोध दर्ज कराया है,उन्होंने कहा कि कांग्रेस हमेशा शांतिपूर्ण और लोकतांत्रिक तरीके से जनता के मुद्दों को उठाती रही है,दिल्ली में कांग्रेस के वरिष्ठ नेताओं के साथ पुलिस द्वारा किया गया कथित दुर्व्यवहार लोकतांत्रिक व्यवस्था के लिए गंभीर चिंता का विषय है। मुकेश यादव ने कहा कि नोएडा कांग्रेस का प्रत्येक कार्यकर्ता राहुल गांधी जी और प्रियंका गांधी जी के नेतृत्व में लोकतंत्र की रक्षा की इस लड़ाई में पूरी मजबूती के साथ खड़ा है। जब तक मतदाता के वोट की पारदर्शिता और उसके अधिकारों को लेकर उठ रहे सवालों का संतोषजनक जवाब नहीं मिलता, तब तक कांग्रेस का संघर्ष जारी रहेगा,उन्होंने कहा कि आज का पैदल मार्च नोएडा की जनता को यह संदेश देने के लिए भी है कि कांग्रेस पार्टी लोकतंत्र, संविधान और आम नागरिक के मताधिकार की रक्षा के लिए सदैव संघर्ष करती रहेगी।कार्यक्रम में महानगर अध्यक्ष मुकेश यादव,वरिष्ठ नेता फिरे सिंह नागर, उत्तर प्रदेश सचिव पुरुषोतम नागर, उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी के कोडिनेटर सतेन्द्र शर्मा, वरिष्ठ नेता चरण सिंह यादव, प्रदेश सदस्य यतेद्र शर्मा, पूर्व अध्यक्ष शहाबुदीन, उपाध्यक्ष ललित अवाना,प्रवक्ता पवन शर्मा, महानगर उपाध्यक्ष विक्रम चौधरी, महासचिव दयाशंकर पांडेय, महासचिव रामकुमार शर्मा, महासचिव विक्रम सेठी,ब्लॉक अध्यक्ष राहुल पांडेय, महिला नेत्री मधुराज, महिला नेत्री डॉ सीमा, यूथ कांग्रेस जिलाध्यक्ष जावेद खान, महिला नेत्री शिवानी पंवार,ज्योति पाल,सुल्तान बिधुड़ी, वरिष्ठ अशोक कुमार पांडेय, मुकेश मिश्रा, गौरव गोगना, दीपक शर्मा, ललित कुमार,बंधु तिरपाधि,मनोज तिवारी,राहुल पांडेय,जगपाल चौहान,दिनेश सिंह,वीरेन्द्र सिंह,ब्लॉक अध्यक्ष वसीम खान,कैप्टन पीएस रावत,सुरेंद्र सिंह रावत, अरुण प्रधान,सतीश पांचाल,अनिल कुमार,संतोष पांडेय,कर्ण कुमार,कांग्रेस नेताओं ने संयुक्त रूप से कहा कि वोट जनता की ताकत है और इस ताकत की रक्षा करना कांग्रेस पार्टी की सर्वोच्च प्राथमिकताओं में से एक है,समस्त कॉंग्रेसजन उपस्थित रहे।

01 नवम्बर को आयोजित होने वाली मेगा/वृह्द विधिक सहायता एवं सेवा शिविर से संबंधित एक बैठक हुइ

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। माननीय राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण, नई दिल्ली व 30 प्र0 राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण, लखनऊ के निर्देशानुसार तथा मा0 जनपद न्यायाधीश/अध्यक्ष जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, सोनभद्र के आदेशानुसार जनपद सोनभद्र में आगामी दिनांक 01-11-2026 को आयोजित होने वाली मेगा/वृह्द विधिक सहायता एवं सेवा शिविर से संबंधित एक बैठक आज दिनांक 07-10-2026 को सचिव महोदय के विश्राम कक्ष में आहूत की गयी। उक्त बैठक में मुख्य रूप से अपर ज़िलाधिकारी, श्री वागेश कुमार शुक्ला, मुख्य चिकित्सा अधिकारी (सीएमओ) डॉ. आर.के. मिश्रा, उप मुख्य चिकित्सा अधिकारी (डिप्टी सीएमओ) डॉ. एस.वे. जायसवाल एवं परियोजना निदेशक (PD DRDA) श्री हेमनाथ देव पांडेय उपस्थित रहे।सचिव महोदय द्वारा बैठक में उपस्थित अधिकारियों को संबोधित करते हुए बताया गया कि दिनांकः 01.11.2026 को जनपद में मेगा/वृहद विधिक सहायता एवं सेवा शिविर का आयोजन किया जाएगा। उपस्थित अधिकारियों को निर्देश दिए गए कि इस शिविर के माध्यम से शासन द्वारा संचालित जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ समाज के अंतिम पंक्ति में खड़े व्यक्ति तक पहुँचाया जाए। उन्होंने विशेष रूप से निर्बल वर्ग, दिव्यांगजन, महिलाएं, बच्चे, असंगठित क्षेत्र के श्रमिक, निर्धन वर्ग तथा अनुसूचित जाति एवं जनजाति के लोगों को योजनाओं से जोड़ने पर जोर दिया जाये। साथ ही सभी विभागों को निर्देशित किया गया कि लघु जागरूकता शिविरों के माध्यम से लाभार्थियों की पहचान कर उनका पंजीकरण सुनिश्चित करें, ताकि उन्हें योजनाओं का वास्तविक लाभ मिल सके। उन्होंने सभी विभागों को आपसी समन्वय के साथ कार्य करने तथा व्यापक जनसंपर्क एवं प्रचार-प्रसार के माध्यम से मेगा शिविर को सफल बनाने के निर्देश दिए। बैठक में मेगा/वृहद विधिक सहायता एवं सेवा शिविर अभियान के कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया गया। साथ ही साथ नालसा द्वारा चलायी जा रही सभी स्कीमों के बारे में भी जानकारी दी गई।

23 गांवों में विकास कार्यों को डीएम ने दी हरी झंडी,19 गांवों में निर्माण कार्य शुरू, शेष 146 गांवों में सर्वे कार्य शीघ्र पूरा करने के निर्देश

प्रधानमंत्री आदर्श ग्राम योजना के तहत सड़क, नाली, खड़ंजा, सोकपिट व आंगनबाड़ी केंद्रों के कार्यों को गति

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। प्रधानमंत्री आदर्श ग्राम योजना के तहत जनपद में चयनित ग्राम पंचायतों में विकास कार्यों को गति देने के लिए जिलाधिकारी श्री चर्चित गौड़ की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट सभागार में बैठक आयोजित की गई। बैठक में योजना के अंतर्गत चयनित ग्राम पंचायतों में कराए जा रहे एवं प्रस्तावित विकास कार्यों की प्रगति की समीक्षा की गई। जनपद में वित्तीय वर्ष 2018-19 से 2025-26 तक कुल 188 ग्राम पंचायतों का प्रधानमंत्री आदर्श ग्राम योजना के तहत चयन किया गया है। इनमें से 19 ग्रामों में सड़क, नाली, खड़ंजा, सोकपिट एवं आंगनबाड़ी केंद्र सहित विभिन्न विकास कार्यों का निर्माण कार्य प्रारंभ हो चुका है। वहीं आज आयोजित बैठक में 23 अन्य ग्रामों में भी प्रधानमंत्री आदर्श ग्राम योजना के तहत विभिन्न विकास कार्य कराए जाने को जिलाधिकारी ने हरी झंडी देते हुए आवश्यक निर्देश दिए। जिलाधिकारी ने संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया कि योजना के तहत कराए जा रहे सड़क, नाली, खड़ंजा, सोकपिट एवं आंगनबाड़ी केंद्रों के निर्माण कार्य पूर्ण गुणवत्ता एवं पारदर्शिता के साथ कराए जाएं। निर्माण कार्यों में निर्धारित मानकों का पूरी तरह पालन सुनिश्चित किया जाए तथा संबंधित विभागीय अधिकारी कार्यों की नियमित स्थलीय मॉनिटरिंग करें। उन्होंने कहा कि 23 ग्रामों में स्वीकृत विकास कार्यों को प्राथमिकता के आधार पर आगे बढ़ाया जाए, जिससे ग्रामीण क्षेत्रों में आवश्यक मूलभूत सुविधाओं का तेजी से विकास हो सके। कार्यों में अनावश्यक विलंब न हो और संबंधित अधिकारी प्रगति की नियमित समीक्षा करते हुए समयबद्ध ढंग से कार्य पूर्ण कराना सुनिश्चित करें। बैठक में जिलाधिकारी ने योजना के तहत चयनित शेष 146 ग्राम पंचायतों में चल रहे सर्वे कार्य की भी समीक्षा की। उन्होंने निर्देशित किया कि इन ग्राम पंचायतों में सर्वे का कार्य शीघ्र पूर्ण किया जाए, ताकि आगामी बैठकों में संबंधित ग्राम पंचायतों के लिए आवश्यक डेवलपमेंट कार्यों की स्वीकृति प्रदान करने की प्रक्रिया आगे बढ़ाई जा सके। जिलाधिकारी ने अधिकारियों को निर्देशित किया कि प्रधानमंत्री आदर्श ग्राम योजना के तहत कराए जा रहे विकास कार्यों का लाभ ग्रामीणों तक प्रभावी ढंग से पहुंचे। सभी संबंधित विभाग आपसी समन्वय के साथ कार्य करते हुए योजनाओं का गुणवत्तापूर्ण एवं पारदर्शी क्रियान्वयन सुनिश्चित करें। बैठक में जिला समाज कल्याण अधिकारी ज्ञानेंद्र सिंह भदौरिया, जिला पंचायत राज अधिकारी नमिता शरण, जिला कार्यक्रम अधिकारी विनीत सिंह सहित जनपद स्तरीय अधिकारीगण उपस्थित रहे।

बभनी से 28 वर्षीय महिला लापता, पुलिस ने जारी किया तलाश पोस्टर

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। बभनी, सोनभद्र। थाना बभनी क्षेत्र के ग्राम जौराही निवासी 28 वर्षीय महिला मंजू देवी 14 जुलाई 2026 से लापता है। परिजनों की तहरीर पर पुलिस ने गुमशुदगी दर्ज कर तलाश शुरू कर दी है। पुलिस ने बताया की नाम- मंजू देवी पुत्री राजपाल खरवार, निवासी ग्राम जौराही, थाना बभनी, जनपद सोनभद्र। उम्र लगभग 28 वर्ष, कद 5 फुट 3 इंच, इकहरा बदन, सांवला रंग। लापता होते समय नीले रंग का सलवार और काले रंग का सूट पहने हुई थी। पुलिस ने आम जनता से अपील की है कि उक्त महिला के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी मिलने पर तत्काल पुलिस अधीक्षक सोनभद्र अथवा क्षेत्राधिकारी दुद्धी - प्रभारी निरीक्षक बभनी के सरकारी नंबरों पर संपर्क करें।जो इस प्रकार है पुलिस अधीक्षक जनपद सोनभद्र,मो - 9454400304, प्रभारी निरीक्षक वभनी मो-9454404273एव सम्पर्क सुत्र, 8630877216.

सोनभद्र में 10 से 25 अक्टूबर तक होगा निःशुल्क खाद्यान्न वितरण

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। जिला पूर्ति अधिकारी ध्रुव गुप्ता ने अवगत कराया है कि राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम-2013 के अंतर्गत माह अक्टूबर 2026 के लिए आवंटित खाद्यान्न का निःशुल्क वितरण जनपद में निर्धारित किया गया है। जनपद के समस्त अन्त्योदय एवं पात्र गृहस्थी राशन कार्डधारकों को माह अक्टूबर 2026 में गेहूँ एवं चावल का निःशुल्क वितरण 10 अक्टूबर 2026 से 25 अक्टूबर 2026 तक किया जाएगा। अन्त्योदय राशन कार्डधारकों को प्रति अन्त्योदय कार्ड 35 किलोग्राम खाद्यान्न, जिसमें 10 किलोग्राम गेहूँ एवं 25 किलोग्राम चावल शामिल है, पूर्णतः निःशुल्क वितरित किया जाएगा। इसी प्रकार पात्र गृहस्थी राशन कार्डधारकों को प्रति यूनिट 05 किलोग्राम खाद्यान्न, जिसमें 01 किलोग्राम गेहूँ एवं 04 किलोग्राम चावल शामिल है, पूर्णतः निःशुल्क उपलब्ध कराया जाएगा। ऐसे कार्डधारक जिनका अंगूठा किसी कारणवश बायोमेट्रिक मशीन पर रीड नहीं हो पा रहा है, उनके लिए मोबाइल ओटीपी (ओटीपी) वेरिफिकेशन के माध्यम से खाद्यान्न प्राप्त करने की सुविधा उपलब्ध रहेगी। यह सुविधा खाद्यान्न वितरण की अंतिम तिथि 25 अक्टूबर 2026 को उपलब्ध रहेगी। ऐसे सभी लाभार्थी 25 अक्टूबर 2026 को ओटीपी सुविधा का लाभ लेते हुए अपना निर्धारित खाद्यान्न प्राप्त कर सकते हैं। उन्होंने बताया कि वर्तमान में राशन कार्ड में सम्मिलित सभी यूनिटों/सदस्यों की ई-केवाईसी (ई-केवाईसी) कराने की प्रक्रिया चल रही है।

दहेज हत्याः पति समेत तीन दोषियों को उम्रकैद-प्रत्येक पर 15 हजार रूपये अर्थदंड, न देने पर तीन-तीन माह की अतिरिक्त कैद भुगतनी होगी

सरकारी वकील सत्यप्रकाश त्रिपाठी।

जेल में बिताई अवधि सजा में समाहित होगी,करीब 8 वर्ष पूर्व दहेज में 50 हजार रुपये की मांग पूरी नहीं होने पर आसमा को जलाकर मारने का है आरोप

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। करीब 8 वर्ष पूर्व दहेज में 50 हजार रुपये की मांग पूरी न होने पर आसमा को जलाकर मारने के मामले में अपर सत्र न्यायाधीश एफटीसी/सीएडब्लू , सोनभद्र बिपिन कुमार तृतीय की अदालत ने बुधवार को सुनवाई करते हुए दोषसिद्ध पाकर पति समेत तीन दोषियों को उम्रकैद की सजा सुनाई। इनके ऊपर 15-15 हजार रूपये अर्थदंड भी लगाया है। अर्थदंड अदा न करने पर 3-3 माह की अतिरिक्त कैद भुगतनी होगी। जेल में बिताई अवधि सजा में समाहित होगी। अभियोजन पक्ष के मुताबिक मिर्जापुर जिला अंतर्गत मड़िहान थाना क्षेत्र के गोपलपुर गांव निवासी छोटक पुत्र हैदर अली ने 4 नवंबर 2018 को करमा थानाध्यक्ष को दी तहरीर में अवगत कराया था कि उसने करीब तीन वर्ष पूर्व अपनी बेटी आसमा की शादी सोनभद्र जिला अंतर्गत करमा थाना क्षेत्र के पगिया गांव निवासी अफरोज पुत्र मन्नान खां के साथ किया था। दहेज में 50 हजार रुपये की मांग पूरी न होने पर 3 नवंबर 2018 की रात में बेटी आसमा को दामाद अफरोज, सास साफिया व दामाद का जीजा नसीम जो ससुराल में ही रहता था ने मिलकर जलाकर मार डाला। बेटी की लाश जिला अस्पताल में पड़ी है। आवश्यक कार्रवाई करें। इस तहरीर पर करमा पुलिस ने दहेज हत्या समेत विभिन्न धाराओं में एफआईआर दर्ज कर मामले की विवेचना शुरू कर दिया। विवेचना के दौरान पर्याप्त सबूत मिलने पर विवेचक ने कोर्ट में चार्जशीट दाखिल किया था। मामले की सुनवाई करते हुए अदालत ने दोनों पक्षों के अधिवक्ताओं के तर्कों को सुनने, 9 गवाहों के बयान एवं पत्रावली का अवलोकन करने पर दोषसिद्ध पाकर पति अफरोज, सास साफिया व जीजा नसीम को उम्रकैद की सजा सुनाई। इनके ऊपर 15-15 हजार रूपये अर्थदंड भी लगाया है।

अर्थदंड न देने पर 3-3 माह की अतिरिक्त कैद भुगतनी होगी। जेल में बिताई अवधि सजा में समाहित होगी।

अभियोजन पक्ष की ओर से सरकारी वकील सत्यप्रकाश त्रिपाठी ने बहस की।

अधिवक्ता कल्याण न्यास का प्रमाण पत्र देकर की गई उज्जवल भविष्य की कामना

सोनभद्र बार एसोसिएशन भवन स्थित महामंत्री कक्ष में सचिव योगेश कुमार द्विवेदी ने अधिवक्ता द्वय को दिया प्रमाण पत्र

वरिष्ठ अधिवक्ता राजेश कुमार पाठक एवं विकास शुक्ला।

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। रॉबर्ट्सगंज कचहरी परिसर स्थित सोनभद्र बार एसोसिएशन भवन के महामंत्री कक्ष में अधिवक्ता कल्याण न्यास, सोनभद्र बार एसोसिएशन सोनभद्र के सचिव योगेश कुमार द्विवेदी एडवोकेट ने वृहस्पतिवार को वरिष्ठ अधिवक्ता राजेश कुमार पाठक एवं विकास शुक्ला को अधिवक्ता कल्याण न्यास का प्रमाण पत्र देकर उज्जवल भविष्य की कामना की है। बता दें कि अधिवक्ताओं के हित को देखते हुए अधिवक्ता कल्याण न्यास, सोनभद्र बार एसोसिएशन, सोनभद्र का पंजीयन 03 जून 2025 को कराया गया है, जिसका पंजीयन सं0- 49/2025 है। अधिवक्ता कल्याण न्यास सोनभद्र बार एसोसिएशन, सोनभद्र के जो भी सम्मानित सदस्य हैं उन्हें यह प्रमाण पत्र दिया जा रहा है। वरिष्ठ अधिवक्ता राजेश कुमार पाठक एवं विकास शुक्ला को यह प्रमाण पत्र अधिवक्ता कल्याण न्यास सोनभद्र बार एसोसिएशन, सोनभद्र के अध्यक्ष अशोक प्रसाद श्रीवास्तव एडवोकेट, अध्यक्ष उपसमिति गोविंद प्रसाद मिश्र एडवोकेट व सचिव योगेश कुमार द्विवेदी एडवोकेट के संयुक्त हस्ताक्षर से जारी किया गया है।प्रमाण पत्र में अधिवक्ताओं के उज्ज्वल भविष्य की कामना की गई है।इस मौके पर अखिलेश कुमार मिश्र एडवोकेट, संजीव कुमार पांडेय एडवोकेट, संजय कुमार पांडेय एडवोकेट आदि अधिवक्ता मौजूद रहे। सभी लोगों ने अधिवक्ता द्वय के उज्ज्वल भविष्य की कामना की है।

NAINI INDUSTRIAL TRAINING CENTRE
(Govt. Affiliated, Star Graded, Record Holder, ISO Certified Training Centre)
सर्टिफिकेट इन फायर सेफ्टी एण्ड इण्डस्ट्रीयल सिक्योरिटी

फायर सेफ्टी पर जिसकी कमाण्ड, उसकी ही है ग्लोबल डिमाण्ड
कोर्स के बाद सेफ्टी सुपरवाइजर, फायर प्रोटेक्शन, सिक्योरिटी एडमिनिस्ट्रेटर आदि विभिन्न पदों पर नियुक्ति मिल जाती है। रिलीफ एजेन्सी N.G.O., डिफेन्स सर्विसेज फायर सर्विस आर्डिनेन्स फैक्ट्री, महानगर पालिका, नगर निगम, एयरपोर्ट, पावर प्लांट, स्टील प्लान्ट, माइनिंग इन्डस्ट्रीज, पेट्रोलियम कम्पनी, फूड इण्डस्ट्रीज, रिफाइनरीज, टेक्सटाइल मिल, टावर कम्पनी, इलेक्ट्रानिक कम्पनी, कोयले की खदानों एवं जहाजों आदि क्षेत्रों में फायर सेफ्टी के जानकारों को बहुत अधिक मौका मिलता है

श्री महन्तू
अग्निशमन सुरक्षा अधिकारी नैनी, प्रयागराज

नोटः फायर सेफ्टी कोर्स करें और देश -विदेश, सरकारी और प्राइवेट क्षेत्रों में अच्छे पैकेज के साथ नौकरी पायें।

Visit us at www.nainiiti.com Call: 9415608710, 7459860480

Enjoy Publicity

स्पोर्ट्स

भारत से एशियाड का फाइनल हारने पर बोला पाक बैटर,हसन नवाज ने कहा- हार का दर्द अब भी है- हमने छोटी गलतियों की कीमत चुकाइ

स्पोर्ट डेस्क। पाकिस्तानी बैटर हसन नवाज ने कहा कि

भारत के खिलाफ एशियन गेम्स फाइनल हारने का दर्द अब भी उन्हें परेशान करता है। उन्होंने कहा कि छोटी-छोटी गलतियों की वजह से पाकिस्तान को हार मिली। भारत ने पिछले हफ्ते जापान में पुरुष क्रिकेट टूर्नामेंट के फाइनल में पाकिस्तान को 19 रन से हराकर गोल्ड जीता था। इस मैच में नवाज ने 96 रन बनाए थे। नवाज ने बुधवार को रावलपिंडी में मीडिया से बातचीत में कहा कि वे अपनी पारी से संतुष्ट हैं। वे अपने प्लांस के हिसाब से बैटिंग कर रहे थे। हसन नवाज ने कहा, 'मुझे लगता है कि फाइनल अब खत्म हो चुका है और क्रिकेट तथा मैच आगे भी जारी रहेंगे। हमसे भी गलतियां होती रहेंगी। लेकिन, उन्हें हराने के लिए हमें अपनी गलतियों से सीखना होगा और बेहतर बनना होगा।' जमीनी स्तर के क्रिकेट से खेल पर काम किया:-2024 में न्यूजीलैंड के खिलाफ ऊ20द्द शतक लगाकर इंटरनेशनल क्रिकेट में आने वाले नवाज ने अपने खेल पर काम करने का तरीका भी बताया। उन्होंने कहा कि उन्होंने जमीनी स्तर का क्रिकेट खेलकर अपने खेल को बेहतर कर रहे हैं। नवाज ने कहा, 'इन मैचों में मिलने वाले गेंदबाज और पिच आपको मुश्किल हालात में बेहतर खिलाड़ी बनने में मदद करते हैं।इंटरनेशनल क्रिकेट में आपको बेहतर हालात में बैटिंग करने का मौका मिलता है, तो इससे आपका कॉन्फिडेंस बढ़ता है।' श्रीलंका और इंग्लैंड सीरीज पर नजर- नवाज ने कहा कि वे बहुत आगे के बारे में नहीं सोचते। अब उनका ध्यान घरेलू व्हाइट-बॉल सीरीज में श्रीलंका और इंग्लैंड के खिलाफ अपनी अच्छी फॉर्म जारी रखने पर है। उन्होंने कहा, 'आपके पास एक योजना होती है और आपको उसी पर कायम रहना होता है। उतार-चढ़ाव हमेशा आते रहते हैं।'

मैं हर वक्त ओवरथिंकिंग करता हूं,चाहकर भी ब्रेन को कंट्रोल नहीं कर पाता,क्या करूं

नयी दिल्ली। ओवरथिंकिंग एक ऐसा मेंटल प्रोसेस है, जिसमें व्यक्ति छोटी-छोटी घटनाओं के बारे में भी जरूरत से ज्यादा सोचता

है और उसे बहुत बड़ा बना देता है। यह आदत धीरे-धीरे एंग्जाइटी और इनसिक्योरिटी को बढ़ाती है। इससे सेल्फ डाउट पैदा होता है। व्यक्ति फैक्ट और उस फैक्ट के अपने इंटरप्रिटेशन में फर्क नहीं कर पाता। इसका असर इमोशंस और व्यवहार, दोनों पर पड़ता है। विषय को समझेंगे एक्सपर्ट- डॉ. द्रोण शर्मा, कंसल्टेंट साइकेट्रिस्ट, आयरलैंड, यूके। यूके, आयरिश और जिब्राल्टर मेडिकल काउंसिल के मेंबर जी के साथ सवाल जवाब के माध्यम से। सवाल- मैं 28 साल का हूं और पेशे से इंजीनियर हूं। मैं हर चीज के बारे में बहुत ज्यादा सोचता हूं। मेरे मन में हमेशा बुरे ख्याल ही आते हैं। जैसे अगर पापा ने फोन पर कहा कि वो मेरे पास नहीं आ रहे हैं तो मैं घंटों ये सोचता रहूंगा कि क्या मेरी कोई बात उन्हें बुरी लग गई। क्या मुझसे कोई गलती हुई है, क्या मैंने पिछली बार कुछ कह दिया था। और ये हमेशा हरेक चीज के बारे में होता है। अगर लैंडलॉर्ड अंकल भी स्माइल का जवाब न दें तो मेरे मन में अजीब-अजीब से बुरे ख्याल आने लगते हैं कि ये मुझसे नाराज हैं। अब ये मुझे घर से निकाल देंगे। क्या ये सिर्फ ओवरथिंकिंग है या कुछ और। मैं इस प्रॉब्लम से कैसे बाहर निकलूं? जवाब-केस का मनोवैज्ञानिक आकलन-1. मूल समस्या क्या है- इस केस में मुख्य समस्या घटना नहीं, बल्कि उसकी नकारात्मक व्याख्या है। जैसेकि- व्यक्ति छोटी-छोटी सोशल या इंटरपर्सनल घटनाओं का बहुत बड़ा अर्थ निकालता है। वह अस्पष्ट स्थितियों को नकारात्मक तरीके से समझता है। जरा सी बात को तुंरत अपनी गलती, अपनी कमी या अपना रिजेक्शन मान लेता है। उसका दिमाग एक ही विचार पर घंटों अटका रहता है। वह भविष्य को लेकर सबसे बुरी संभावना के बारे में सोचता है। 2. सोचने का तरीका (कॉग्निटिव पैटर्न) यहां सोच का एक खास तरह का पैटर्न दिखता है-माइंड रीडिंग (दूसरों के मन को पढ़ लेना) बिना किसी सबूत के मान लेना कि सामने वाला क्या सोच रहा है। पर्सनलाइजेशन (हर चीज खुद से जोड़ लेना) कुछ भी बुरा हो तो ये मान लेना कि ऐसा मेरी वजह से हुआ है।कैटेस्ट्रोफाइजिंग (सबसे बुरा सोच लेना) छोटी घटना से सीधे बड़े नतीजे पर पहुंच जाना। अब इस बात को अपने ही दिए उदाहरण से समझें। केस 1: पापा का न आना-फैक्ट: पापा मिलने नहीं आ रहे हैं। इंटरप्रिटेशन:- 'क्या मैंने कुछ गलत कहा?' 'क्या वो मुझसे नाराज हैं?' 'क्या मुझसे कोई गलती हो गई?' यहां दिक्कत ये है कि दिमाग 'फैक्ट' से सीधे 'सेल्फ ब्लेम' पर चला जाता है। केस 2: मकान मालिक ने स्माइल का जवाब नहीं दिया। फैक्ट: उन्होंने स्माइल के जवाब में स्माइल नहीं दी। इंटरप्रिटेशन:-'वो मुझसे नाराज हैं।' 'अब वो मुझे घर से

निकाल देंगे।' यहां एक न्यूट्रल घटना को भी खतरे की तरह देखा जा रहा है। 3. इसलिए बढ़ रही ओवरथिंकिंग-इवेंट- घटना समस्या नहीं है। इंटरप्रिटेशन- उसकी व्याख्या समस्या है। दिमाग अनिश्चितता को सहन नहीं कर पाता। इसलिए जल्दी से एक नेगेटिव कहानी बना देता है। यह कहानी बार-बार दोहराई जाती है, जिससे ओवरथिंकिंग बढ़ती है। ओवरथिंकिंग के संकेत-तिल का ताड़ और राई का पहाड़ बनाने से लेकर हमेशा बुरी और नेगेटिव संभावनाओं के बारे सोचना ओवरथिंकिंग का संकेत हो सकता है। करें सेल्फ एसेसमेंट-यहां मैं आपको एक सेल्फ एसेसमेंट टेस्ट दे रहा हूं। नीचे ग्राफिक्स में 7 सेक्शंस में कुल 21 सवाल हैं। आपको इन सवालों को ध्यान से पढ़ना है और 0 से 3 के स्केल पर इसे रेट करना है। जैसेकि पहले सवाल के लिए आपका जवाब अगर 'कभी नहीं' है तो 0 नंबर दें और अगर आपका जवाब 'लगभग हमेशा' है तो 3 नंबर दें। अंत में अपने टोटल स्कोर की एनालिसिस करें। नंबर के हिसाब से उसका इंटरप्रिटेशन भी ग्राफिक में दिया है। अगर आपका टोटल स्कोर 0 से 12 के बीच है तो आप में ओवरथिंकिंग का मामूली पैटर्न है। लेकिन अगर आपका स्कोर 37 से 54 के बीच है तो आप में ओवरथिंकिंग का स्ट्रॉन्ग पैटर्न है। ऐसे में स्ट्रक्चर्ड थेरेपी मददगार हो सकती है। ओवरथिंकिंग से बाहर निकलने का रास्ता-ओवरथिंकिंग का लक्ष्य 'सोचना बंद करना' नहीं है। इसका लक्ष्य है, सोचने के तरीके को बदलना ताकि व्यक्ति अपने विचारों को पहचान सके, उन्हें जांच सके और एक संतुलित सोच विकसित कर सके। ट्रीटमेंट का मकसद-ऑटोमैटिक आने वाले विचारों को समझना। तथ्य (फैक्ट) और व्याख्या (इंटरप्रिटेशन) में फर्क करना। वैकल्पिक और संतुलित सोच विकसित करना।सबसे बुरा सोचने की आदत को ब्रेक करना। कॉग्निटिव बिहेवियर थेरेपी (सीबीटी) के प्रमुख स्टेप्स-1. ट्रिगर पहचानना- हर बार जब ओवरथिंकिंग शुरू हो तो खुद से तीन सवाल पूछें: क्या हुआ? मैंने उसका क्या मतलब निकाला? मुझे कैसा महसूस हुआ? इससे दिमाग 'ऑटो-पायलट' मोड से बाहर आता है।2. ऑटोमैटिक थॉट पकड़ना- हवाई चिंता नहीं करनी, बल्कि एकदम ठोस वाक्य लिखना है। जब मन कहे कि लोग तुमसे नाराज हैं तो कागज पर फैक्ट लिखें कि मैंने क्या गलत किया है। 3. अपनी सोच को लेबल देना-हर विचार के साथ उसकी गलती पहचानें। जैसे- मैं दूसरे का दिमाग पढ़ रहा था। सच मुझे नहीं पता। मैं इसे जबरन खुद से जोड़कर देख रहा था। इस घटना का मुझसे कोई संबंध नहीं है। 4. सबूत की जांच करना-मन में जो भी विचार आए, उसके लिए एक एविडेंस शीट बनाएं और लिखें- इस विचार के पक्ष में एविडेंस- इस विचार के विरोध में एविडेंस 5. संतुलित विचार बनाना- विचार को नेगेटिव से पॉजिटिव पर नहीं ले जाना है। उसे रियलिस्टिक ही रहने देना है। जैसेकि- 'सिर्फ किसी के न आने से ये साबित नहीं होता कि वह मुझसे नाराज है।' 6. संभावना को दोबारा आंकना- नतीजा निकालने से पहले खुद से पूछें: 'ये बात सच होने की संभावना कितनी है?' इससे डर का आंकलन करने और उसे कम करने में मदद मिलती है। 7. प्रैक्टिकल प्रयोग करना-किसी घटना पर तुरंत निष्कर्ष न निकालें। 24 घंटे का नियम अपनाएं। 24 घंटे बाद ही नतीजे पर पहुंचें। 8. क्लैरिफिकेशन टेस्ट- जब किसी की बात, रिएक्शन या बिहेवियर से कोई कनफ्यूजन हो तो सीधे निष्कर्ष न निकालें। विनम्रता से पूछ लें। 9. एविडेंस लॉग-7 दिनों तक एक एविडेंस लॉग बनाएं और उसमें रोज नोट करें- मैंने क्या सोचा। असल में क्या हुआ। 10. रूमिनेशन पर कंट्रोल-एक ही थिंकिंग लूप में न फंसें।सोचने के लिए 10 मिनट फिक्स करें। उसके बाद अपना ध्यान किसी दूसरे काम में लगाएं।जब ब्रेन अपने प्रयासों से कंट्रोल न हो पाए और ओवरथिंकिंग का पैटर्न डिप्रेशन में बदलने लगे तो प्रोफेशनल हेल्प जरूरी है। नीचे ग्राफिक में सारे कारण देखें और इन स्थितियों में प्रोफेशनल मदद जरूर लें। जैसाकि हमने ऊपर समझा कि आपकी मुख्य समस्या है- अस्पष्ट स्थितियों को नकारात्मक अर्थ देना और उसके लिए खुद को दोषी मानना। कॉग्निटिव बिहेवियर थेरेपी का मूल मंत्र ही यही है कि हर विचार सच नहीं होता। वह आपका इंटरप्रिटेशन हो सकता है, लेकिन जरूरी नहीं कि वो फैक्ट हो। यह समझ ही ओवरथिंकिंग के चक्र को तोड़ने की कुंजी है।

कीवी के 12 हेल्थ बेनिफिट्स,पाचन बेहतर बनाए, ब्लड शुगर कंट्रोल रखे, डॉक्टर से जानें किन्हें सावधानी बरतनी चाहिए

नयी दिल्ली। कीवी को दुनिया के सबसे पौष्टिक फलों में से एक माना जाता है। कुछ लोग इसे न्यूजीलैंड का फल समझते हैं, क्योंकि इसका नाम

वहां के राष्ट्रीय पक्षी 'कीवी' के नाम पर है। हालांकि, इस फल की असली जन्मभूमि चीन है, जहां इसे कभी 'चाइनीज गूसबेरी' कहा जाता था। 20वीं सदी की शुरुआत में इसके बीज चीन से न्यूजीलैंड पहुंचे और बाद में वैश्विक बाजार में पहचान बनाने के लिए इसका नाम बदलकर 'कीवी फ्रूट' कर दिया गया। आकार में अंडे जितना छोटा-सा यह फल पोषण के मामले में काफी समृद्ध होता है। कीवी में विटामिन-सी, फाइबर, पोटेशियम और कई एंटीऑक्सिडेंट्स होते हैं। साल 2022 में 'नेशनल लाइब्रेरी ऑफ मेडिसिन' में पब्लिश एक स्टडी के मुताबिक, डेली 2 कीवी खाने से कब्ज से परेशान लोगों में बॉउल मूवमेंट बेहतर होता है। वहीं कुछ स्टडीज में कीवी को बेहतर हार्ट हेल्थ और ब्लड प्रेशर मैनेजमेंट से भी जोड़ा गया है। इसलिए आज कीवी के हेल्थ बेनिफिट्स पर बात करेंगे। साथ ही जानेंगे कि-इसमें कौन-से पोषक तत्व होते हैं? एक दिन में कितनी कीवी खानी चाहिए? विषय को समझेंगे एक्सपर्ट- अमृता मिश्रा, सीनियर डाइटीशियन, दिल्ली जी के साथ सवाल जवाब के माध्यम से। सवाल- कीवी को 'सुपरफूड' क्यों कहते हैं? जवाब- छोटा होने के बावजूद कीवी पोषण और हेल्थ के लिहाज से काफी फायदेमंद है। पिछले कुछ सालों में पाचन, कब्ज, ब्लड प्रेशर और हार्ट हेल्थ पर इसके प्रभाव को लेकर कई स्टडीज हुई हैं। इनमें पॉजिटिव रिजल्ट देखने को मिले हैं। यही वजह है कि दुनिया के कई देश इसे 'सुपरफूड' मानते हैं-कीवी की खासियत सिर्फ इसमें मौजूद विटामिन सी नहीं है। इसमें फाइबर और एंटीऑक्सिडेंट्स भी भरपूर मात्रा में होते हैं। फाइबर डाइजेशन को दुरुस्त रखता है।और एंटीऑक्सिडेंट्स सेल्स डैमेज रोककर ओवरऑल हेल्थ को सपोर्ट करते हैं। सवाल- कीवी में कौन-से पोषक तत्व होते हैं? जवाब- कीवी 'पोषक तत्वों का पावरहाउस' है। इसमें कई जरूरी विटामिन, मिनरल्स और एंटीऑक्सिडेंट्स होते हैं, जैसेकि- विटामिन-सी, विटामिन-के, विटामिन-ई, फोलेट (विटामिन बी9) पोटेशियम कॉपर फाइबर एक्टिनिडिन एंजाइम पॉलीफेनॉल्स कैरोटेनॉयड्स। सवाल- 100 ग्राम कीवी की न्यूट्रिशनल वैल्यू क्या है? जवाब- किसी भी फल की पौष्टिकता का आकलन उसकी न्यूट्रिशनल वैल्यू से किया जाता है। इससे पता चलता है कि एक निश्चित मात्रा में उस फल से शरीर को कितनी ऊर्जा और कितने जरूरी पोषक तत्व मिलते हैं। 100 ग्राम कीवी में लगभग इतने पोषक तत्व होते हैं- कैलोरी 64, कार्बोहाइड्रेट 14ग्रा., फैट 0.44ग्रा., पोटेशियम 4फीसदी ऑफ डिवी, विटामिन के 34फीसदी ऑफ डिवी, विटामिन ई 9फीसदी ऑफ डिवी, विटामिन सी 83फीसदी ऑफ डिवी इत्यादि। कीवी के हेल्थ बेनिफिट्स:- इम्यूनिटी मजबूत करती है। कब्ज से राहत दिलाती है। पाचन सुधारती है। गट हेल्थ बेहतर करती है। ब्लड प्रेशर कंट्रोल करती है। हार्ट हेल्दी रखने में मदद रखती है। सेल्स डैमेज से बचाती है। स्किन हेल्दी रखती है। ब्लड शुगर कंट्रोल करती है। आंखों को प्रोटेक्ट करती है। कोलेजन बनाने में मदद करती है। वेट कंट्रोल करती है। सवाल- कीवी कोलेस्ट्रॉल कम करने में कैसे मदद करती है? जवाब- इसे पॉइंटर्स से समझिए- कीवी में मौजूद 'सॉल्यूबल फाइबर' डाइजेस्टिव सिस्टम में एक जेल जैसी लेयर बनाता है।यह आंतों में कोलेस्ट्रॉल और बाइल एसिड के अवशोषण को कम करने में मदद करता है। इसके कारण शरीर को नए बाइल एसिड बनाने के लिए ब्लड में मौजूद कोलेस्ट्रॉल का इस्तेमाल करना पड़ता है। इससे एलडीएल यानी 'बैड कोलेस्ट्रॉल' का लेवल कम हो सकता है। कीवी में मौजूद एंटीऑक्सिडेंट्स एलडीएल के ऑक्सीडेशन को रोकने में मदद करते हैं। ऑक्सीडेशन आर्ट्रीज में प्लाक बनने की प्रक्रिया को बढ़ाता है। यही वजह है कि कीवी को हार्ट के लिए फायदेमंद माना जाता है। सवाल- कीवी डाइजेशन को कैसे इम्प्रूव करती है? जवाब- कीवी पाचन को बेहतर बनाने में दो तरह से मदद कर सकती है। पहला, इसमें फाइबर अच्छी मात्रा में होता है। यह स्टूल का बल्क बढ़ाकर उसे आंतों से आसानी से बाहर निकालने में मदद करता है। इससे कब्ज की समस्या कम होती है। दूसरा, कीवी में एक्टिनिडिन नाम का एक नेचुरल एंजाइम होता है। यह प्रोटीन को छोटे हिस्सों में तोड़ने में मदद करता है। इससे शरीर के लिए भोजन पचाना आसान होता है। सवाल- क्या डायबिटिक लोग कीवी खा सकते हैं? जवाब- हां, कीवी का ग्लाइसेमिक इंडेक्स (जीआई) अपेक्षाकृत कम होता है। यानी यह ब्लड शुगर को बहुत तेजी से नहीं बढ़ाती। इसमें फाइबर भी होता है, जो कार्बोहाइड्रेट के पाचन और अवशोषण की गति को धीमा करने में मदद करता है। सवाल- प्रेग्नेंसी में कीवी खाने के क्या फायदे हैं? जवाब- इसे पॉइंटर्स से समझिए- कीवी में फोलेट (विटामिन बी9) होता है, जो प्रेग्नेंसी के शुरुआती फेज में भ्रूण के ब्रेन और स्पाइनल कॉर्ड के ग्रोथ के लिए जरूरी होता है। प्रेग्नेंसी के दौरान कब्ज एक कॉमन प्रॉब्लम है। कीवी में मौजूद फाइबर रेगुलर बॉउल मूवमेंट बनाए रखने में मदद करता है। इसमें विटामिन-सी होता है, जो शरीर में आयरन के अवशोषण को बेहतर बनाने में मदद करता है। इससे प्रेग्नेंसी के दौरान बढ़ी हुई आयरन की जरूरत को पूरा करने में मदद मिलती है। सवाल- क्या कीवी सचमुच प्लेटलेट्स की संख्या बढ़ाती है? जवाब- इस बात के पर्याप्त वैज्ञानिक प्रमाण नहीं हैं कि कीवी सीधे प्लेटलेट्स की संख्या बढ़ाती है। हालांकि, कीवी में विटामिन-सी, फोलेट और अन्य पोषक तत्व होते हैं, जो शरीर के ओवरऑल हेल्थ और रिकवरी को सपोर्ट करते हैं। सवाल- किन लोगों को कीवी खाते हुए सावधान रहना चाहिए? जवाब- कीवी ज्यादातर लोगों के लिए सेफ और पौष्टिक फल है। हालांकि, कुछ लोगों को इसे डॉक्टर की सलाह के बाद ही खाना चाहिए। कीवी खाते हुए ये लोग बरतें सावधानी:- जिन्हें किडनी डिजीज है। जिन्हें डाइजेस्टिव इश्यू है। जो एलर्जिक हैं। जिनका पाचन सेंसिटिव है। जो ब्लड थिनर्स लेते हैं। सवाल- एक दिन में कितनी कीवी खा सकते हैं? जवाब- सीनियर डाइटीशियन अमृता मिश्रा के मुताबिक, रोज 2 कीवी खाना ज्यादातर लोगों के लिए सेफ है। कई रिसर्च में पाया गया है कि 4-8 सप्ताह तक प्रतिदिन 2-3 कीवी खाने से ओवरऑल हेल्थ पर पॉजिटिव असर पड़ता है। सवाल- कीवी खाने का सही समय क्या है? जवाब- इसे खाने का कोई एक 'बेस्ट टाइम' नहीं है। सुबह खाने पर इसमें मौजूद विटामिन-सी शरीर को ऊर्जा देने और थकान कम महसूस कराने में मदद करता है। यह हल्का और सुपाच्य होता है। खाली पेट खाने पर इसमें मौजूद पोषक तत्व शरीर में आसानी से अब्जॉर्ब होते हैं। प्रोटीन रिच फूड के साथ खाने पर कीवी में मौजूद एक्टिनिडिन एंजाइम प्रोटीन के डाइजेशन में मदद करता है। सोने से करीब एक घंटा पहले खाने से स्लीप क्वालिटी बेहतर होती है। सवाल- कीवी को छीलकर खाना चाहिए या छिल्के समेत? जवाब- कीवी के छिलके में भी फाइबर और कुछ एंटीऑक्सिडेंट्स होते हैं। इसलिए छिल्के समेत खाने पर फाइबर की मात्रा थोड़ी बढ़ जाती है।सवाल- ज्यादा कीवी खाने के नुकसान क्या हैं? जवाब- किसी भी चीज की तरह इसे भी ज्यादा खाना नुकसानदायक हो सकता है। जरूरत से ज्यादा कीवी खाने पर कुछ लोगों में ये समस्याएं हो सकती हैं- ज्यादा कीवी खाने के नुकसान:- एलर्जिक रिएक्शन, पेट दर्द, मुंह में जलन, होंठ या गले में खुजली, गैस और ब्लोटिंग, मतली, पेट में असहजता, दस्त। कीवी का खट्टा-मीठा स्वाद और इसकी शानदार न्यूट्रिशन प्रोफाइल इसे खास बनाती है। इसे रेगुलर और संतुलित मात्रा में खाने पर शरीर इसके लिए आपको शुक्रिया अदा करेगा।

ग्रॉसरी शॉपिंग से सर्जरी तक कन्फ्यूजन का सबसे बेहतर हल है 'चेकलिस्ट'

जब आप अगला पैराग्राफ पढ़ना शुरू करेंगे तो यकीन मानिए उसे दोबारा पढ़ेंगे, क्योंकि वह काफी कन्फ्यूजिंग है। और

अगर आप पूरा लेख पढ़ेंगे तो समझ जाएंगे कि जिंदगी में गलतियां क्यों होती हैं। अधिकतर गलतियां इसलिए नहीं होतीं कि हमें जानकारी नहीं होती, बल्कि हम अपनी जानकारी को सही से लागू नहीं कर पाते। तो फिर हल क्या है? एक चेकलिस्ट बनाइए। अब आप कन्फ्यूजन के लिए तैयार हो जाइए, और आगे इसे दूर करने का तरीका भी है।पिछले महीने एक-दूसरे से अनजान राधिका देवी और राधिका सिंह को एक ही समय पर वाराणसी के बनारस हिंदू यूनिवर्सिटी (बीएचयू) के ट्रॉमा सेंटर में अलग-अलग भर्ती किया गया। राधिका देवी 71 साल की और राधिका सिंह 82 वर्ष की थीं। राधिका देवी न्यूरो डिपार्टमेंट में बेड नंबर 29 पर थीं। राधिका सिंह ऑर्थोपेडिक डिपार्टमेंट में बेड नंबर 17 पर थीं। राधिका देवी की स्पाइनल ट्यूमर सर्जरी, जबकि राधिका सिंह का हिप रिप्लेसमेंट होना था। दोनों की सर्जरी का समय एक ही था। रिपोर्ट्स के मुताबिक, 7 मार्च को सिंह की जगह देवी को ऑपरेशन थिएटर में ले जाया गया। एनेस्थीसिया देने के बाद सर्जिकल टीम ने देवी का ऑपरेशन शुरू कर दिया। जब सीनियर रेजिडेंट को ऑपरेशन की जगह पर अपेक्षित स्थिति नहीं दिखी तो टीम ने सीनियर डॉक्टर को अलर्ट किया। इसी बीच, नर्सिंग स्टाफ ने बताया कि थिएटर में गलत मरीज आ गया है। पूरी प्रक्रिया रोकी गई और परिवार को बिना कुछ बताए ही देवी को वापस भेज दिया गया। बाद में 18 मार्च को उनकी स्पाइनल ट्यूमर सर्जरी हुई और कुछ जटिलताएं होने के कारण 28 मार्च को उनकी मृत्यु हो गई। यह चूक तब सामने आई, जब उनके पोते मृत्युंजय पाल ने बीएचयू में इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज के डायरेक्टर से शिकायत की।चूंकि हम में से ज्यादातर लोग मेडिकल प्रोफेशनल नहीं हैं, तो आइए आपको ग्रॉसरी स्टोर ले चलता हूं। सोचिए कि आपके परिवार ने शनिवार को दादाजी का 90वां बर्थडे मनाने का फैसला किया। आपकी पत्नी केक बनाना चाहती हैं। उन्होंने आपको किराने की लिस्ट दी, जो सामान आपको शुक्रवार शाम ऑफिस से लौटते वक्त लाना था। जब आप शेल्फ से सामान उठा रहे होते हैं तो बॉस का फोन आता है और वह चिल्लाते हैं कि आपने काम पूरा नहीं किया। सोने से पहले इसे पूरा कर देना। गुस्से और कन्फ्यूजन में आप मैदा भूल जाते हैं। नतीजतन, आपकी पत्नी केक नहीं बना पाएंगी। दोनों ही मामलों में जानकारी तो थी, लेकिन उसका उपयोग गलत हो गया। तो क्या करें? मुझे करीब दो दशक पहले पढ़ी डॉ. अतुल गवांडे की किताब 'द चेकलिस्ट मैनिफेस्टो' याद है, जिसमें गवांडे ऐसा समाधान बताते हैं, जिसे अमेरिकन मेडिकल एसोसिएशन ने भी अपनाया है। पेशे से सर्जन रहे लेखक लंबे व्यक्तिगत अनुभव के जरिए चेकलिस्ट कॉन्सेप्ट समझाते हैं। उन्होंने न सिर्फ अलग-अलग क्षेत्रों में चेकलिस्ट के असर पर रिसर्च की, बल्कि अस्पतालों में इसे लागू भी किया। वे कहते हैं कि कोई असामान्य घटना हो जाए तो कोई व्यक्ति वो काम भी भूल सकता है, जो वह सामान्यतः करता है। दूसरी बात, हम कम महत्वपूर्ण स्टेप्स छोड़ देते हैं, क्योंकि पिछली बार छोड़ा तो कुछ नहीं हुआ था। कोई कह सकता है कि 'यह कभी समस्या नहीं रही', लेकिन क्या गारंटी है कि अगली बार नहीं होगी? गवांडे कहते हैं कि हम चेकलिस्ट जैसी साधारण चीज के जरिए ऐसी विफलताओं से बच सकते हैं।

यह हमें जरूरी स्टेप्स याद दिलाती है और उन्हें स्पष्टतः सामने रखती है। यह न सिर्फ वेरिफिकेशन संभव बनाती है, बल्कि बेहतर प्रदर्शन के लिए अनुशासन का भाव भी पैदा करती है।

फंडा यह है कि अगली बार जब आप अपने जीवन या वर्कप्लेस पर किसी बड़े काम पर ध्यान दे रहें हों तो चेकलिस्ट जैसी छोटी चीज बनाना और इसे जांचते हुए टिक करना जरूर याद रखिएगा। एन. रघुरामन

लोगों का जीवन सुधारने के लिए अमीर बनने का इंतजार जरूरी नहीं

कई वर्षों बाद पिछले महीने केरल जाना मेरे लिए सुखद अनुभव रहा। 1980 के दशक में जब मैं पीएचडी कर रहा था

तो केरल अपने बेहतरीन सामाजिक संकेतकों के लिए जाना जाने लगा था। मसलन, 1981 की जनगणना के समय केरल में 71फीसदी वयस्क महिलाएं साक्षर थीं, जबकि पूरे भारत में सिर्फ 26फीसदी थीं। शिशु मृत्यु दर 1,000 जन्मों पर 37 थी, जबकि भारत में यह 110 थी। ये उपलब्धियां तब थीं, जब केरल देश के सबसे गरीब राज्यों में से एक था। इससे पता चलता है कि गरीब देशों को लोगों का जीवन सुधारने के लिए अमीर बनने का इंतजार करने की जरूरत नहीं।विकास के शुरुआती दौर में भी सरकार और समाज ऐसे कदम उठा सकते हैं, जिनसे हर व्यक्ति की बुनियादी जरूरतें पूरी हों। सभी को अच्छी शिक्षा देना इसका उदाहरण है, जो 'केरल मॉडल' का आधार है।याद रखें, पुराने दिनों में केरल का सामाजिक ढांचा बेहद दमनकारी था। जब स्वामी विवेकानंद 19वीं सदी के अंत में केरल गए तो जाति-भेद की कठोरता देखकर विचलित हुए थे।वंचित जातियों को शिक्षा के अधिकार के लिए लंबा संघर्ष करना पड़ा है 1980 के दशक में जब केरल दुनिया में चर्चित होने लगा, तब कुछ विद्वानों ने चेतावनी दी कि केरल मॉडल टिकाऊ नहीं है।आर्थिक निवेश के बजाय सामाजिक विकास को प्राथमिकता देने की केरल को भारी कीमत चुकानी पड़ेगी। लेकिन इन भविष्यवाणियों के विपरीत, केरल में सामाजिक संकेतक बेहतर होते रहे और लोगों की आय भी तेजी से बढ़ी। इसका कारण था कि राज्य की अर्थव्यवस्था बढ़ने लगी थी और बहुत से केरलवासी दुबई, सऊदी अरब और अन्य खाड़ी देशों में काम करने लगे। राज्य के अंदर और बाहर, दोनों ही जगह केरल ने अपने मानव संसाधन विकास का फायदा उठाया।कई मायनों में आज केरल का जीवन-स्तर तथाकथित विकसित देशों के बराबर है। उदाहरण के लिए, शिशु मृत्यु दर अब 1,000 जीवित जन्मों पर सिर्फ 5 है, जो अमेरिका से थोड़ी ही कम है। पूरे भारत में यह लगभग 25 है। इसी तरह, केरल में अधिकतर बच्चों को तीन साल की उम्र से ही प्री-स्कूल शिक्षा मिल जाती है, जबकि अमेरिका में यह सुविधा मुश्किल से आधे बच्चों को मिलती है। केरल कई क्षेत्रों में देश से भी आगे निकल गया है। देश की सबसे मजबूत और सक्रिय ग्राम पंचायत, स्वयं-सहायता समूह और सहकारी संस्थाएं केरल में हैं। इनमें यूएलसीएसएस नामक एक सहकारी निर्माण कंपनी भी शामिल है, जहां 18,000 मजदूर बिना किसी मालिक के काम करते हैं। केरल में प्रवासी मजदूरों और निराश्रित परिवारों के लिए प्रगतिशील नीतियां भी हैं। 2018 की भयानक बाढ़ और कोविड संकट में भी केरल ने सामाजिक एकजुटता की मिसाल पेश की थी।पिछले महीने केरल जाने पर मैंने एक और गुण देखा- जिम्मेदार नागरिकता की भावना। सुविधाघरों समेत सार्वजनिक जगहें बहुत साफ-सुथरी थीं।गाड़ियां जेब्रा क्रॉसिंग पर रुकती हैं। लोग लाइन में खड़े होते हैं। कूड़ेदान का सही उपयोग होता है। और यह सब बिना किसी जोर-जबरदस्ती के होता है, क्योंकि समाज में सार्वजनिक जिम्मेदारी की भावना विकसित हो चुकी है। मेरे कहने का मतलब यह नहीं है कि केरल हर तरह से आदर्श है।वहां भी कई समस्याएं हैं, जैसे आत्महत्या की ऊंची दर और शिक्षित बेरोजगारी। लेकिन जब भारत 2047 तक विकसित बनने की कोशिश कर रहा है, तो उसे केरल से सीख लेनी चाहिए।(ज्यां द्रेज)

समृद्ध संगीत, साहित्य और कमजोर मानसून

इस बार मानसून बेहद कमजोर रहा। इसे बिहार में आई बाढ़ से जोड़कर मत देखिए। वो तो नेपाल से छोड़े गए बेइंतहा पानी का परिणाम है। कमजोर मानसून के कारण कई राज्यों के कई हिस्सों में फसलें चौपट हो गईं। कहीं पैदावार प्रभावित हुई। कहीं किसानों को बीज तक नसीब नहीं हो सका। दरअसल, हमने अंधाधुंध तरीके से पेड़ काटे। हमारे किसानों ने ज्यादा से ज्यादा फसल के चक्कर में जंगल, बीड़ तो छोड़ी ही नहीं, मेड़ें तक को मिनिएचर बना दिया। हरियाली गायब हो गई। नतीजा यह हुआ कि बादलों को बुलावा देने वाला कोई नहीं बचा। न पेड़, न हरियाली। जैसे शहर कंक्रीट के जंगल बन गए, वैसे ही गांव और खेतों ने भी हरियाली का दामन छोड़ दिया। हमने अपने बच्चों को भी यह नहीं सिखाया कि बारिश का हमारे देश के संदर्भ में महत्व क्या है। उसका उपयोग, उसकी महत्ता समझाने के लिए हमारे पास कुछ भी नहीं बचा। ऊपर से हमने बच्चों को पहली कविता क्या सिखाई? 'रेन-रेन गो अवे, कम अगेन अनॉदर डे। लिट्टिल बेबी वॉन्ट्स टु प्ले, रेन-रेन गो अवे।' मतलब, 'बच्चे खेलना चाहते हैं, इसलिए बारिश, अभी तू जा। फिर कभी आना।' पश्चिमी देशों में बार-बार बारिश होती है इसलिए उन्होंने यह कविता बनाई। हमारे यहां ऐसा कहां है? हमारे बच्चे तो बारिश में ज्यादा अच्छे से खेलना-कूदना चाहते भी हैं और जानते भी हैं। फिर हम क्यों सिखा रहे हैं- 'रेन-रेन गो अवेष्ठ?' पहले से ही कम हो रही है और हम कह रहे हैं अभी तू जा। फिर कभी आना। कोई ठहरकर सोचने को तैयार नहीं है। इसके उलट महाराष्ट्र- जहां के अधिकांश हिस्सों में इस बार भले ही सूखा पड़ा हो- लेकिन उन्होंने बारिश को बुलाने वाली कविता रची-'येरे-येरे पावसा, तुला देतो पैसा, पैसा झाला खोटा, पाउस आला मोठा।' मतलब- 'आओ-आओ बारिश, मैं तुम्हें पैसे दूंगा। पैसा भले खोटा निकला लेकिन बारिश जमकर आई।' जाने क्यों हम पश्चिम के अंधानुकरण में फंसे हैं। अगर इसी तरह हम कविता गा-गाकर बारिश को भगाते रहे तो आने वाली पीढ़ी बारिश का महत्व भला कैसे जानेगी? उसे सहेजने और सम्भालने की बात तो बहुत दूर की कौड़ी है। हां, हिंदुस्तानी कण्ठ-संगीत में जरूर बारिश के लिए तरह-तरह से आह्वान किया जाता है। लेकिन उसे गाने वाले अब कम हैं और सुनने वाले और भी कम। यहां बात हो रही है राग मल्हार की। दरअसल, मल्हार एक राग-परिवार है। इसके सदस्य के रूप में कई राग हैं, जिनमें प्रमुख हैं- मियां की मल्हार, गौड़ मल्हार, मेघ मल्हार, सूर मल्हार, रामदासी मल्हार, नट मल्हार, जयंत मल्हार, शुद्ध मल्हार, धानी मल्हार आदि। देखिए इन रागों में वर्षा का आह्वान कैसे किया जाता है। जैसे मियां की मल्हार में बंदिश- 'घन गरजत-बरसत बूंद-बूंदष्ठ।' मेघ मल्हार की बंदिश- 'सखी बदरा बरसे झनन-झनन।' गौड़ मल्हार- 'गरजत, बरसत सावन आयो रेष्ठ।' हर जगह बारिश का स्वागत,ष्ठ लेकिन हम क्या सीख और सिखा रहे हैं- 'रेन-रेन गो अवे!' अब अंत में आते हैं बिहार की बाढ़ पर।

कागज पर मजबूत 'मुस्लिम-नाटो' हकीकत में भी कारगर साबित होगा?

सऊदी अरब, पाकिस्तान और तुर्किये ने सोमवार (5 अक्टूबर) को अपने 'मक्का गठजोड़' (या कथित 'मुस्लिम-नाटो') को एक्टिवेट करने की दिशा में कदम उठाए। जब पहली

बार हूती मिसाइलें सऊदी अरब पर गिरी थीं, तभी सवाल उठा था कि क्या पाकिस्तान सऊदी अरब की रक्षा के लिए आगे आएगा? लेकिन एक महीने तक पाकिस्तान ने कोई कार्रवाई नहीं की थी। उसकी ऊहापोह की पुख्ता वजहें भी मौजूद थीं। कम से कम सैन्य क्षमता की कमी तो इसकी वजह नहीं हो सकती। ग्लोबल फायरपावर इंडेक्स में पाकिस्तान 14वें स्थान पर है। उसके पास 6.60 लाख सक्रिय और 5.50 लाख रिजर्व सैनिक हैं। उसकी वायुसेना में करीब 1400 विमान हैं, जिनमें चीन के जेएफ-17 और अमेरिका के एफ-16 समेत 300 से ज्यादा फाइटर जेट हैं। फिर उसके पास परमाणु हथियारों का तुरुप का पत्ता भी है। लेकिन जिस चीज की कमी रही है, वह है इन्हें इस्तेमाल करने की रणनीतिक गुंजाइश। इसके तीन कारण रहे हैं- राजनीति, प्राथमिकताएं और पैसा।पाकिस्तान ने खुद को ईरान युद्ध में मध्यस्थ के तौर पर पेश किया था। उसने यूएस-ईरान के बीच बातचीत की मेजबानी की और युद्धविराम में मदद की। इस भूमिका को पाकिस्तान आगे भी बनाए रखना चाहता है, क्योंकि इससे उसे प्रभाव और रणनीतिक फायदा मिलता है।

इसके लिए ईरान से अच्छे संबंध बनाए रखना जरूरी है। पाकिस्तान और ईरान के बीच 900 किलोमीटर लंबी सीमा है। अतीत में दोनों देश एक-दूसरे पर हवाई हमले कर चुके हैं। ईरान पाकिस्तान की ऊर्जा आपूर्ति प्रभावित कर सकता है, सीमा पर परेशानी या सैन्य तनाव बढ़ा सकता है।

ऐसे कई कारण हैं, जिनके चलते पाकिस्तान ऐसी स्थिति को एक महीने से टालना चाह रहा था। दूसरा कारण है रणनीतिक प्राथमिकताएं। पश्चिम एशिया पैसे और तेल के स्रोत के तौर पर पाकिस्तान के लिए अहम है। लेकिन वह उसका पड़ोसी नहीं है। पाकिस्तान के सामने अपने बिल्कुल नजदीकी क्षेत्रों में ज्यादा बड़ी चुनौतियां हैं। अफगानिस्तान को ही लें। पाकिस्तान आरोप लगाता है कि तालिबान से टीटीपी यानी पाकिस्तानी तालिबान को समर्थन मिलता है। दोनों देशों के बीच यह मसला पहले ही हिंसक रूप ले चुका है और सीमा पार हमले तक हो चुके हैं। फिर पाकिस्तान का ध्यान अपनी पूर्वी सीमा पर भी है, जहां उसकी सेना का बड़ा हिस्सा तैनात है। अपने घर के भीतर भी पाकिस्तान आतंकवाद के बढ़ते खतरे से जूझ रहा है। 2026 के पहले सात महीनों में हुए हमलों में 2700 से ज्यादा लोग मारे जा चुके हैं। पीओके में अशांति और बलूचिस्तान में उग्रवाद को लेकर भी पाकिस्तान पर दबाव है। ऐसे में सऊदी अरब उसके लिए जरूरी मोर्चा नहीं था। अब हम तीसरे कारण पर आते हैं- पैसा। किसी दूसरे देश के लिए युद्ध लड़ना बेहद महंगा होता है और पाकिस्तान की अर्थव्यवस्था फिलहाल ऐसा खर्च नहीं झेल सकती। उसकी आर्थिक वृद्धि दर महज 3.5फीसदी रहने का अनुमान है, महंगाई दर 10.2फीसदी है, जबकि विदेशी मुद्रा भंडार बेहद जोखिमपूर्ण स्थिति में बना हुआ है। उसके विदेशी मुद्रा भंडार का 91फीसदी पैसा अन्य देशों से उधार ली गई रकम से बना है। उसकी अर्थव्यवस्था आईएमएफ, चीन, सऊदी अरब और अंतरराष्ट्रीय बॉन्ड से मिले विदेशी कर्ज के सहारे है। ऐसे में वह किसी दूसरे के लिए युद्ध लड़ने का खर्च नहीं उठा सकेगा।

पाकिस्तान के करीब 8 हजार सैनिक पहले ही सऊदी अरब में तैनात हैं। उनके साथ वहां 16 जेएफ-17 फाइटर जेट और चीन का एचक्यू-9 एयर-डिफेंस सिस्टम भी है। इस तैनाती का खर्च सऊदी अरब उठा रहा है, जबकि पाकिस्तान इन्हें ऑपरेट कर रहा है। लेकिन इस सबके बावजूद पाकिस्तान टकराव नहीं चाहता और हूतियों से राजनीतिक रूप से चर्चा करने का पक्षधर है। ऐसे में सऊदी अरब को दूसरे विकल्पों पर भी विचार करना चाहिए। क्योंकि इन तमाम सैन्य संसाधनों के बाद भी पाकिस्तान की सेना अपने इतिहास में कोई युद्ध नहीं जीत पाई है। और जब वह अपनी ही जमीन पर युद्ध नहीं जीत सकती, तो विदेश में कैसे लड़ सकती है? (ये लेखिका के अपने विचार हैं,पलकी शर्मा)

व्यवहार में बदलाव लाने के लिए हमें लोगों को डराना चाहिए या पुरस्कृत करना चाहिए?

इस हफ्ते की शुरुआत में पोस्ट किया गया साढ़े दस मिनट का वह वीडियो मेरे लिए बहुत असामान्य था। वजह थी कि इसे

पोस्ट करने वाला व्यक्ति 1 अक्टूबर को ही नियुक्त हुआ है और उनका वीडियो तत्काल ही वायरल हो गया। ये व्यक्ति अमेरिका में इलिनॉय राज्य के कार्यवाहक लेजिस्लेटिव इंस्पेक्टर जनरल डेविड ई. रिस्ली थे। उनका ऑफिस लेजिस्लेटिव ब्रांच में धोखाधड़ी, बर्बादी, दुरुपयोग, कुप्रबंधन, कर्तव्य का निर्वहन न करने या उसे गलत या गैरकानूनी तरीके से करने और 'स्टेट ऑफिशियल एंड एम्प्लॉइज एथिक्स एक्ट' के उल्लंघन से जुड़ी शिकायतों की जांच करता है। उनके अधिकार क्षेत्र में इलिनॉय जनरल असेंबली के वर्तमान और पूर्व सदस्य तथा लेजिस्लेटिव ब्रांच के वर्तमान और पूर्व राज्य कर्मचारी आते हैं। उनका मुख्य काम नैतिकता से जुड़ी शिकायतों और गलत आचरण के आरोपों की बिना किसी राजनीतिक पक्षपात के पूरी और स्वतंत्र जांच करना है। वीडियो में वे कहते दिख रहे हैं कि 'पहली बात, आपके व्यवहार के बारे में हमेशा किसी को पता होता है और कोई इस बारे में किसी दूसरे से बात जरूर करेगा। देर-सबेर खबर हमारे ऑफिस तक पहुंच जाएगी। दूसरी बात, जब ये बात हमारे कानों में पड़ेगी तो भले ही आप इन्वेस्टिगेटिव ऑफिसर हों, लेकिन इससे कोई फर्क नहीं पड़ेगा। हमने आपसे कहीं बड़ी मछलियों की जांच सफलतापूर्वक की है। इसलिए इस बारे में सोचिए और अच्छे इंसान की तरह व्यवहार कीजिए।' उन्होंने यह कहते हुए बात खत्म की कि 'उल्लंघन बर्दाश्त नहीं किए जाएंगे... इसलिए समस्या के मूक दोषी बनने के बजाय समाधान का हिस्सा बनिए।' याद रखिए, वे पहली बार अपने स्टाफ से बात कर रहे थे। यह वीडियो देखते हुए मैं पुणे के सदाशिव पेठ में तिलक रोड स्थित दुर्वांकुर डाइनिंग हॉल में पहुंचा, जो खास महाराष्ट्रीयन भोजन के लिए जाना जाता है। यहां थालीपीठ से लेकर दही वड़ा, पूरन पोली से लेकर श्रीखंड, बासुंदी, रबड़ी और सीजनल आमरस तक मिलता है। इसमें कार्बोहाइड्रेट के लिए चपाती और भाकरी, दाल-खिचड़ी और मशहूर महाराष्ट्रीयन आमटी के साथ विभिन्न सूखी और रसेदार सब्जियां भी परोसी जाती हैं। इसकी एक अनोखी डिस्काउंट पॉलिसी है। चूंकि वे नहीं चाहते कि लोग खाना बर्बाद करें, इसलिए यदि कोई प्लेट की हरेक चीज समाप्त करता है तो उसे बिल में 20 रुपए की छूट मिलती है। मिनी मील की कीमत 235 रुपए है, जो वीक-डेज में 300 रुपए और वीकेंड पर 450 रुपए तक पहुंच जाती है। अलग-अलग दिनों में अलग-अलग थालियां परोसी जाती हैं। इनमें संडे और हॉलिडे स्पेशल विशेष बड़ी थाली और गणेश चतुर्थी का विशेष मेन्यू भी शामिल हैं। विख्यात तौर पर यहां की सर्विस तेज और टर्नओवर काफी ज्यादा है। यह ट्रेडिशनल महाराष्ट्रीयन डाइनिंग हॉल कल्चर को बताता है, जिसमें सर्वर्स लगातार प्लेट में खाना परोसते रहते हैं और खाने वाले भी तेजी से खाते हैं। चूंकि हम भोजन की नहीं, व्यवहार की बात कर रहे हैं तो वहां मैंने जो देखा, वह बताता हूं। सिर्फ दो लोगों को छोड़कर मेरे आसपास बैठे सभी लोगों ने प्लेट में रखी हर चीज खाई, क्योंकि वे 20 रुपए की छूट लेना चाहते थे। कुछ लोग डकार लेकर इस पर हंसे भी, लेकिन वे कोई भी चीज वेस्ट नहीं करना चाहते थे। अब मेरा सवाल है कि जब कोई व्यक्ति करीब 300 रुपए खर्च कर रहा है तो महज 20 रुपए से वाकई कोई फर्क पड़ेगा? फिर भी ज्यादातर लोग छूट पाने के लिए एक दाना भी वेस्ट नहीं करना चाहते थे।इससे मैं एक बड़े सवाल पर सोचने को मजबूर हुआ कि इंसान के बर्ताव को ज्यादा प्रभावी ढंग से क्या बदलता है- सजा का डर या इनाम का आकर्षण? रिस्ली ने अपने स्टाफ को व्यवहार ठीक रखने के लिए पकड़े जाने और जांच होने का डर दिखाया। दुर्वांकुर खाने वालों को हर निवाले की कीमत समझाने के लिए 20 रुपए के इनाम का उपयोग करता है। दोनों तरीके कारगर हैं, लेकिन दूसरा वाला एक सुखद अनुभव देकर जाता है। जब लोग जानबूझकर मर्यादा उल्लंघन करें तो शायद सजा जरूरी होती है, लेकिन जब उद्देश्य अच्छी आदत बनाना हो तो इनाम ज्यादा कारगर होता है। फंडा यह है कि अकसर हम लोगों को यह बताकर बदलने की कोशिश करते हैं कि अगर उन्होंने कुछ गलत किया तो उनके साथ क्या होगा। शायद हमें उन्हें यह भी बताना चाहिए कि सही काम करने पर उन्हें क्या मिलेगा। आखिरकार, डर हमें बात मानने को मजबूर कर सकता है, लेकिन इनाम हमें खुद में बदलाव के लिए प्रेरित कर सकता है। एन. रघुरामन

यूपी की सियासत में कांग्रेस की रणनीति अब बदल रही है

यूपी की राजनीतिक बिसात अब आकार लेने लगी है। इसी क्रम में कांग्रेस ने एक दिलचस्प चाल चलते हुए एक ब्राह्मण महिला आराधना मिश्रा 'मोना' को प्रदेश अध्यक्ष नियुक्त किया है। यह फैसला कांग्रेस का साहसिक दांव है- उस समुदाय को अपने साथ जोड़ने की कोशिश, जो मंडल-कमंडल की राजनीति से यूपी का राजनीतिक परिदृश्य बदलने के बाद से ही भाजपा का मजबूत समर्थक रहा है। कांग्रेस भाजपा के गढ़ में जाकर उसी को चुनौती देने की कोशिश कर रही है। यूपी में कांग्रेस अपने अस्तित्व की लड़ाई लड़ रही है। 2022 के विधानसभा चुनाव में उसका वोट शेयर 2फीसदी से थोड़ा ही अधिक था। ऐसे में भाजपा के गढ़ में सेंध लगाने की उसकी यह कोशिश महत्वाकांक्षी भी है और दुस्साहसी भी। शायद राम मंदिर में चंदे की कथित हेराफेरी से पार्टी का हौसला बढ़ा है। यह देखना बाकी है कि क्या ब्राह्मण समुदाय फिर से उस पार्टी के साथ जाएगा, जिसका उसने अतीत में समर्थन किया था। जबकि वे अच्छी तरह से जानते हैं कि अगर अगले साल विधानसभा चुनाव में भाजपा हारती है, तो अखिलेश यादव के नेतृत्व में बनने वाली सरकार में कांग्रेस जूनियर पार्टनर की भूमिका में ही होगी। वास्तव में, कांग्रेस घूम-फिरकर फिर से इंदिरा गांधी की राजनीति की ओर लौटती हुई नजर आ रही है। इंदिरा ने ही ब्राह्मण-दलित-अल्पसंख्यक का मजबूत सामाजिक गठजोड़ तैयार किया था, जिसके सहारे कांग्रेस 1971 में यूपी की सत्ता में वापसी करने में सफल हुई थी। इससे पहले 1967 में संयुक्त विधायक दल के समाजवादी-जनसंघ गठबंधन ने उसे सत्ता से बाहर कर दिया था। यह गठजोड़ 1980 के दशक में राम मंदिर आंदोलन के उभार तक कायम रहा था। लेकिन राम मंदिर आंदोलन ने बड़ी संख्या में ब्राह्मणों को भाजपा की ओर जाने के लिए प्रेरित किया और उसके बाद से वे पार्टी के साथ बने रहे। दिलचस्प यह है कि राहुल गांधी ने भाजपा से मुकाबला करने और यूपी में अपनी पार्टी को फिर से खड़ा करने के लिए पहले मंडल की राजनीति को आजमाने का फैसला किया था। उन्होंने 2012 के विधानसभा चुनाव में 90 ओबीसी उम्मीदवार मैदान में उतारे थे, जो कांग्रेस की ओर से अब तक की सबसे बड़ी संख्या थी। लेकिन यह रणनीति काम नहीं आई और अखिलेश यादव ने वह चुनाव जीत लिया। ओबीसी वोटों को अपने पक्ष में लाने की कोशिश उन्होंने इसके बाद भी जारी रखी और जाति जनगणना जैसे मुद्दों को जोर-शोर से उठाया। लेकिन अब लगता है कि उन्हें अपनी इस रणनीति की निरर्थकता समझ में आ गई है और उन्होंने अपनी दादी की राजनीति से सबक लेने का फैसला किया है। यूपी कांग्रेस के नए पदाधिकारियों के चयन में बीडीए सामाजिक गठजोड़ को फिर से खड़ा करने की कोशिश साफ दिखाई देती है। प्रदेश अध्यक्ष ब्राह्मण हैं, जबकि कार्यकारी अध्यक्ष मुस्लिम (इमरान मसूद) हैं। दो वरिष्ठ उपाध्यक्षों में से एक (आलोक प्रसाद) दलित हैं और पासी समुदाय से आते हैं। दूसरे वरिष्ठ उपाध्यक्ष देविंदर निषाद ईबीसी हैं और नाविक समुदाय से आते हैं। इन नियुक्तियों पर प्रियंका गांधी वाड्रा की छाप भी बहुत साफ दिखाई देती है। अनुराधा मिश्रा 'मोना' को उनका करीबी माना जाता है। उन्होंने 2022 के विधानसभा चुनाव से पहले चले 'लड़की हूं, लड़ सकती हूं' अभियान में प्रियंका के साथ मिलकर काम किया था। इमरान मसूद भी प्रियंका के पसंदीदा नेताओं में हैं। पश्चिमी यूपी के मुसलमानों के बीच उनका काफी प्रभाव भी है। खबरों की मानें तो प्रियंका गांधी ने अखिलेश यादव को व्यक्तिगत रूप से भरोसा दिलाया है कि अगले साल होने वाले चुनाव से पहले वे इमरान को सपा पर निशाना साधने से रोकेंगी। इन तमाम घटनाक्रमों से यह संदेश जा रहा है कि कांग्रेस के चुनाव अभियान में प्रियंका की भूमिका केंद्रीय बनी रहेगी। यह भी उल्लेखनीय है कि अखिलेश और डिम्पल के साथ उनके अच्छे संबंध हैं। डिम्पल अब जमीन पर लगातार अधिक सक्रिय दिखाई देने लगी हैं। यह सपा की छवि बदलने की कोशिश का हिस्सा है। पहली बार समाजवादी पार्टी-कांग्रेस गठबंधन चुनाव को गंभीरता से ले रहा है। दोनों पक्ष जानते हैं कि उत्तर प्रदेश का 2027 का जनादेश ही 2029 की बड़ी चुनावी लड़ाई की जमीन तैयार करेगा। एक तरफ कांग्रेस का बीडीए और समाजवादी पार्टी का पीडीए गठजोड़, तो दूसरी तरफ भाजपा का सवर्णों, ओबीसी और दलितों के एक हिस्से का मजबूत सामाजिक गठजोड़।

इटली में चुनाव जीतने पर एक्स्ट्रा सीटें मिलने पर विवाद,मेलोनी बोलीं- कानून पास नहीं हुआ तो इस्तीफा दे दूंगी

रोम। 1946 में इटली के गणराज्य बनने के बाद से अब तक वहां 68 सरकारें बन चुकी हैं। 1954 में एक सरकार तो सिर्फ 22 दिन चली थी।पिछले

महीने जॉर्जिया मेलोनी ने एक रिकॉर्ड बनाया। सितंबर 2022 में प्रधानमंत्री बनने के बाद उनकी सरकार इटली के इतिहास में सबसे लंबे समय तक चलने वाली सरकार बन गई। मेलोनी की मौजूदा सरकार का पांच साल का कार्यकाल अगले साल खत्म होना है। हालांकि, अगर इस कानून को लेकर सत्ताधारी गठबंधन में टूट होती है तो देश में समय से पहले चुनाव भी हो सकते हैं। विरोधियों ने कहा- इससे लोकतंत्र को खतरा- विरोधियों का कहना है कि अतिरिक्त सीटें मिलने से चुनाव जीतने वाले गठबंधन के पास संसद में जरूरत से ज्यादा ताकत आ सकती है। इससे वह दूसरे सांसदों से बातचीत किए बिना कई बड़े फैसले कर सकेगा। इनमें जजों और राष्ट्रपति की नियुक्ति जैसे अहम मामले भी शामिल हैं। इससे लोकतंत्र को खतरा है। वामपंथी विचारों वाले पत्रकार और राजनीतिक विश्लेषक मासिमो जियानिनी ने इस कानून की तुलना 1923 में बने एक कानून से की। उस कानून ने उस समय नेशनल फासिस्ट पार्टी को संसद पर कब्जा करने में मदद की थी। जियानिनी ने अपने पॉडकास्ट में कहा, '103 साल बाद वही तरीका फिर दोहराया जा रहा है। चुनावी कानून में भारी बहुमत के लिए बोनस सीटें देने से लोकतंत्र का संतुलन बदल जाता है।' कानून के नाम पर भी बहसः- कानून के समर्थकों ने इसे 'स्टैबिलिकम' यानी 'स्थिरता' नाम दिया है। उनका कहना है कि इसका मकसद इटली में सरकारों को स्थिर बनाना है। इटली का राजनीतिक इतिहास लंबे समय तक चलने वाली सरकारों के लिए नहीं जाना जाता। वहां कई सरकारें कुछ ही समय बाद गिर गईं। वहीं, विरोधियों ने इसे मेलोनी से जोड़ते हुए 'मेलोनेल्लुम' नाम दिया है। उनका आरोप है कि मेलोनी के फायदे वाला चुनावी कानून तैयार किया है ताकि दोबारा सत्ता में आ सकें। अगर यह कानून पास हो जाता है तो विरोधी दल और संगठन इसे इटली की संवैधानिक अदालत में चुनौती देने की तैयारी कर रहे हैं। प्रधानमंत्री पद के उम्मीदवार का नाम भी पहले ही घोषित होगाः-प्रस्ताव में एक नियम यह भी है कि चुनाव लड़ने वाला गठबंधन मतदान से पहले ही प्रधानमंत्री पद के अपने उम्मीदवार का नाम घोषित करेगा। सरकार का कहना है कि इससे मतदाताओं को पहले से पता रहेगा कि जीतने पर प्रधानमंत्री कौन बनेगा। इससे चुनाव में स्पष्टता और पारदर्शिता आएगी। लेकिन विरोधियों का कहना है कि इटली में प्रधानमंत्री चुनना राष्ट्रपति का अधिकार है। राष्ट्रपति का चुनाव संसद करती है और उनके पास कानून बनाने तथा न्यायिक व्यवस्था से जुड़े कुछ खास अधिकार भी हैं। विरोधियों को लगता है कि पहले से उम्मीदवार तय करने का नियम राष्ट्रपति की भूमिका को कमजोर कर सकता है। पहले भी बोनस सीटें देने की कोशिश हुई थीः-इटली में 1993 के बाद से राजनीतिक स्थिरता लाने के लिए छह चुनावी कानून बनाए जा चुके हैं। इनमें पहले भी जीतने वाली पार्टी को अतिरिक्त सीटें देने की कोशिश की गई थी। साल 2005 में बने एक चुनावी कानून में भी ऐसा प्रावधान था, लेकिन 2013 में इटली की संवैधानिक अदालत ने इसे असंवैधानिक घोषित कर दिया था। अदालत का कहना था कि अतिरिक्त सीटें देने के लिए वोट का कोई न्यूनतम प्रतिशत तय नहीं किया गया था।

ईरान ने अमेरिका को पीछे हटने पर मजबूर किया,अमेरिकी सैनिक होटलों में रहने को मजबूर,हमलों के डर से ब्रिटेन से 12 बमवर्षक हटे

न्यूयॉर्क। कुछ सैनिक ऐसे होटलों में भी रह रहे थे, जहां सुरक्षा बहुत कम थी। इसके बाद ईरान ने इन जगहों को भी निशाना बनाना शुरू किया। सऊदी अरब में सीआईए के एक ठिकाने को भी नुकसान पहुंचा। मिडिल ईस्ट में अमेरिका जिन 13 बड़े सैन्य ठिकानों का इस्तेमाल करता था, उनमें से कई हमलों के बाद रहने और काम करने लायक नहीं रहे। पेंटागन के अंदर अब कुछ ठिकानों को फिर से बनाने की बजाय उन्हें और दूर ले जाने पर विचार हो रहा है। ड्रोन हमले ने अमेरिका की सोच बदल

दीः-इस युद्ध से अमेरिका को एक नई बात समझ आई है। पहले माना जाता था कि अगर अमेरिकी सैनिकों और विमानों को दुश्मन की मिसाइलों की पहुंच से दूर रखा जाए तो वे सुरक्षित रहेंगे। लेकिन ड्रोन ने यह सोच बदल दी है। ड्रोन छोटे होते हैं, उन्हें छिपाना आसान है और उन्हें बहुत दूर से भी हमला करने के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है। अमेरिकी अधिकारियों के मुताबिक, यूक्रेन ने पिछले साल रूस के खिलाफ इसी तरह की रणनीति अपनाई थी। उसने ड्रोन को ट्रकों में छिपाकर रूस के अंदर तक पहुंचाया और वहीं से उन्हें उड़ाकर सैन्य विमानों पर हमला किया। अब अमेरिका को डर है कि इसी तरह की रणनीति उसके सैन्य ठिकानों के खिलाफ भी इस्तेमाल हो सकती है। ईरानी सेना कमजोर हुई, लेकिन उसने अमेरिका को रोक दियाः-ट्रम्प का कहना है कि शुरुआती हमलों में ईरान की पूरी नौसेना खत्म हो गई और उसकी वायुसेना भी काम करने की स्थिति में नहीं है। फिर भी ईरान ने अमेरिकी सेना को कई जगह पीछे हटने पर मजबूर किया है। यही इस युद्ध की सबसे बड़ी विडंबना है। ईरान की सेना को भारी नुकसान हुआ है, लेकिन वह अमेरिकी सैनिकों को ईरान के करीब मौजूद ठिकानों पर टिकने नहीं दे रहा। अमेरिकी सैनिकों को अब पहले से ज्यादा दूर रहना पड़ रहा है। अमेरिका लंबे समय से मिडिल ईस्ट में अपनी सेना की मौजूदगी को इस दलील से सही ठहराता रहा है कि इससे दुनिया के अहम समुद्री रास्ते सुरक्षित रहते हैं। लेकिन अब अमेरिका होर्मुज स्ट्रेट और लाल सागर के कुछ हिस्सों में जहाजों की सुरक्षित आवाजाही की पूरी गारंटी नहीं दे पा रहा है। अमेरिका को अपने सैनिक और भी दूर ले जाने पड़ सकते हैंः- पेंटागन अब इजराइल और जॉर्डन में नए सैन्य ठिकाने बनाने पर विचार कर रहा है। लेकिन यह आसान काम नहीं है। नए ठिकानों के लिए अमेरिकी कांग्रेस से पैसा लेना होगा। इसके बाद निर्माण और तैयारी में कई साल लग सकते हैं। इस बीच अमेरिका को अपने मौजूदा सैनिकों और हथियारों को दूसरे सुरक्षित ठिकानों पर रखना होगा। यही वजह है कि अमेरिका अब अपने देश के अंदर भी एक बड़े नए सैन्य ठिकाने की योजना पर सोच रहा है। रक्षा मंत्री पीट हेगसेथ ने हाल में अमेरिकी सैनिकों से बात करते हुए मिडिल ईस्ट के क्षतिग्रस्त ठिकानों की बजाय अमेरिका के अंदर नया बड़ा बेस बनाने की बात की। सबसे बड़ा सवालः क्या अमेरिका पहले जैसा दबदबा रखता है? अमेरिका के सामने अब तीन बड़ी समस्याएं हैं। ईरान के पास ड्रोन और मिसाइलों से दूर बैठे अमेरिकी सैनिकों को भी निशाना बनाने की क्षमता है। मिडिल ईस्ट के कई पुराने अमेरिकी ठिकाने अब सुरक्षित नहीं रहे हैं। अमेरिका को अपनी सेना को ईरान से और दूर रखना पड़ रहा है। इससे किसी भी नए हमले के लिए ज्यादा समय, ज्यादा ईंधन और ज्यादा पैसा लगेगा। अमेरिका के लिए यह सिर्फ एक सैन्य समस्या नहीं है। इसका राजनीतिक असर भी हो सकता है। ईरान को कमजोर माना जाता है, फिर भी उसके हमलों के कारण अमेरिका को अपने सैनिक और विमान बार-बार पीछे हटाने पड़ रहे हैं। इससे दूसरे देशों को यह संदेश मिल सकता है कि सीधे अमेरिकी सेना से भिड़ने के बजाय उसके सैन्य ठिकानों को निशाना बनाकर भी उसे पीछे हटने पर मजबूर किया जा सकता है। यही इस युद्ध का सबसे बड़ा उलटा असर है। ट्रम्प ईरान को झुकाने के लिए युद्ध में उतरे थे। लेकिन अब अमेरिका को ही यह तय करना पड़ रहा है कि ईरान के करीब अपनी सेना को सुरक्षित कैसे रखा जाए।

सऊदी एयरपोर्ट पर हूतियों का हमला, 3 की मौत,ड्रोन-मिसाइल हमले में 36 घायल, जवाब में यमन के 80 ठिकानों पर पलटवार

रियाद। इसके अलावा नजरा और जिजान में अन्य महत्वपूर्ण ठिकानों पर भी हमले किए जाने की बात कही गई। याह्या ने दावा किया कि ये हमले यमन पर थी। लेकिन अब तस्वीर बदल गई है। 5 अक्टूबर को सऊदी समर्थित यमनी सेना ने हूतियों के खिलाफ बड़ा जवाबी अभियान शुरू किया। यमनी सेना ने बाब

सऊदी अरब के हमलों के जवाब में किए गए। उनके मुताबिक, इससे पहले के 24 घंटों में सऊदी अरब ने यमन पर 60 हवाई और मिसाइल हमले किए थे। सऊदी ने यमन में मिसाइल लॉन्च करने वाला ठिकाना नष्ट कियाः-इस बीच, यमन में सऊदी अरब के नेतृत्व वाले सैन्य गठबंधन ने दावा किया कि उसने रियाद पर हमले के लिए इस्तेमाल किए गए एक बैलिस्टिक मिसाइल लॉन्च प्लेटफॉर्म को नष्ट कर दिया है। गठबंधन के प्रवक्ता कर्नल तुर्की अल-मालिकी ने कहा कि यह कार्रवाई यमन की राजधानी सना में की गई। उनके मुताबिक, वहां सऊदी अरब पर एक और हमले की तैयारी चल रही थी और हमला जल्द किया जा सकता था। यमन में हूतियों के खिलाफ सैन्य अभियान जारीः-यमन सरकार हूती विद्रोहियों के खिलाफ सैन्य अभियान चला रही है। इसका मकसद यमन और बाब अल-मंदेब स्ट्रेट के पास कब्जाए इलाकों को वापस पाना है। इस सैन्य अभियान में यमन सरकार को सऊदी अरब से समर्थन मिल रहा है।सितंबर में हूतियों ने यमन के लाल सागर तट पर तेजी से बढ़ते हुए मोचा शहर और बाब अल-मंदेब के आसपास के कई अहम इलाकों पर कब्जा कर लिया था। इससे इस रणनीतिक समुद्री रास्ते पर हूतियों की पकड़ मजबूत हो गई अल-मंदेब के पास धुबाब इलाके और कई अहम ठिकानों पर दोबारा कब्जे का दावा किया। इसके बाद सेना मोचा की तरफ बढ़ी और यमनी सरकार ने शहर को भी हूतियों से वापस लेने का दावा किया। रॉयटर्स के मुताबिक, सरकारी बलों ने हूतियों को पिछले महीने कब्जे में लिए गए ज्यादातर इलाकों से पीछे धकेल दिया है। हूतियों का दावा- यमन में सरकारी बलों पर 11 मिसाइलें दागींः-अल जजीरा के मुताबिक, हूती सैन्य प्रवक्ता याह्या सरी ने दावा किया कि पिछले 24 घंटे में संगठन ने यमन में सरकारी बलों के 11 ठिकानों पर बैलिस्टिक मिसाइलों से हमले किए। सरी के मुताबिक, यमनी सरकार के बलों को बाब अल-मंदेब के पास प्रमुख रास्तों पर निशाना बनाया गया। उन्होंने दावा किया कि इन हमलों में दर्जनों लोग हताहत हुए, जिनमें सैन्य कमांडर भी शामिल थे। कई गाड़ियां भी नष्ट हो गईं। हूती प्रवक्ता ने अलग से दावा किया कि संगठन ने सऊदी अरब के समर्थन वाले जायंट्स ब्रिगेड पर भी बैलिस्टिक मिसाइल से हमला किया। उसके मुताबिक, इस हमले में 30 से ज्यादा लोग मारे गए या घायल हुए। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, इस संघर्ष में अब तक 270 से ज्यादा सरकारी सैनिकों और हूती लड़ाकों की मौत हो चुकी है।

अमेरिका में विदेशी छात्रों के लिए नौकरी महंगी होगी, भारत-चीन के छात्रों पर सबसे ज्यादा असर

वॉशिंगटन डीसी। टेक कंपनियों को भी परेशानी हो

सकती हैः-ओपीटी के जरिए विदेशी छात्रों को अमेरिका में काम का अनुभव मिलता है। टेक कंपनियां और दूसरी कंपनियां ऐसे छात्रों को खासकर एऊर्शे से जुड़े कामों में नौकरी देती हैं। अमेरिकी उच्च शिक्षा संस्थानों से जुड़े संगठन ईर्एं ने प्रस्ताव का विरोध किया है। संगठन का कहना है कि विदेशी छात्रों को अमेरिका से दूर करने से देश के इनोवेशन और आर्थिक विकास को नुकसान हो सकता है। अमेरिकी होमलैंड सिक्योरिटी विभाग (डीएचएस) का कहना है कि ओपीटी कार्यक्रम में धोखाधड़ी और गलत इस्तेमाल को रोकने के लिए यह कदम उठाया जा रहा है। विभाग ने आरोप लगाया कि इस कार्यक्रम का इस्तेमाल सस्ते विदेशी कर्मचारियों को अमेरिका लाने के लिए किया जा रहा है। अभी यह सिर्फ प्रस्ताव है। इस पर लोगों और संस्थानों को अपनी राय देने के लिए 60 दिन का समय मिलेगा। इसके बाद सरकार इसे अंतिम रूप दे सकती है। ट्रम्प सरकार पहले भी विदेशी छात्रों पर सख्ती कर चुकीः-ट्रम्प सरकार विदेशी छात्रों को लेकर पहले भी कई सख्त कदम उठा चुकी है। पिछले साल हजारों विदेशी छात्रों का कानूनी दर्जा खत्म किया गया था। इनमें से कई छात्रों को हिरासत में लिया गया और अमेरिका से बाहर भेजा गया। इस साल सरकार ने विदेशी छात्रों के अमेरिका में रहने की अवधि को लेकर भी नया नियम बनाया था। इसके खिलाफ कॉलेजों और यूनिवर्सिटी ने विरोध किया था। सितंबर में एक संघीय अदालत ने इस नियम को लागू होने से रोक दिया था। अमेरिका में भारतीय स्टूडेंट्स की संख्या घटीः-एक रिपोर्ट के मुताबिक भारत से आने वाले आवेदकों की संख्या में 15फीसदी कमी दर्ज की गई है। अमेरिका में सबसे ज्यादा भारत से स्टूडेंट पढ़ने जाते हैं। कमी की 3 वजहें-1. सख्त वीजा नियम और नीतियांः इसकी एक बड़ी वजह सख्त वीजा नियम और इमिग्रेशन नीतियां हैं। इन नियमों को लेकर छात्रों में यह डर बढ़ा है कि आगे पढ़ाई और नौकरी के लिए अमेरिका में रहना कितना आसान होगा।

2. वीजा की नई समय सीमाः अमेरिकी सरकार ने छात्र और विजिटर वीजा के लिए पहले से तय रहने की अवधि की व्यवस्था में बदलाव किया है।अब कई मामलों में अमेरिका में रहने की समयसीमा चार साल तक सीमित हो सकती है।

इससे लंबे समय की पढ़ाई करने वाले छात्रों के लिए परेशानी बढ़ सकती है। 3. भारी फीस का डरः अमेरिका विदेशी छात्रों पर 1 लाख डॉलर तक की फीस लगाने पर भी विचार कर रहा है, खासकर उन छात्रों के लिए जो पढ़ाई पूरी करने के बाद ओपीटी के जरिए अमेरिका में काम करना चाहते हैं।

इजराइल में 20 दिन बाद वोटिंग, नेतन्याहू हार सकते हैं,हमास हमले ने बदली देश की पॉलिटिक्स

वामपंथ कमजोर, अरब पार्टियां अछूत बनीं

तेल अवीव। दक्षिणपंथी नेता लगातार कहने लगे कि इजराइल को हमास और फिलिस्तीनियों के खिलाफ सख्त रुख रखना

डेमोक्रेट्स पार्टी के अध्यक्ष याइर गोलान (दाएं) और पार्टी सांसद नामा लाजिमी एक चुनावी अभियान के दौरान बातचीत करते हुए। फोटो– 28 सितंबर 2026

चाहिए। इतमार बेन-ग्विर और बेजेलेल स्मोट्रिच जैसे नेताओं को इसी मुद्दे पर अपनी बात रखने की ज्यादा जगह मिली। फिलिस्तीनी राज्य का विरोध, वेस्ट बैंक में यहूदी बस्तियों का समर्थन और फिलिस्तीनियों के खिलाफ सख्त नीति जैसे मुद्दे अब इजराइली राजनीति में ज्यादा खुलकर उठाए जाने लगे। लेफ्ट पहले शांति की बात करता था, अब सुरक्षा-आतंकवाद की3 साल पहले इजराइल की लेफ्ट राजनीति में लेबर पार्टी और मेरेत्ज सबसे प्रमुख नाम थे। दोनों पार्टियां फिलिस्तीन को मान्यता देने और शांति की बात करती थीं। मेरेत्ज तो वेस्ट बैंक के कब्जे वाले इलाकों से इजराइल की वापसी की भी वकालत करती थी। लेकिन 7 अक्टूबर के हमले के बाद यह राजनीति मुश्किल में आ गई। हमास के हमले ने इजराइली समाज में सुरक्षा और आतंकवाद का मुद्दा सबसे ऊपर ला दिया। इसी बदलाव के बीच लेबर और मेरेत्ज ने 2024 में मिलकर 'द डेमोक्रेट्स' पार्टी बनाई। इसका नेतृत्व पूर्व सैन्य अधिकारी याइर गोलान कर रहे हैं। वामपंथी पार्टी अब भी फिलिस्तीनियों के साथ राजनीतिक समाधान और वेस्ट बैंक के विलय को रोकने की बात करती है, लेकिन साथ ही हमास के शासन को खत्म करने और इजराइल की सुरक्षा मजबूत करने पर भी जोर देती है। यही इजराइली राजनीति में आया सबसे बड़ा बदलाव है। सुरक्षा का मुद्दा सिर्फ दक्षिणपंथ की पहचान नहीं रहा; नेतन्याहू का विरोध करने वाली पार्टियां भी अब इसी सवाल का जवाब दिए बिना चुनाव नहीं लड़ सकतीं। अरब पार्टी पहले किंगमेकर हुआ करती थीं, अब अछूत बनींः- इजराइल की राजनीति में अरब पार्टियों की ताकत का सबसे बड़ा उदाहरण 2021 में देखने को मिला। उस चुनाव में किसी भी खेमे को सरकार बनाने के लिए जरूरी 61 सीटें नहीं मिलीं। नेतन्याहू सबसे बड़े नेता जरूर रहे, लेकिन बहुमत नहीं जुटा पाए। इसके बाद उनके विरोध में खड़े अलग-अलग दलों ने हाथ मिला लिया। दक्षिणपंथी नेता नफ्ताली बेनेट और सेंटर के नेता याइर लैपिड ने गठबंधन बनाया। इसमें वामपंथी और दक्षिणपंथी दलों के साथ मंसूर अब्बास की अरब पार्टी राअम भी शामिल हुई। राअम की 4 सीटों के समर्थन से सरकार बनी। इस तरह करीब 12 साल से प्रधानमंत्री रहे नेतन्याहू सत्ता से बाहर हो गए। इजराइल में पहली बार कोई अरब पार्टी सरकार बनाने वाले गठबंधन का हिस्सा बनी। 2026 में तस्वीर अलग है। मौजूदा सर्वेक्षणों में अरब पार्टियों को करीब 13 सीटें मिलती दिख रही हैं। अरब पार्टी को सरकार में शामिल करना राजनीतिक रूप से कहीं ज्यादा मुश्किल हो गया है। ऐसा करने पर पार्टी को यहूदी वोटर्स के गुस्से का सामना करना पड़ सकता है। यानी 2021 में अरब पार्टियां नेतन्याहू को सत्ता से बाहर करने की 'किंगमेकर' बनी थीं। 2026 में उनके पास फिर सरकार बनाने के लिए जरूरी सीटें हो सकती हैं, लेकिन 7 अक्टूबर के बाद बदले राजनीतिक माहौल में उन्हें साथ लेना कहीं ज्यादा मुश्किल हो गया है।

व्हाइट-हाउस की नौकरी छोड़कर अब फॉक्स न्यूज जॉइन करेंगी लेविट,ट्रम्प का पसंदीदा चैनल,बच्चों के चलते प्रेस सेक्रेटरी का पद छोड़ा था

वॉशिंगटन डीसी। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प की पूर्व प्रेस सेक्रेटरी कैरोलिना लेविट अब फॉक्स न्यूज से जुड़ने जा रही हैं। लेविट ने अगस्त में अपने दो बच्चों के साथ ज्यादा समय बिताने के लिए व्हाइट हाउस का पद छोड़ा था। अब वह नवंबर से फॉक्स न्यूज में ऑन-एयर कंट्रीब्यूटर के तौर पर काम करेंगी। फॉक्स न्यूज को ट्रम्प का पसंदीदा चैनल माना जाता है, हालांकि हाल के दिनों में ट्रम्प ने इसकी कवरेज को लेकर नाराजगी भी जताई है। लेविट 27 साल की उम्र में अमेरिका की सबसे कम उम्र की व्हाइट हाउस प्रेस सेक्रेटरी बनी थीं। उन्होंने 12 अगस्त यह पद छोड़ने का ऐलान किया था। उस समय ट्रम्प ने उन्हें अपने सबसे भरोसेमंद सहयोगियों में से एक बताया था। ट्रम्प ने उनके पद छोड़ने के बाद मजाक में कहा था-'मुझे पता चला है कि कैरोलिना लेविट मुझे पसंद करने से ज्यादा अपने बच्चों को पसंद करती हैं। मैं इसे लेकर बहुत चिंतित हूं। लेकिन लेविट की जगह लेना आसान नहीं होगा' लेविट ने 1 मई 2026 को अपने दूसरे बच्चे को जन्म दिया था। इसके बाद वह मातृत्व अवकाश पर गई थीं और 16 जुलाई को प्रेस ब्रीफिंग में वापस लौटी थीं। उनका एक दो साल का बेटा भी है। 1 नवंबर से फॉक्स न्यूज पर दिखेंगीः-व्हाइट हाउस प्रेस सेक्रेटरी बनने से पहले लेविट ट्रम्प के 2024 के राष्ट्रपति चुनाव अभियान की प्रेस सेक्रेटरी थीं। इससे पहले 25 साल की उम्र में उन्होंने 2022 में अपने गृह राज्य न्यू हैम्पशायर से अमेरिकी कांग्रेस का चुनाव लड़ा था। हालांकि, इस चुनाव में उन्हें हार मिली थी। फॉक्स न्यूज ने सोमवार को बताया कि लेविट 1 नवंबर से नेटवर्क में ऑन-एयर कंट्रीब्यूटर के तौर पर काम करेंगी। नेटवर्क की सीईओ सुजैन स्कॉट ने कहा कि व्हाइट हाउस और राष्ट्रपति चुनाव अभियान में लेविट के सीधे अनुभव से उन्हें आज की राजनीति को समझने में खास मदद मिलती है। लेविट ने भी कहा कि वह व्हाइट हाउस प्रेस सेक्रेटरी के अपने अनुभव से मिली सोच को फॉक्स न्यूज के करोड़ों दर्शकों तक पहुंचाने को लेकर उत्साहित हैं।

जर्मनी में ममदानी की जीत से बदली यूरोप की राजनीति,वामपंथी पार्टियों ने सस्ते घर और कम किराए को मुद्दा बनाया

बर्लिन। जोहरान ममदानी ने पिछले साल नवंबर में न्यूयॉर्क मेयर का चुनाव जीता था। उनकी जीत में महंगाई, बढ़ता किराया और रोजमर्रा का खर्च बड़े मुद्दे रहे। उनका मैसेज था कि न्यूयॉर्क को आम लोगों के लिए सस्ता बनाया जाए। उनकी जीत का असर अब यूरोप की राजनीति में दिखने लगा है। यूरोपीय नेता ममदानी की तरह महंगे किराए, बढ़ती महंगाई और आम लोगों के खर्च पर फोकस कर रहे हैं। सबसे दिलचस्प मामला जर्मनी के बर्लिन का है। वहां महंगे घरों को मुद्दा बनाकर एलिफ एराल्प ने चुनाव जीत लिया। जर्मन मीडिया ने अब एराल्प को 'बर्लिन की ममदानी' कह रहे हैं। वहीं, फ्रांस, स्पेन और नीदरलैंड के वामपंथी नेता भी ममदानी की राजनीति पर नजर रख रहे हैं। ऐसे में माना जा रहा है कि ममदानी ने यूरोप के वामपंथ को चुनाव लड़ने का नया तरीका दे दिया है। अगर यूरोप में किसी एक नेता को ममदानी से सबसे सीधे तौर पर जोड़ा जा सकता है, तो वह एलिफ एराल्प हैं। 45 साल की एराल्प वकील हैं और तुर्की मूल के परिवार से आती हैं। उनके माता-पिता 1980 के तुर्की सैन्य तख्तापलट के बाद जर्मनी आए थे। एराल्प 2017 में द लिंक से जुड़ी थीं। पिछले महीने हुए चुनाव में उनकी पार्टी का सबसे बड़ा मुद्दा रहा- महंगा शहर और महंगा किराया। एराल्प ने बर्लिन में निजी कंपनियों के पास मौजूद करीब 2.2 लाख मकानों को सार्वजनिक नियंत्रण में लाने की मांग की। इसका फायदा द लिंक को मिला। वह चुनाव में करीब 25.7फीसदी वोट मिले और वह सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी। अब सरकार बनाने के लिए उसे

दूसरी पार्टियों के साथ गठबंधन करना होगा। 2. ब्रिटेनः पर्यावरण के मुद्दे को महंगे घर से जोड़ा- ब्रिटेन में ममदानी से सबसे ज्यादा तुलना जैक पोलांस्की की होती है। वे ग्रीन पार्टी के नेता हैं। यह पार्टी मुख्य रूप से पर्यावरण और जलवायु के मुद्दों पर राजनीति करती रही है। लेकिन पोलांस्की ने इनका दायरा बढ़ाया है। पोलांस्की महंगाई, महंगे घर, बढ़ते किराए, रोजमर्रा के खर्च और अमीरों पर ज्यादा टैक्स जैसे मुद्दों को पर्यावरण की राजनीति से जोड़ते हैं। पोलांस्की इसे 'इको-पॉपुलिज्म' कहते हैं। ममदानी की तरह पोलांस्की भी सोशल मीडिया को राजनीति का अहम माध्यम बना रहे हैं। पोलांस्की ने बताया कि उनकी वीडियो टीम ममदानी के वीडियो बनाने वाली टीम से टिप्स ले रही है। दिलचस्प बात यह है कि पोलांस्की इस समय लंदन की होलबॉर्न सीट से चुनाव लड़ रहे हैं। पूर्व प्रधानमंत्री कीर स्टार्मर के सांसद पद से हटने के बाद 8 अक्टूबर को यहां उपचुनाव हो रहा है। दो साल पहले हुए चुनाव में ग्रीन पार्टी को यहां सिर्फ 10 फीसदी वोट मिले थे। कुछ सर्वे में अनुमान लगाया गया है कि इस बार ग्रीन को 40 फीसदी वोट मिल सकता है। 3. स्पेनः 87 साल की महिला को घर से निकाला, सरकार गिरी-स्पेन में महंगा घर और बढ़ता किराया इस समय बड़ा राजनीतिक मुद्दा बना हुआ है। पिछले महीने मैड्रिड में 87 साल की मारिकर्मेन अबास्कल को 70 साल से रह रहे घर से निकाल दिया गया। इसके बाद देशभर में विरोध प्रदर्शन शुरू हो गए। यह मामला स्पेन के आवास संकट का प्रतीक बन गया। मामला इतना बढ़ा कि सरकार पर आवास संकट से निपटने का दबाव बढ़ गया। संसद में सरकार के आवास संबंधी प्रस्ताव खारिज होने के बाद प्रधानमंत्री पेड्रो सांचेज ने 29 नवंबर को समय से पहले आम चुनाव कराने का ऐलान कर दिया। यानी स्पेन में भी घर और किराया अब सिर्फ सामाजिक समस्या नहीं रहे। वे सीधे चुनावी राजनीति का मुद्दा बन चुके हैं। 4. फ्रांसः पेरिस में 60 हजार सस्ते घर बनाने का वादा- फ्रांस की राजधानी पेरिस के मेयर इमैनुएल ग्रेगोयर समाजवादी पार्टी से जुड़े हैं। वे इसी साल मेयर चुने गए हैं। उनकी राजनीति में महंगा घर और बढ़ता किराया बड़ा मुद्दा है। ग्रेगोयर पेरिस में ज्यादा सस्ते घर बनाने, खाली पड़े मकानों को लोगों के लिए इस्तेमाल करने और किराए पर नियंत्रण बढ़ाने की बात करते हैं। उनकी सरकार का मकसद 60 हजार नए सस्ते घर बनाना है। ममदानी की जीत से पहले भी फ्रांस के कुछ वामपंथी नेता उनके अभियान से सीखने की बात कर चुके थे। ब्रिटेन की तरह यहां भी ममदानी की चुनावी शैली और सीधे मैसेज देने के तरीके पर नजर रखी गई। 5. नीदरलैंडः घर की कमी को मुद्दा बनाया, सबसे बड़ी पार्टी बनीः- नीदरलैंड में ममदानी की जीत से पहले ही घर और किराए का मुद्दा चुनावी राजनीति के केंद्र में आ चुका था। 2025 के राष्ट्रीय चुनाव में डी66 के नेता रॉब येटन ने आवास संकट को बड़ा चुनावी मुद्दा बनाया। उस समय देश में करीब 4 लाख घरों की कमी थी। घर खरीदना महंगा हो चुका था और किराए लगातार बढ़ रहे थे। यानी लाखों लोगों के सामने सवाल था। सरकार महंगाई कब कम करेगी से पहले घर मिलेगा कब? येटन की पार्टी डी66 ने हर साल 1 लाख नए घर बनाने और 10 नई टाउनशिप विकसित करने का प्रस्ताव रखा। चुनाव में इसका फायदा भी मिला। पार्टी 2023 की 9 सीटों से बढ़कर 2025 में 26 सीटों पर पहुंच गई और सबसे बड़ी पार्टियों में शामिल हुई। यानी नीदरलैंड में सस्ता घर और कम किराया यूरोप में ममदानी की जीत से पहले ही बड़ा राजनीतिक मुद्दा बन चुका था। ममदानी की जीत ने इस बहस को और चर्चा में ला दिया।

नाना के 10 अनसुने किस्से

रेपिस्ट का रोल ऑफर किया तो डायरेक्टर को गालियां दीं,कारगिल जंग में आर्मी के साथ रहे

मुंबई। 1 जनवरी, 1951 को महाराष्ट्र के रायगढ़ जिले के गांव मुरुद-जंजीरा में जन्मे विश्वनाथ गजानन पाटेकर, जिन्हें दुनिया ने नाना पाटेकर के नाम से जाना। नाना बचपन से ही बाकी बच्चों से अलग रहे। तेवर में बगावती सुर थे। समाज की कुरीतियों को कला के माध्यम से दिखाना चाहते थे। इसलिए पहले थिएटर में आए, फिर फिल्मों का रुख किया। नाना अपने गुस्सैल स्वभाव के लिए भी चर्चा में रहते थे। जब रवि चोपड़ा ने इन्हें रेपिस्ट का रोल ऑफर किया तो इन्होंने गाली दे दी थी। फिल्म परिंदा की शूटिंग के वक्त नाना और फिल्म के डायरेक्टर विधु विनोद चोपड़ा भिड़ गए थे। 13 साल की उम्र, दिन में 16 किमी पैदल चलते थेः-नाना के पिता टेक्सटाइल पेंटिंग का एक छोटा सा बिजनेस चलाते थे। नाना जब 13 साल के थे, तभी किसी ने पिता के साथ फ्रॉड कर दिया। रातों-रात बिजनेस चौपट हो गया। सारी प्रॉपर्टी बिक गई। पैसे कमाने के लिए नाना को भी सड़क पर आना पड़ा। वे सुबह स्कूल जाते, शाम में फिल्म के पोस्टर्स पेंट करते थे। जहां पोस्टर पेंट करते थे, वहां से घर की दूरी 8 किलोमीटर थी। इस तरह दिन में 16 किलोमीटर की दूरी पैदल ही तय करते थे। इस काम के लिए हर महीने 35 रुपए मिलते थे। यह बात 1963 के आस-पास की है। पैसों की इतनी किल्लत थी कि कभी-कभार खाना भी नसीब नहीं होता था। लंच या डिनर टाइम में नाना यूं ही अपने दोस्तों से मिलने चले जाते थे। इस उम्मीद में कि सामने से कोई दो रोटी खाने को पूछ ले। टीचर बगल में बिठाते थे, ताकि मारने के लिए बार-बार उठना न पड़ेः-नाना बचपन में बहुत शरारती थे। इतने शरारती कि टीचर इन्हें बगल में बिठाकर रखते थे, ताकि मारने के लिए बार-बार उठना न पड़े। शरारत इतनी बढ़ गई कि नाना की मां ने उन्हें छठी कक्षा के बाद अपनी बहन के गांव भेज दिया। मां को लगा कि दूसरी जगह जाएगा तो सुधर जाएगा। नाना अपनी मौसी के घर एक-दो साल रहे, फिर वापस लौट आए। मौसी ने ही उन्हें वापस भेज दिया। उन्हें डर था कि नाना की संगत में कहीं उन्हीं के बच्चे न बिगड़ जाएं। खुद को बदसूरत समझते थे, पिता को लेकर पाला था भ्रमः-नाना अपने आप को दूसरों से कमतर आंकते थे। वे अपने आप को बदसूरत मानते थे। नाना के दोनों भाई लुक में उनसे ठीक थे। नाना को लगता था कि पिता बाकी भाइयों को ज्यादा तवज्जो देते हैं। नाना बचपन से ही गांव-दराज में होने वाले नाटक-ड्रामों में भाग लेते थे। एक बार वे गांव में नाटक कर रहे थे। उनके पिता बंबई (अब मुंबई) से सिर्फ नाटक देखने गांव आ गए।उस वक्त नाना का भ्रम टूट गया कि पिता उनसे प्यार नहीं करते। नाना को उस वक्त एहसास हुआ कि जैसे उन्होंने अपनी कला से पिता को प्रभावित किया, वैसे ही पूरी दुनिया को भी कर सकते हैं। पिता हॉस्पिटल में थे, उनकी दवाई के भी पैसे नहीं थेः-नाना के पिता को लेकर बचपन में जो गलतफहमी थी, वह समय के साथ दूर हो गई, लेकिन पिता को लेकर एक मलाल उन्हें जिंदगी भर रहा। नाना अपने पिता के हाथ पर अपनी कमाई का एक रुपया भी नहीं रख पाए थे। उन्होंने एक इंटरव्यू में इस बात का जिक्र किया था। नाना ने कहा था कि उन्हें इस बात का बहुत दुख था कि वह अपनी कमाई से पिता के लिए कुछ नहीं कर सके। उनके पिता का निधन म्युनिसिपल कॉर्पोरेशन के अस्पताल में हुआ था। उस वक्त नाना के पास उनकी दवाइयों के लिए भी पैसे नहीं थे। ऐसे मुश्किल समय में उनके दोस्तों ने मदद की

और दवाइयों के पैसे दिए थे। रेपिस्ट का रोल ऑफर किया तो गालियां दींः-एक्ट्रेस स्मिता पाटिल ने नाना को बी.आर. चोपड़ा के बेटे रवि चोपड़ा के पास भेजा था। रवि चोपड़ा उस वक्त फिल्म 'आज की आवाज' बना रहे थे। उन्होंने नाना को रेपिस्ट का रोल ऑफर किया। ऑफर सुनते ही नाना भड़क उठे। उन्होंने सबके सामने रवि को गालियां बक दीं। नाना ने कहा कि तुम मुझे ऐरा-गैरा आदमी समझते हो, क्या मैं ऐसा रोल करूंगा? यह कहकर नाना वहां से लौटने लगे। तभी स्मिता पाटिल वहां पहुंच गईं। उन्होंने नाना और रवि, दोनों को समझाया। तब रवि चोपड़ा ने उन्हें मेन विलेन का रोल ऑफर किया। नाना इस बार भी सीधी तरह नहीं माने। उन्होंने कहा कि मैं कर तो लूंगा, लेकिन अपना किरदार खुद लिखूंगा। आखिरकार उन्होंने फिल्म में काम कर लिया था। विधु विनोद चोपड़ा के साथ हाथापाईः-फिल्म परिंदा की शूटिंग के दौरान डायरेक्टर विधु विनोद चोपड़ा और नाना पाटेकर में लड़ाई हो गई थी। यह बात खुद विधु ने एक टीवी रियलिटी शो के दौरान स्वीकारी थी। उन्होंने कहा था, 'नाना हर सीन में गाली देता था। मुझे यह बात बड़ी अजीब लगती थी। मुझे उस वक्त गालियां नहीं आती थीं। नाना बार-बार गालियां दिए जा रहा था। ऊपर से बिना शूटिंग किए घर जाने लगा। मैंने कहा कि पहले पैसे दो, फिर वापस जाओ। कम से कम मेरा नुकसान तो मत कराओ। यही बात कहते हुए मैंने उसका कुर्ता फाड़ दिया।' उन्होंने आगे कहा था, 'अभी यह सब चल ही रहा था कि कैमरामैन ने शॉट रेडी कर दिया। आप फिल्म देखिए, एक सीन में नाना बनियान में बैठकर रोता दिखाई देगा। वह शॉट झगड़े के तुरंत बाद लिया गया था। खैर, शॉट परफेक्ट हो गया। बाद में नाना ने मुझे गले लगा लिया।' सेफ्टी गार्ड पहनने से मना किया, आग में झुलसे तो स्किन उतर गईः-फिल्म परिंदा के क्लाइमैक्स सीन में नाना पाटेकर को आग में जलते दिखाया गया था। दुर्भाग्यवश, नाना सच में आग में झुलस गए थे। इस वजह से उनकी पूरी स्किन उतर गई थी। दरअसल, उस वक्त की फिल्मों में आर्टिफिशियल फायर जैसी कोई चीज नहीं थी। सेट पर असली आग लगाई जाती थी। फिल्म के डायरेक्टर विधु विनोद चोपड़ा ने नाना को सेफ्टी गार्ड पहनने को कहा था। नाना ने कहा था कि अगर वे सेफ्टी गार्ड पहन लेंगे तो एक्टिंग नेचुरल नहीं लगेगी। फिर भी विधु के कहने पर उन्होंने थोड़ा बहुत खुद को ढंक लिया। हालांकि, जब सीन शुरू हुआ तो आग की लपटें उनके शरीर को छू गईं। उनके हाथ-पैर की स्किन ही गायब हो गई। मामला सीरियस हो गया। उन्हें मुंबई के नानावटी हॉस्पिटल में भर्ती कराया गया। इस घटना के बाद नाना एक साल तक फिल्मों से दूर रहे। अधिकारी ने रिस्पॉन्स नहीं दिया तो रक्षा मंत्री को लगा दिया फोनः-नाना पाटेकर बचपन से आर्मी जॉइन करना चाहते थे। 1991 की फिल्म प्रहार के जरिए उनका यह सपना भी पूरा हो गया। आर्मी बैकग्राउंड पर बनी इस फिल्म की तैयारी के लिए नाना ने तीन साल तक आर्मी ट्रेनिंग प्रोग्राम किया था, जहां उन्हें कैप्टन की मानद रैंक दी गई थी। 1999 में पाकिस्तान के साथ कारगिल वॉर में नाना ने भारतीय सेना को अपनी सेवाएं दी थीं। हालांकि इसके पीछे दिलचस्प कहानी है। नाना ने सेना के एक बड़े अधिकारी को फोन किया और आर्मी जॉइन करने की इच्छा जताई। अधिकारी ने कहा कि आप आम नागरिक हैं, हम आपको आर्मी में नहीं ले सकते। नाना ने तब देश के तत्कालीन रक्षा मंत्री जॉर्ज फर्नांडिस को फोन कर दिया। जॉर्ज फर्नांडिस पहले से नाना को जानते थे। पहले तो उन्होंने मना किया, लेकिन जब नाना ने उन्हें अपना आर्मी वाला बैकग्राउंड बताया, तब मान गए। उन्हें हरी झंडी दे दी। नाना कारगिल में दो महीने सेना के साथ जुड़े रहे। वहां वे क्विक रिएक्शन टीम का हिस्सा थे। क्विक रिएक्शन टीम में सिर्फ वहीं लोग काम करते हैं, जो औरों से निपुण हों और हर परिस्थिति में लड़ने को तैयार रहें। परफॉर्मेंस के बीच में जूते बरसाए जाते थेः-नाना ने एक नाटक पुरुष (1981) में 16 साल अभिनय किया। इस नाटक में वे विलेन बनते थे। उनका रोल इस कदर घिनौना था कि परफॉर्मेंस के बीच में ही महिलाएं जूते बरसाने लगती थीं। जब वे जूते मांगने जातीं तो नाना मना कर देते। वे उन जूतों को सम्मान के तौर पर संभाल कर रखते थे। 1993 मुंबई ब्लास्ट में भाई को खोया, हाथ के कड़े से बॉडी पहचानीः-1993 बम ब्लास्ट में नाना ने अपना भाई खो दिया था। उनके भाई जिस बस में बैठे, उसी में ब्लास्ट हो गया था। बॉडी पहचान में नहीं आ रही थी। नाना के भाई हाथ में एक कड़ा पहनते थे। उसी से शव की पहचान हुई थी। जिसमें ब्लास्ट हुआ, उसके आगे वाली बस में नाना की पत्नी नीलकांति बैठी हुई थीं।दरअसल, नाना की पत्नी और भाई साथ ही निकले थे। दोनों एक ही बस में बैठने वाले थे, लेकिन सीट सिर्फ एक ही मिली। नाना के भाई मजबूरन पीछे वाली बस में बैठ गए। अगर उन्हें पहली बस में सीट मिल जाती तो शायद जान बच जाती।

पार्टनर शादी की बात टाल देता है, मुझे तो शादी चाहिए, क्या मैं ब्रेकअप कर लूं

नयी दिल्ली। विषय पर बात को समझते हैं एक्सपर्टः डॉ. जया

सुकुल, क्लिनिकल साइकोलॉजिस्ट, नोएडा द्वारा सवाल जवाब के माधयम से। सवालः मेरी उम्र 29 साल है और मैं दिल्ली में रहती हूं। मैं और मेरा बॉयफ्रेंड पिछले 5 सालों से रिलेशनशिप में हैं। मैं पहले जिस कंपनी में काम करती थी, वहीं हमारी मुलाकात हुई थी। फिर जॉब चेंज होने के बाद भी हमारा रिलेशनशिप कंटीन्यू रहा। मैं शुरू से ही ये बात कहती थी कि मुझे शादी करनी है। मुझे फैमिली और बच्चे चाहिए। इन 5 सालों में उसने कभी इस बात का विरोध नहीं किया। उल्टे वो भी कहता था कि उसे भी शादी करनी है। मुझे लगता था कि इस रिश्ते का अंत एक सुंदर शादी और परिवार में होगा। शुरू के तीन साल तो सिर्फ रोमांस और करियर की दौड़ में निकल गए। पिछले दो सालों से मैंने शादी के बारे में पूछना शुरू किया। पहले तो वो कहता था कि हां देखेंगे, करेंगे, जल्दी क्या है। लेकिन अब पिछले एक साल से मैं नोटिस कर रही हूं कि वो शादी की बात बिल्कुल इंटरटेन ही नहीं करता। तुरंत टॉपिंग बदल देता है, बात को टाल देता है, कुछ और करने लगता है। वो हां भी नहीं करता और ना भी नहीं करता। कहीं उसे कमिटमेंट फोबिया तो नहीं। मैं कैसे बात करूं? क्या मुझे वेट करना चाहिए या अपने भविष्य

के बारे में सख्त फैसला लेना चाहिए?जवाबः सबसे पहले तो आपकी बात सुनकर लगता है कि आप एक मजबूत और समझदार इंसान हैं। 5 साल का रिश्ता चलाना कोई छोटी बात नहीं है, खासकर दिल्ली जैसे व्यस्त शहर में जहां जिंदगी की भागदौड़ में रिश्ते बनाना और निभाना दोनों मुश्किल होते हैं। आपकी उम्र 29 साल है, और आप शादी और परिवार की सोच रही हैं। यह बिल्कुल नॉर्मल है। लेकिन आपका पार्टनर जब भी शादी की बात पर टालमटोल करता है, तो मन में डर और शक आना स्वाभाविक है। क्या वो सच में कमिटमेंट से डर रहा है, या बस समय का बहाने बना रहा है? आप जो महसूस कर रही हैं, वो हजारों लड़कियों की कहानी है। आइए इस समस्या को एक-एक करके समझते हैं। हम चुनौतियों की बात करेंगे, उनके पीछे के कारण देखेंगे और फिर कुछ आसान तरीके जानेंगे जिनसे आप फैसला ले सकती हैं। साथ ही, हम यह भी देखेंगे कि पुरुष और महिलाएं इस स्थिति में अलग-अलग कैसे सोचते हैं और आपके पार्टनर को क्या सलाह देनी चाहिए। याद रखें, रिश्ते में भरोसा और बातचीत से बहुत कुछ सुलझ जाता है। जब रिश्ता लंबा चलता है लेकिन शादी की बात पर रुक जाता है, तो कई परेशानियां सामने आती हैं। ये वो मुश्किलें हैं जो आपके मन को परेशान करती हैं और रिश्ते पर असर डालती हैं। कल्पना करें कि आप अपने बॉयफ्रेंड के साथ एक अच्छा डिनर कर रही हैं और आप शादी का जिक्र करती हैं। वो मुस्कुराकर कहता है, अभी नहीं, बाद में सोचेंगे। लेकिन आपके मन में सवाल उठता है। क्या वो मुझे सिर्फ टाइम पास समझता है? 5 साल के रिश्ते में यह असुरक्षा आपकी रातों की नींद हराम कर सकती है।29 साल की उम्र में महिलाएं अक्सर बायोलॉजिकल क्लॉक के बारे में सोचती हैं। फैमिली और दोस्त पूछते हैं, शादी कब कर रही? यह प्रेशर आपको उदास या तनावग्रस्त कर देता है, जबकि पुरुषों के ऊपर यह दबाव कम होता है क्योंकि समाज में उनकी उम्र शादी के लिए ज्यादा फ्लेक्सिबल मानी जाती है। हर बार जब वो अभी समय नहीं कहता है, तो आपको लगता है कि शायद वो कभी तैयार नहीं होगा। यह शक रिश्ते को कमजोर करता है और आप सोचती रहती हैं कि क्या इंतजार करके अपना समय बर्बाद कर रही हूं?यह स्थिति छोटी-छोटी बातों पर बहस में बदल जाती है। आपका मूड खराब रहता है और वो सोचता है कि आप ज्यादा डिमांडिंग हो गई हैं। इससे रिश्ते में इमोशनल

कनेक्शन कम हो जाता है। कई पुरुषों को शादी का मतलब जिम्मेदारियां लगता है, घर, बच्चे, फैमिली। वे सोचते हैं कि अभी फ्रीडम एंजॉय कर लें। महिलाएं अक्सर रिश्ते को जल्दी कमिटमेंट में बदलना चाहती हैं क्योंकि वे भावनात्मक सुरक्षा ढूंढती हैं।दिल्ली जैसे शहर में जिंदगी महंगी है। आपका बॉयफ्रेंड शायद सोचता है कि शादी के बाद पैसे की दिक्कत न हो। पुरुष अक्सर खुद को प्रोवाइडर मानते हैं, जबकि महिलाएं रिश्ते की भावनात्मक मजबूती पर ज्यादा जोर देती हैं। अगर उसके घर में तलाक या झगड़े हुए हैं, तो वो शादी से डर सकता है। महिलाएं अक्सर इन अनुभवों से सीखकर बेहतर रिश्ता बनाना चाहती हैं, लेकिन पुरुष इन्हें बहाना बना लेते हैं। वो कहता है कि अभी सही समय नहीं है। यह भी हो सकता है कि वह करियर या खुद पर फोकस करना चाहता है। महिलाएं रिश्ते को जीवन का हिस्सा मानती हैं, जबकि पुरुष कभी-कभी इसे अलग रखते हैं। अब सवाल यह है कि क्या इंतजार करें या फैसला लें? यहां कुछ आसान उपाय हैं जो आपको मदद करेंगे। याद रखें, रिश्ते में कुछ चीजें पैसों से नहीं खरीदी जा सकतीं, जैसे भरोसा, प्यार और कमिटमेंट। हालांकि, बातचीत सबसे जरूरी है। खुलकर बात करें- अपने बॉयफ्रेंड से शांति से बैठकर पूरी बात करें। आप उसे खुलकर बताएं कि आप इस बात से क्यों परेशान हो रही हैं। उससे उसका प्लान भी पूछें। इससे सच्चाई सामने आएगी। समय सीमा तय करें- खुद से कहें कि 6 महीने इंतजार करूंगी, अगर तब भी नहीं तो फैसला लूंगी। इससे आपको कंट्रोल मिलेगा। अपना ख्याल रखें- अकेले समय बिताएं, दोस्तों से मिलें, करियर पर फोकस करें। योग या वॉकिंग करें ताकि तनाव कम हो। प्रोफेशनल मदद लें- अगर बात नहीं बनती, तो काउंसलर से मिलें। वे आपको और आपके पार्टनर को समझने में मदद करेंगे। अपने लक्ष्यों पर सोचें-शादी आपकी जिंदगी का हिस्सा है, लेकिन सबकुछ नहीं। अगर वो तैयार नहीं, तो क्या आप खुश रह सकती हैं? आपके पार्टनर के लिए सुझाव- आपका बॉयफ्रेंड भी इस स्थिति में परेशान हो सकता है। यहां उनके लिए कुछ टिप्स- धैर्य रखेंः आपकी फीलिंग्स को समझें और जल्दबाजी न करें। खुलकर बात करेंः अपने डर या कारण बताएं, जैसे फाइनेंशियल चिंता। समझौता करेंः अगर तैयार नहीं, तो वजह बताएं और प्लान शेयर करें। साथ मिलकर फैसला लेंः यह रिश्ता दोनों का है, अकेले न सोचें। क्या इंतजार करना सही है? समय सब ठीक नहीं करता, बल्कि आपकी कोशिशें करती हैं। अगर 5 साल में वो तैयार नहीं हुआ, तो शायद आगे भी न हो। लेकिन अगर वो प्यार करता है, तो बातचीत से रास्ता निकलेगा। अगर जरूरत हो तो प्रोफेशनल मदद लें। याद रखें कि आपकी खुशी सबसे जरूरी है। 5 साल लंबा रिश्ता तोड़ना आसान नहीं होता, लेकिन अगर शादी आपकी प्राथमिकता है और वो तैयार नहीं है तो आपको सख्त फैसला लेना पड़ सकता है। हजारों लोग आपके जैसे सफर से गुजरे हैं और खुश हैं। खुद पर भरोसा करें और आगे बढ़ें। आप अकेली नहीं हैं आप मजबूत हैं। वहीं अगर आपको पार्टनर पर भरोसा है और इंतजार कर सकती हैं तो मिलकर एक समय सीमा तय कर लें।

नाना पाटेकर का गोवा में कार्डियक अरेस्ट से निधन,कारगिल युद्ध में सेना के साथ रहे

मुंबई। दिग्गज अभिनेता नाना पाटेकर का गुरुवार सुबह 75 साल की उम्र में निधन हो गया। उन्हें गोवा स्थित घर में कार्डियक अरेस्ट हुआ था। उन्हें करीब 45

मिनट तक सीपीआर दी गई, लेकिन बचाया नहीं जा सका। अंतिम संस्कार पुणे के फॉर्महाउस में होगा। मणिपाल हॉस्पिटल के डॉ. शेखर सालकर के मुताबिक नाना पाटेकर का सुबह 5:20 बजे निधन हुआ। घटना के वक्त नाना के साथ घर पर परिवार का कोई सदस्य नहीं था। उनके दोस्त और केयरटेकर मौजूद थे। अब शव का पोस्टमॉर्टम कराया जाएगा। 'परिंदा' में विलेन बने, 3 नेशनल अवॉर्डः-नाना पाटेकर ने 100 से ज्यादा फिल्में कीं। 1989 की फिल्म 'परिंदा' में नाना ने अन्ना का किरदार निभाया, जिसके लिए उन्हें बेस्ट सपोर्टिंग एक्टर का नेशनल फिल्म अवॉर्ड मिला। 1994 की 'क्रांतिवीर' के लिए उन्हें बेस्ट एक्टर का नेशनल अवॉर्ड मिला। 1996 की 'अग्निसाक्षी' के लिए भी उन्हें बेस्ट सपोर्टिंग एक्टर का नेशनल अवॉर्ड मिला। इस तरह उन्हें करियर में 3 नेशनल फिल्म अवॉर्ड मिले। भारतीय सिनेमा में योगदान के लिए नाना पाटेकर को 2013 में पद्मश्री से सम्मानित किया गया। अपने लंबे फिल्मी करियर में उन्होंने हिंदी के साथ मराठी फिल्मों में भी काम किया। रात 2:30 बजे नाना ने दोस्त को मैसेज किया था डॉ. शेखर ने बताया कि रात करीब 2:30 बजे नाना ने एक दोस्त को मैसेज कर तबीयत ठीक नहीं लगने की बात कही थी। दोस्त ने उस समय मैसेज नहीं देखा। बाद में फोन करने पर वह करीब 4 बजे नाना के घर पहुंचा। उस वक्त नाना को काफी पसीना आ रहा था। उनकी हालत बिगड़ रही थी। कुछ देर बाद वह बेहोश होने लगे। इसके बाद केयरटेकर को अस्पताल भेजा गया और एंबुलेंस बुलाई गई। इमरजेंसी टीम घर पहुंची तो नाना पूरी तरह नॉन-रिएक्टिव थे। टीम ने तुरंत कार्डियक मसाज शुरू की। उन्हें सुबह करीब 4:20 से 4:30 बजे के बीच मणिपाल अस्पताल लाया गया। डॉक्टरों के मुताबिक, उन्हें मृत अवस्था में अस्पताल लाया गया था। पीएम मोदी बोले- कई पीढ़ियों तक याद किए जाएंगेः-नाना पाटेकर के निधन पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा-'कुछ ही अभिनेता ऐसे थे, जिनमें नाना पाटेकर जैसी गहराई, अलग पहचान और खास मौजूदगी थी। उन्होंने हर किरदार में शानदार विविधता और रचनात्मकता दिखाई। उनके निभाए किरदार कई पीढ़ियों तक याद किए जाएंगे।' अक्षय कुमार ने कहा-'नाना जी के निधन की खबर से बहुत दुखी हूं। वह उन चुनिंदा कलाकारों में से एक थे, जिन्हें आपको रुककर देखने के लिए बहुत कुछ करने की जरूरत नहीं पड़ती थी। मैं खुद को खुशकिस्मत मानता हूं कि मुझे उनके साथ (वेलकम) और फिर हाल ही में (हाउसफुल 5) में काम करने का मौका मिला। उन दोनों फिल्मों के सेट की बहुत सारी यादें हैं, जिन्हें मैं हमेशा अपने दिल के करीब रखूंगा।' रितेश देशमुख ने कहा-'मेरे पास शब्द नहीं हैं। नाना पाटेकर जी के निधन की खबर से ऐसा लग रहा है, जैसे मुझ पर कोई ट्रक चढ़ गया हो। मैं बेहद दुखी हूं। वह एक बेहतरीन अभिनेता थे और उनका कोई मुकाबला नहीं था। वह पर्दे से बाहर भी हीरो थे। लोगों की भलाई के लिए उन्होंने अपनी चैरिटी के जरिए लगातार काम किया।' 'वेलकम' में उदय शेट्टी बनकर कॉमेडी में भी छाएः-2007 में आई फिल्म 'वेलकम' में नाना पाटेकर ने गैंगस्टर उदय शेट्टी का किरदार निभाया था। इस कॉमेडी रोल को काफी पसंद किया गया। वे इसके सीक्वल 'वेलकम बैक' में भी उदय शेट्टी के किरदार में नजर आए। फिल्म प्रहार के लिए मिलिट्री ट्रेनिंग ली थीः-नाना पाटेकर ने फिल्म 'प्रहारः द फाइनल अटैक' में आर्मी मेजर की भूमिका निभाने के लिए भारतीय सेना की मराठा लाइट इन्फैंट्री के साथ सैन्य प्रशिक्षण लिया था। इस दौरान उन्होंने करीब तीन साल तक ट्रेनिंग की थी। ट्रेनिंग पूरी करने के बाद नाना पाटेकर टेरिटोरियल आर्मी से जुड़े। उन्हें मानद कैप्टन के रूप में कमीशन मिला। बाद में उन्होंने लेफ्टिनेंट कर्नल के मानद पद तक सेवाएं दीं और 2013 में रिटायर हुए। कारगिल युद्ध के दौरान भी सेना के साथ रहेः-नाना पाटेकर का सेना से जुड़ाव 1999 के कारगिल युद्ध के दौरान भी सामने आया। रिपोर्ट्स के मुताबिक, उन्होंने तत्कालीन रक्षा मंत्री जॉर्ज फर्नांडिस से विशेष अनुमति लेकर करीब 2 महीने सेना के साथ अग्रिम इलाकों में बिताए। इस दौरान वह द्रास, लेह, कुपवाड़ा और सोपोर जैसे क्षेत्रों में गए। किसानों की मदद के लिए शुरू किया था 'नाम फाउंडेशन'ः-नाना पाटेकर सिर्फ अपनी फिल्मों के लिए ही नहीं, बल्कि सामाजिक कामों के लिए भी जाने जाते थे। किसानों और उनके परिवारों की मदद के लिए उन्होंने अभिनेता मकरंद अनासपुरे के साथ 2015 में 'नाम फाउंडेशन' शुरू किया था। संस्था ने खास तौर पर महाराष्ट्र के सूखाग्रस्त इलाकों में किसानों की मदद के लिए काम किया। नाना ने किसान आत्महत्या से प्रभावित परिवारों को आर्थिक मदद दी। उनके बच्चों की पढ़ाई में भी मदद की। कई परिवारों की स्कूल और कॉलेज फीस का खर्च उठाया गया। नाम फाउंडेशन ने गांवों में पानी की समस्या दूर करने के लिए भी काम किया। इसके तहत तालाब, कुएं और चेक डैम बनाने के साथ नदियों और नहरों को फिर से उपयोगी बनाने की कोशिश की गई। नाना से जुड़ा एक किस्सा यह भी है कि वह करीब 1.5 करोड़ रुपए की लग्जरी कार खरीदने वाले थे। किसानों की हालत देखकर उन्होंने कार खरीदने का फैसला बदल दिया और रकम जरूरतमंद परिवारों की मदद में लगा दी।

अमिताभ बोले- हमसे बड़ी गुस्ताखी हो गई थी,माधुरी दीक्षित ने केबीसी में चलवा दी डांस की पुरानी क्लिप,शरमा गए बिग बी

मुंबई। एक्ट्रेस माधुरी दीक्षित जल्द ही अमिताभ बच्चन के शो 'कौन बनेगा करोड़पति 18' के एक एपिसोड में नजर आएंगी। यह एपिसोड 9 अक्टूबर को रात 9 बजे सोनी टीवी पर प्रसारित होगा। एपिसोड से पहले सोनी टीवी ने दो प्रोमो शेयर किए हैं, जिनमें अमिताभ और माधुरी के बीच मजेदार बातचीत देखने को मिली। पहले प्रोमो में अमिताभ बच्चन ने माधुरी से फिल्म 'तेजाब' के गाने 'एक दो तीन' के स्टेप को रीक्रिएट करने को लेकर कहा, 'एक बार हमसे बड़ी गुस्ताखी हो गई थी। एक फिल्म थी, उसमें हमने ऐसे एक दो तीन किया था।' इसके बाद माधुरी ने मजाकिया अंदाज में कहा, 'हम भी दिखा दें?' जिसके बाद स्क्रीन पर अमिताभ की 1989 की फिल्म 'तूफान' का एक सीन चलाया गया, जिसमें अमिताभ बच्चन गाने 'एक दो तीन' पर डांस करते नजर आए। वीडियो को देखते ही अमिताभ बच्चन शरमा गए और बोले कि कहां से कहां ये लोग निकाल ले रहे हैं? अंत में अमिताभ बच्चन ने अपने डांस को लेकर कहा कि एक

अच्छे गाने को किस तरह खराब किया जाए, देखा आपने अभी। दूसरे प्रोमो में माधुरी ने फिल्म 'देवदास' की चंद्रमुखी का अंदाज दिखाया। गाना 'काहे छेड़ मोहे' शुरू होते ही उन्होंने हॉट सीट पर बैठे-बैठे डांस किया। उनकी परफॉर्मेंस देखकर अमिताभ ने कहा, 'क्या बात है। इनक्रेडिबल, इनक्रेडिबल, माधुरी जी।' आयुष्मान ने अमिताभ से माफी मांगीः-वहीं, इससे पहले सारा अली खान और आयुष्मान खुराना 'कौन बनेगा करोड़पति 18' में मेहमान बनकर पहुंचे थे।दोनों अपनी आने वाली फिल्म 'उड़ता तीर' के प्रमोशन के लिए शो में आए थे। एपिसोड में अमिताभ बच्चन और आयुष्मान ने 'गुलाबो सिताबो' से जुड़ी यादें भी शेयर कीं। आयुष्मान ने फिल्म में अमिताभ के किरदार को 'बुढ़ऊ' कहने पर उनसे माफी मांगी। आयुष्मान ने कहा, 'मैंने फिल्म में आपको बुढ़ऊ कहा, इसके लिए माफी मांगता हूं। आप बुढ़ऊ नहीं हैं। असल जिंदगी में आपमें 84 साल की कोई हरकत नहीं है। आप 28 के हैं।' अमिताभ बच्चन ने इस बात पर मजाकिया अंदाज में जवाब दिया। उन्होंने पूछा, '84 साल की कौन-सी हरकतें होती हैं?' अमिताभ बच्चन ने याद किए संघर्ष के दिनः-हाल ही में शो में अमिताभ बच्चन ने अपने शुरुआती करियर के संघर्ष के दिनों को याद किया।

स्वत्वाधिकारी एवं मुद्रक
डॉ. दीपक अरोरा
द्वारा रामा प्रिंटर्स
53/25/1 ए बेली रोड
न्यू कटरा प्रयागराज
(उ.प्र) 211002 से
मुद्रित एवं सी-41यूपी
एसआईडीसी औद्योगिक
क्षेत्र नैनी प्रयागराज।
संपादक/प्रकाशक
डा.पुनीत अरोरा
मो.न.09415608710
RNINO.UPHIN/2015/63398
www.adhuniksamachar.com

नोटः- इस समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी0आर0बी0 एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन्न समस्त विवाद इलाहाबाद न्यायालय के अधीन ही होगा।